अनुवादक

अमृत राय

प्रथम संस्करण नवंबर, १९४७

प्रकाशक

अमृत राय

हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस,

अलाहाबाद ।

मुद्रण

टाइमटेबुल प्रेस,

काशी ।

प्रच्छदपट

माखन दत्तगुप्त

वर्णलिपि

कृष्णचंद्र श्रीवास्तव

प्रच्छदपट-मुद्रण

भारत फोटोटाइप स्टूडियो

७२।१ कॉलेज स्ट्रीट

कलकत्ता ।

ब्लॉक-निर्माण

रिप्रोडक्शन सिन्डीकेट

७।१ कार्नवालिस स्ट्रीट,

कलकत्ता ।

लीडर प्रेस,

अलाहाबाद ।

टी० एन० लक्ष्मणराव, आर्टिस्ट,

रीगल बिल्डिंग

बंबई ।

*

मूल्य अढ़ाई रुपया

क्रम

१—नूतन आलोक	तिङ् लिङ्	१
२—दलदल	अलेकजैंडर कुप्रिन	३१
३—सड़क की लंबाई	राबर्ट बकलैंड	५८
४—मेरे चाचा और उनकी गाय	त्सुनचान ये	७९
५—जिन्दगी	पियोतर पावलेंको	९३
६—मां	ग्रात्सिया देलेदा	१०७
७—तमारा	फेडर सोलेगब	११७
८—उनका झंडा !	वैलेंताइन कतायेफ	१३२
९—यंत्रणागृह	अर्न्स्ट टोलर	१४५
१०—अन्तिम घड़ी	'न्यू मासेज़' से	१४८
११—उसका एकलौता बेटा	कौंस्तांतिन सिमोनोफ	१५७
१२—एक सर्बियन गाथा	बेला बलाज़	१७६
१३—किकी	फ्रीड्रिक वुल्फ	१९४
१४—कहानियों पर [illegible]	[illegible]	२०७

जो नया बिहान ला रहे हैं, उनको ।

नूतन आलोक

Not for you
Is mourning
Not for you
Is rest,
The legacy's yours
That is soaked
In the blood from the hearts of your brothers,
For you
Is the future-creating
Deed.
Time
Presses you down
In the depths.
Fling wide
To a joyfuller morning
The gates !

Ernst Toller.

Nothing is ever born
Without screaming and blood.
John Cornford.

तिङ् लिङ्

चीन के नये साहित्यिक आन्दोलन ने पिछली बीस साल में कई लेखिकाओं को पैदा किया। मगर उनमें से अधिकांश ज्यादा दिन साहित्य के क्षेत्र में न रह सकीं, कुछ अपने पारिवारिक जीवन में खो गयीं और कुछ युग के साथ पैर मिलाकर आगे न बढ़ सकीं। तिङ् लिङ् उन गिनी-चुनी लेखिकाओं में हैं जो युग का साथ दे सकीं और समय के साथ जिनकी कीर्ति में अभिवृद्धि होती गयी।

तिङ् लिङ् का जन्म यांग-सी की तराई के हूनान नामक प्रान्त में १९०५ में हुआ था। हूनान अपने क्रान्तिकारियों और लाल मिर्चों के लिए प्रसिद्ध है। तिङ् लिङ् का जन्म गरीब परिवार में हुआ था, इसी से वह अपनी कालेज की शिक्षा पूरी नहीं कर सकीं। मगर वह लगातार दृढ़तापूर्वक लिखती रहीं और अपनी पहली कृति 'द डायरी ऑफ़ मिस सोफ़ी' से ही उन्होंने काफी ख्याति अर्जित की।

इसके अलावा उनकी अन्य कृतियों, वाई हू, द बर्थ ऑफ़ अ मैन, इन द डार्कनेस, मदर आदि सब में उनकी शैली का एक स्वतंत्र ओज है और सबमें शोषितों-गरीबों के प्रति उनकी गहन सहानुभूति पायी जाती है। उनकी सहज

प्रतिभा के अलावा उनकी कृतियों की शक्तिमत्ता के मूल में उनके अपने जीवन के अनुभव और उनके इंक़लाबी काम हैं। १९३२ में उनके पति को शांघाई में प्राणदण्ड दिया गया। तब तिङ् लिङ् को अपने नवजात शिशु को लेकर वहाँ से भागना और हूनान जाना पड़ा था। दूसरे ही साल अपने बच्चे को अपनी माँ के पास छोड़कर वह शांघाई लौट आयीं और फिर से अपने क्रान्तिकारी कार्यों में जुट गयीं। मगर जल्दी ही पकड़ ली गयीं और फिर चार साल तक किसी को इस बात का पता न था कि तिङ् लिङ् ज़िन्दा हैं या मार डाली गयीं।

सन् ३७ में वह जेल से छूटीं और सीधे छापेमार लड़ाई के इलाके में गयीं, और मोर्चे के अधिक से अधिक जोखिमवाले काम में लग गयीं। कुछ दिन बाद उन्होंने जापान-विरोधी सांस्कृतिक जत्थों का संघटन शुरू किया और इस क्षेत्र में भी बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य किया। प्रस्तुत कहानी उनकी नवीनतम कृति 'व्हेन आइ वाज़ इन शेचुआन' से अनूदित है।

नूतन आलोक

मैदानों के उस पार, पेड़ों के एक हल्के से झुरमुट के परे 'वेस्ट विलो' गाँव बसा था, शान्त और एकाकी। गाँव के बाहर, नदी के किनारे विलो के पेड़ की नंगी शाखें जाड़े की हवा में जोरों के साथ झूम रही थीं। विलो की छाया में आँगन की सफेद पुती दीवार पीली दीख रही थी। उसका पीला रंग ठंढक को बढ़ा रहा था। उसी के कारण दृश्य में मृत्यु की सी भयानक शान्ति भी आ गयी थी।

गांव के छोर पर एक पुरानी, अँधेरी सी, पगोडा के समान इमारत खड़ी थी। गोधूलि में वह इमारत ऐसी जान पड़ती थी मानों कोई एकाकी बुड्ढा खड़ा उदास आँखों से आगे की ओर देख रहा हो।

झुटपुटा हो रहा था। मकानों से कुछ खास धुँआ न उठ रहा था। शाम का धुँधलका गांव पर उतर आया था।

कौवों के झुण्ड पर झुण्ड ऊपर चक्कर काटते और फिर एक एक करके खजूर के झुरमुट की ओर उड़ जाते थे। कुछ नन्हीं मुन्नी चिड़ियाँ जो पहले ही से झुरमुट के अपने घोंसलों में पहुँच चुकी थीं इन नये आगंतुकों के कारण चकित होकर जोर जोर से चहकने लगीं।

मगर इन कौवों से भी ज़्यादा घबराहट उन्हें उस बड़ी छाया के कारण हुई जो पहाड़ी पर से धीरे धीरे उतर रही थी। उसके काले, रूईदार जूते जब घास पर पड़ते तब उस पर की पीली बर्फ दबती और आवाज़ होती। एक जंगली मुर्गी जिसके पंख बड़े खूबसूरत थे, डरकर झाड़ी में कूद गयी।

चेन सिङ् हान को ऐसा लग रहा था मानों वह कैदी हो और लोग उसे फाँसी के तख्ते की ओर ले जा रहे हों। वह अपने को गिर पड़ने से बचाने के लिए पूरा जोर लगा रहा था। उसकी सूनी सूनी सी निष्प्रभ आँखें आकाश की ओर यों देख रही थीं मानों उन्हें इस बात का डर हो कि कोई भयावनी चीज़ उनके सामने आ जायगी। जैसे जैसे वह पहाड़ी की तलहटी की ओर बढ़ता था, वैसे वैसे उसके पग भारी और धीमे होते जाते थे।

गाँव पर छायी हुई निस्तब्धता धीरे धीरे टूट रही थी। होश में आते हुए बीमार की तरह वह थका थका सा कराहने लगा। अब बहुत अँधेरा हो चुका था। लेकिन ये आवाजें आधी रात के वक्त क़ब्रिस्तान में घूमते हुए भूखे भेड़ियों की लंबी, खिंची हुई गुर्राहट के समान जान पड़ती थीं। चेन सिङ् हान ने इन आवाजों को साफ साफ सुना। एक जबर्दस्त डर ने उसके शरीर को बुरी तरह जकड़ लिया।

वह कांपा और स्तंभित सा खड़ा हो गया। भयंकर निराशा के बीच भी आशा के कण सँजोये, उसने अपने टूटते हुए साहस को बटोरा और पहाड़ी से उतरते हुए वह गांव की तरफ बढ़ा। गाँव अब कुहरे से ढँका हुआ था और मकानों की छतें मुश्किल से दीख पड़ती थीं।

तभी गाँव में से दो मानव छाया आकृतियाँ निकलीं। आगे पीछे चलती हुई वे चुपचाप कोई चीज़ लिये चली जा रही थीं। चेन सिङ् हान ने जब यह जाना कि वह चीज़ एक आदमी का शरीर है तो उसका खून सर्द हो चला। वह ठिठका और उसका दिल फिर डर के मारे धड़कने लगा।

वह उन्हें कुछ दूरी से देखता रहा। वे दोनों बहुत बेमन से खुदी हुई मिट्टी को फावड़े से उठाते और जल्दी जल्दी गड्ढे में फेंकते जा रहे थे। धीरे धीरे गड्ढा भर गया। तब उन्होंने मिट्टी ठोंक-पीटकर वहाँ की ज़मीन को कड़ा कर दिया। अब उस ज़मीन की शकल एक बड़े फूले हुए केक के समान थी। चलते चलते एक बार फिर मिट्टी को ठोंककर और बराबर करके वे उसी रास्ते से वापस लौट पड़े। उनमें

कोई बातचीत न हुई, सिर्फ चलते वक्त उनमें से एक ने ठंडी साँस छोड़ी।

चेन सिङ् हान ने उन दोनों को मज़बूती से पकड़ा और पूछा—बताओ, तुम यहां किसको दफ़नाकर जा रहे हो?

उस वक्त उसकी आवाज़ एक बीमार गाय के कराहने की तरह सुनायी पड़ी!

बुड्ढे चाङ् दादा को। हमें उनकी लाश उनके नाती के मकान में मिली। शायद वे ही सबसे पहले मारे गये थे।—उनमें से एक ने जवाब दिया।

दूसरे ने अपने साथी की बात को और साफ करने के लिए कहा—उनकी नतबहू की लाश उन्हीं के पास बिलकुल नंगी पड़ी थी। वह अपने जमे हुए खून के कारण ज़मीन पर जम सी गयी थी। वह देखो, वह रही उसकी क़ब्र—दाहिनी ओर। अब वह शान्ति के साथ सो रही है।

चेन सिङ् हान ने उनका हाथ छोड़ दिया और उनके साथ हो लिया। एक प्रश्न बार बार उसके मन में उठकर जैसे उसका गला घोंट रहा था, मगर उसे पूछने की हिम्मत न हुई। उन दोनों में से छोटे ने शान्ति भंग की।

चेन काका, इन दिनों तुम कहाँ भाग गये थे? जल्दी चलो! तुम्हारा भाई कब का वापस आ गया है।

क्या मतलब, ल्यो हान? कब वापस आ गया वह?

जवाब का उसने इन्तजार न किया। उसके पांवों में नयी ताकत आ गयी थी और वह लम्बे लम्बे डग भरने लगा। उसने आंखें ऊपर उठायीं तो वे दृश्य उसकी आंखों में फिर गये—घटनाएँ छोटी छोटी थीं पर वह उनसे द्रवित हुआ।

तब तक गाँव आ गया था। अँधेरे में उसे वहाँ कोई परिवर्तन न दीख पड़ा। चेन सिङ् हान की चिन्ता आशा में परिणत हो गयी। उसने कब्र खोदनेवालों को पीछे छोड़ा और तेजी से अपने घर की ओर दौड़ा।

उसे घर छोड़े पाँच दिन हुआ था। उस दिन, तब पौ फट रही थी। उसने एकाएक गाँव के छोर पर बन्दूक की आवाज़ सुनी। वह चटपट उठ बैठा और उसने देखा कि उसकी स्त्री पहले ही से उठी बैठी थी। उसकी पन्द्रहवर्षीया लड़की सोना कमरे में झपटकर घुस आयी; उसका चेहरा भय से पीला पड़ गया था। सारा मामला उसकी समझ में फौरन आ गया और वह बोला—तुम पहाड़ी के उस पार अपनी नानी के घर भाग जाओ।

वह बोली—बाबूजी, अगर मरना ही है तो हम सब एक साथ मरेंगे। मेरा चमड़ेवाला जाकट कहाँ है?

अब इन सब चीज़ों पर सिर न खपाओ। जापानी आ रहे हैं।

वह अपनी पत्नी को एक हाथ से और अपनी सुन्दर लड़की को दूसरे हाथ से पकड़कर भागने लगा। उसका चेहरा धूल और कालिख से भद्दा हो गया था; और वह उस समय बहुत भोंड़ा दीख रहा था। वे लोग भीड़ में सबसे आगे थे, और जल्दी ही पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गये। उसकी पत्नी रोने लगी। उसकी दूसरी लड़की और लड़का न जाने कहाँ थे? क्या उनको भी भागने का मौका मिला होगा? और ऊपर से चेन सिङ् हान की सत्तावन बरस की बूढ़ी माँ भी तो छूट गयी थी। वह अपनी पत्नी और लड़की से भी भीड़ के साथ जाने को कह, गाँव की तरफ लौट पड़ा। कुछ लोगों ने उसे रोकना चाहा, कहा कि लौटकर मत जाओ, जान बचाना हो तो भाग चलो। पर उसे अपनी माँ को बचाना था, डरा नहीं। उसने उस बढ़ती हुई भीड़ में सतर्कता से उसे ढूँढ़ा और आवाजें दीं।

त्सो हान की पत्नी अपने एक साल के बच्चे को गोद में लिये हुए भीड़ के पास पहुँचने के लिए जल्दी कर रही थी।

चेन सिङ् हान ने उससे पूछा, माँ कहाँ है? तुमने उसे कहीं देखा है?

हाँ उन्होंने हमसे पहले घर छोड़ा था। रूपा और तुङ का भी उनके साथ थे। हमें कहाँ जाना होगा?

नानी के घर, जल्दी करो।

वह उसके पीछे न जाकर घर की तरफ़ भागा। सारे गाँव में खलबली मची थी, चारों तरफ से गोलियों की बौछार हो रही थी और चीखने और कराहने की आवाजें आ रही थीं। गाँव के छोर पर आग लग गयी थी और धुएँ के सफेद बादल भीतर की तरफ बढ़ रहे थे।

घर में, सिवा कुछ इधर उधर भागते हुए चूहों के और कोई न था।

वह फिर बाहर की ओर भागा और गोलियों की बौछार में आता गया। उसने अपने पीछे आते हुए घोड़ों की आवाज़ सुनी लेकिन पीछे मुड़कर देखने का वक्त न था। ऐसा लगता था कि आसमान अपने पूरे वज़न से ज़मीन को चूर चूर कर देगा। लोग मुश्किल से साँस ले पाते थे—एक चीख़ और···बस।

लौटते हुए, पूरे रास्ते उसे अपने लोग नहीं मिले। उसने कुछ गाँववालों से पूछा भी लेकिन वे कुछ नहीं बता सके।

दो बूढ़ी औरतें एक पहाड़ी की चोटी पर बैठी फूट फूटकर रो रही थीं लेकिन उनमें उसकी माँ न थी। कुछ बच्चे भी भीड़ के साथ झोंके खाते चल रहे थे, लेकिन उनमें उसका तुङ्ग छा न था। उसकी पत्नी और पुत्री का भी अब पता न था। काश कि वह रसो हान की पत्नी को ढूँढ़ पाता। लेकिन उसका भी कहीं पता पाना कठिन था। रुक कर उसने थोड़ी देर आराम किया। शरणार्थियों की एक लहर सी आयी लेकिन उनमें उसके लोग नहीं थे।

जापानियों की पूरी रेजिमेण्ट आयी है।

कुछ खेतिहर किसान मारे गये।

हमारा गाँव क्या इसी तरह तहस-नहस होनेवाला है?

मैंने पहले ही कहा था कि वे सब आयेंगे।

हुई न वही बात। अब हम लोगों का काम तमाम समझो।

इसी को भाग्य कहते हैं।

भीड़ में भय का रोग एक आदमी से दूसरे आदमी को छुतहे रोग की तरह लग रहा था। इसलिए उसने उनका साथ न दिया और चाङ्

किया कान नामक गाँव की ओर, जो वहाँ से नौ मील दूर था, चल पड़ा। इस छोटे से गाँव में कोई बीस तीस परिवार रहते थे, इसीलिए वह बहुत शान्त सा था और आने जानेवाले भी उसमें कम ही आते थे। बाक़ी दुनिया से अलग, वे लोग बड़े आदिमकालीन ढंग से रहते थे। उसकी पत्नी का मायका वहीं था।

उसके पहुँचने के थोड़ी ही देर बाद उसकी पत्नी और सोना भी वहाँ पहुँचीं, लेकिन परिवार के और लोगों का कोई पता न था। दूसरे दिन वह बाहर निकला और गाँव के बारे में कुछ दुःसंवाद ही सुना। तीसरे दिन उसने एक आदमी भेज कर अपने भाई को सन्देसा कहलवाया। चौथे दिन उत्तर आया कि वे लोग जल्दी ही आवेंगे। पाँचवें दिन जब वह फिर घूमने निकला तो उसने एक अच्छी खबर सुनी। छापेमारों ने वेस्ट विलो गाँव पर फिर अधिकार जमा लिया था और लोग अब फिर अपने घरों को वापस लौट रहे थे। इसलिए वह भी पता लगाने के लिए वापस गया। वह भयभीत था—उसे यह सोचकर डर लगता था कि उसके परिजनों को कहीं कुछ हो न गया हो, लेकिन लौटना तो उसे पड़ा ही। भय और आशंका के साथ वह वापस गया।

अब वह अधिक प्रसन्न था। अब तक उसने ऐसा कुछ नहीं सुना था जिससे उसे यह पता चलता कि उन लोगों पर कोई आफत आयी, और कौन जाने, हो सकता है सब मजे में हों। लेकिन कब्र खोदनेवाले उसे यह बताना भूल गये थे कि उसी दोपहर को उन्होंने एक लड़के को दफ़नाया था जिसका नाम था तुङ्ग का, उसका अकेला लड़का तुङ्ग का।

२

चलो मैं भी तुम्हारे साथ उसे ले आऊँ।

सोना ने अपनी कमर का फेंटा कसा और अपने काका चेन रसो हान की ओर बढ़ी। उसने अपनी माँ के चेहरे पर लिखे हुए विरोध के भाव की कोई परवाह नहीं की।

चेन सिङ् हान के छोटे भाई चेन र्सो हान को साहस और गंभीरता अपने पिता से मिली थी। उसकी भारी भारी पलकें जब गुस्से में झुक जातीं और उसके ओंठ जब दृढ़ता के साथ बन्द हो जाते तब उसके भाई एक दूसरे को देखते हुए शान्त हो जाते। लेकिन शायद ही कभी उसे गुस्सा आता हो। उसने अपनी सिधाई के मारे लड़कों को बिगाड़ दिया था और इससे घर की औरतें उससे क्षुब्ध रहतीं।

नहीं, तुम मत चलो। घर ही में रहो। देखती नहीं, बाहर बर्फ गिर रही है।—उसने सोना की हल्की रुईदार जाकट को थपथपाया।

नहीं, मैं चलना चाहती हूँ। मैं घर पर नहीं रहना चाहती।

उसने अपने शरीर को तोड़ा-मरोड़ा और मुँह फुलाकर खड़ी हो गयी। उसने अपनी माँ और काकी को देखने के बाद बड़ी आशा और आह्लाद के साथ आँखें अपने काका के चेहरे पर जमायीं।

काका मुसकराये मानों कह रहे हों, कैसी लड़की है···

तुम्हारी जाने की हिम्मत पड़ती है—इस सब तूफान के बावजूद! इतनी बड़ी लड़की और इतनी बेशरम···माँ ने जो इधर बहुत बदमिजाज और चिड़चिड़ी हो गयी थी, डाँटना शुरू किया।

घर ही रहो, नहीं तुम्हारी माँ अकेली पड़ जायँगी। चेन सिङ् हान ने कहा और बिना अपनी लड़की की ओर देखे बाहर निकल गये।

सोना, आग जलाओ और उस पर बहुत-सा पानी उबलने के लिए रख दो। देखो, अब भी संभव है कि तुम्हारे मँझले काका दादी और तुम्हारी छोटी बहन को ढूँढ़ लावें। तुम्हें कुछ चाहिए क्या?

सोना ने कोई उत्तर न दिया। उसने एक सूती कपड़े से सिर ढँक लिया और दरवाजे की तरफ़ बढ़ी।

कहाँ जा रही हो? उसकी माँ ने गुस्से में गरजकर पूछा।

कोयला लाने। जाऊँ! सोना ने उतनी ही भारी आवाज में जवाब दिया।

काका फिर हँसने लगे। कमरे में चारों ओर एक बार निस्पृह ढङ्ग से नज़र दौड़ाकर वह बाहर चले गये। उनका चेहरा गम्भीर बना रहा।

चेन सिङ् ह्वान की पत्नी काङ्† पर बैठी हुई है। अपने परेशान दिमाग से वह ऐसी किसी चीज की तलाश में थी जिस पर वह अपना सारा दबा हुआ गुस्सा उतार सके और जिसे बुरा भला कह सके। तभी उसके दिमाग में एक बात आयी। उसे सोलहो आना यकीन हो गया कि उसका अन्दाज सही है। उसका यह ताजा गुस्सा उसके मन को बुरी तरह मथ रहा था और उसकी बहुत प्रबल इच्छा हुई कि वह भी दाँत काटे और लात चलाये, पर उसने अपने पर काबू करने की कोशिश की और धीमे संयत स्वर में पूछा—बहन, तुमने कहा था न कि उस दिन भगदड़ के समय रूपा और तुङ्ग का तुम्हें दिखे थे ?

जीजी ने जो कि काङ् के दूसरे सिरे पर अपने बच्चे को लिये हुए बैठी थीं, बड़ी भलमंसाहत से उत्तर दिया। पिछले दो दिनों से उसे अपनी जिठानी से बात करने में डर लग रहा था।

हाँ भागते समय मैंने उन्हें देखा था।

सोना और उसके पिता से तुम्हारी मुलाकात कब हुई ?

रास्ते में।

हूँ।

बातचीत थोड़ी देर को बन्द हो गयी। फिर उसने सवाल करना शुरू किया।

सातवें काका के घर पहले भी तुम कभी गयी हो ?

नहीं, मैं कई लोगों के साथ गयी थी और किसी किसी तरह घर पहुँची थी। अगर सातवें काका न होते तो, बस··· जीजी ने अपनी उस समय की दयनीय दशा का वर्णन किया। अगर सातवें काका से उसकी भेंट न होती तो उसका क्या हाल होता ?

हुँः ! कैसा संजोग है ! कैसी अच्छी कहानी गढ़ी है ! जीजी, हम

---

† उत्तरी और उत्तर पश्चिमी चीन में जहाँ बहुत सख्त सर्दी पड़ती है अँगीठी के ऊपर मिट्टी का बिस्तरनुमा चबूतरा बनाकर लोग उस पर सोते हैं। उसी को काङ् कहते हैं—अनु०

सब एक ही घर के हैं इसलिए कुछ छिपाओ मत मुझसे। सोना के पिता तुम्हें वहाँ ले गये, यह बिलकुल ठीक ही किया उन्होंने। तो तुम मुझसे यह बात छिपाना क्यों चाहती हो ?

जीजी, ऐसी बात मत कहो। हमारा घर यों ही बरबाद हो गया है। अब कुछ शान्ति तो रहने दो।

घर बरबाद हो गया ? तुम्हारा क्या नुकसान हुआ ज़रा सुनूँ तो ? तुम्हें तो एक आदमी बहुत आराम के साथ एक हिफाजत की जगह पहुँचा आया, मरन तो मेरी हुई। ओह ! मेरा तुङ्ग छा ! मेरा बेटा ! तू बुरी मौत मरा। इस घर में राक्षस भरे हैं—कठोर और निर्लज्ज...! —वह अपनी देवरानी का अपमान करने के लिए कुछ अपशब्द खोज रही थी जिसमें वह उसे गुस्सा दिला सके।

जीजी को लगा कि उसके साथ बेजा सलूक किया जा रहा है और वह कम्बल में मुँह छिपाकर रोने लगी। बच्चा डर गया और चिल्लाने लगा।

माँ, क्या मामला है ? कोयले का एक गट्ठर लिये हुए सोना लौटी तो बड़े फेर में पड़ गयी।

अपनी बेटी की आवाज़ सुनकर तो उसकी तक़लीफें और जैसे बढ़-सी गयीं। अब यही उसकी अकेली लड़की थी। उसकी दूसरी लड़की सोना से भी ज्यादा खूबसूरत थी। और कितने अच्छे, कितने प्यारे थे दोनों बच्चे ! कभी उन्होंने एक काम उसकी मर्जी के खिलाफ नहीं किया। अपने तुङ्ग छा की लाश भी वह नहीं देख सकी ; उस छोटी-सी कब्र पर वह दो बार जा चुकी थी। वह सोच ही नहीं पाती थी कि उस वक्त वह कैसा दिखता रहा होगा। उसकी हालत क्या हलाल किये हुए बकरे के समान रही होगी, जिसकी आँतें—पीली, सफेद और लाल—निकालकर अलग कर दी जाती हैं। इस विचारमात्र से उसे लगा कि कोई उसकी अँतड़ियाँ निकाले डाल रहा है।

माँ रोओ मत। काकी, माँ को क्यों रुला रही हो तुम ?, लेकिन सिसकने सोना भी लगी।

बर्फ गिर रही थी। बर्फ के साथ अँधेरा गिर रहा था और अँधेरा बर्फ को दबा रहा था। रंगों की मोटी और अनन्त परतें इकट्ठा हो रही थीं। हवा बहुत तेजी से आकर कागज की खिड़की में टक्कर मार रही थी और छेदों में से अन्दर घुस आती थी। जहाँ पहले कमरों में थोड़ा-सा अँधेरा छाया हुआ था वहाँ अब गहरा अँधेरा था। लोगों के मन के भाव भी अनिश्चय की पीड़ा से गहरी उदासी में बदल रहे थे। रोने का स्वर अब दब गया था, लेकिन घायलों की कराहें अब भी सुन पड़ती थीं।

मँझली काकी ने जल्दी से बच्चे को, जो थकान के मारे सो गया था, काङ् पर लिटाया और कमरे में रास्ता टटोलने लगीं। उन्हें लगा कि कुछ होने जा रहा है।

सोना ने जैसे ही देखा कि कमरे में कोई चल रहा है, उसने अपनी उदासी को दूर फेंकने की कोशिश की। अँगीठी में लाल लाल अंगारे दहक रहे थे और उनकी बगल में काङ् भी गरमा उठा था। बर्तन से उठती हुई भाप की वजह से, अँगीठी के चारों ओर की शकलें धुँधली हो जाती थीं। उन्होंने फिर बातें करना शुरू किया और परस्पर कुछ शुभाकांक्षाओं का विनिमय किया। ये बुड्ढी सफेद बालोंवाली दादी और छोटी लड़की के आने की आस लगाये थे।

जब भयानक उत्तरी हवा उन असीम मैदानों और दूर पास की पहाड़ियों पर अपनी दुर्दम तेजी से चलती तो चुपचाप पड़ी हुई बर्फ तितर-बितर होने लग जाती। अस्थिभेदी शीत और भयंकर अन्धकार रात्रि के साम्राज्य के स्वामी हो गये थे। चूँकि बहुत थोड़ी छतें और दीवारें बमबारी से बचकर खड़ी रह सकी थीं इसलिए निराश्रय लोग ध्वस्त धरती पर कुत्तों की भाँति पैर सिकोड़ सोते थे। कुत्ते दुम दबाये, खँडहरों में आश्रय ढूँढ़ते फिर रहे थे। छायाएँ चलती देखने पर भी केवल आँखें मूँद लेते थे। इतने थक गये थे कि इससे अधिक चिन्ता करना उनके लिए संभव न था। समस्त चेन परिवार ने पूरी रात आशा और प्रतीक्षा में काटी थी। सोना अब भी खड़ी हुई थी। बीच बीच में वह

आग में कोयला और बर्तन में उबलने के लिए पानी डालती जाती। वह बार बार पूछती, मँझले काका, तुम्हारे ख्याल में क्या दादी सचमुच लौटेंगी ?

आज रात नहीं। आज बहुत ठंढ है। अगर मिल भी जायँगी तो मँझले काका उन्हें आने न देंगे। अच्छा बेटी अब जाओ, सोओ। चेन त्सो हान, तम्बाकू पीता हुआ काङ् के सहारे टिका हुआ बैठा था।

तुम नहीं सो रहे हो इसलिए मैं भी नहीं सोऊँगी—देखो, माँ कितनी गहरी नींद में सो रही है। फिर उसने गाँव में होनेवाली किसी नयी घटना के बारे में उसकी राय पूछी। उसने अपनी दादी के बारे में भी बातें कीं। उन दोनों को यही उम्मीद थी की वह रात को न आयेंगी। बहुत सख्त सर्दी थी।

चीखने-चिल्लाने और कराहने की आवाजें मानो हवा उनके पास ला रही हो। सोना भय से संत्रस्त हो गयी। उसने अपने काका की ओर देखा और एकदम खामोश रहने के लिए इशारा किया जिसमें वे ज्यादा अच्छी तरह सुन सकें। काका काम रोककर ध्यान से सुनने लगे। यहाँ तक कि पिताजी जो काङ् पर उनींदे से लेटे हुए थे, उठकर बैठ गये। लेकिन व्यर्थ। वे लोग जाड़े के धुँधले प्रकाश में पौ फटने तक संशय में बैठे रहे। दिन निकलने से उनकी उम्मीदें अगले दिन पर टल जाती थीं। थोड़ी ही देर में कमरे में बाहर की-सी शांति छा गयी।

बुझा बुझा सा उदास दिन निकला और आसमान का स्याह रंग पीलापन लिये हुए भूरे रंग में बदल गया। बर्फ तेजी से और बहुत-बहुत सी गिर रही थी। चिड़ियों, चूजों, कुत्तों, किसी की आवाज नहीं सुन पड़ रही थी। बर्फ सब पर थी—खँडहर मकान और टूटी, ढही हुई दीवालें। यह बर्फ थी परों और हड्डियों पर, गन्दगी पर और तमाम उस खून पर जिससे देश की धरती भींगी हुई थी। दिखायी पड़नेवाली चीज केवल एक थी, सफेद दीवाल पर काले अक्षर। चियाङ् काइ शेक की जय। कम्युनिस्टों का नाश हो। इनके अलावा और भी नारा था, जो अभी से मिट चला था और साफ़ पढ़ा न जाता था, चीन से जापानी साम्राज्य-

शाही को निकाल बाहर करो। उन पर भी बर्फ गिर-गिरकर उन्हें यों मिटाये डाल रही थी जैसे आँसुओं से धुल-धुलकर उदास चेहरा निखर आता है।

मैदान पर एक जीवित चीज धीरे-धीरे चल रही थी जो ठोकर खाती थी, गिरती थी और फिर-फिर उठती थी। कभी-कभी वह बर्फ में बिलकुल समा-सी जाती थी, लेकिन दूसरे ही पल वह फिर जोर लगाकर चलने लगती। उसके गाँव के पास पहुँचने पर यह बात साफ हो गयी कि वह एक मनुष्य की आकृति थी।

वह डोलता हुआ जीव जब फिर सड़क के किनारे गिरा तो एक कुत्ता उसके पास आया। उस जीव ने थोड़ा उठ कर कुत्ते को भगाने का प्रयत्न किया। अपने अशक्त हाथों को हिलाते और उठने की कोशिश करते हुए वह एक परिचित के मकान की ओर लड़खड़ाकर चलने लगा। कुत्ते की समझ में न आया कि यह चीज क्या थी और वह भी थका-सा उसके पीछे-पीछे चलने लगा। एक अकेली प्रेरणा से परिचालित वह विरूप मानव आकृति चेन लिङ् हान के हाते तक किसी-किसी तरह पहुँची और फिर वहीं ढेर हो गयी। उसने देखा कि एक जोड़ा पीली-पीली भूखी आँखें उसके चेहरे को घूर रही हैं लेकिन उसमें इतनी शक्ति भी नहीं थी कि उन्हें भगा दे या उधर से नज़र भी फेर सके, इसलिए वह कराही और उसने अपनी सूखी झुर्रीदार पलकें बन्द कर लीं। उसी वक्त एक दीवाल के खँडहर पर दूसरा कुत्ता दिखाई दिया और फिर उसने भी भूँकना शुरू कर दिया। पहलावाला कुत्ता कूदकर आगे बढ़ गया और दूसरेवाले कुत्ते का जवाब देने के लिए ज़ोर ज़ोर से भूँकने लगा। जमीन पर पड़ी हुई उस जीवित वस्तु ने फिर बहुत पतली आवाज में एक लंबी कराह भरी।

पिताजी, बाहर कैसा शोर हो रहा है?, सोना जग गयी थी और डरी हुई थी।

कुत्ते लड़ रहे हैं।

यह बहुत बुरी बात है। मैं उन्हें भगा दूँगी।

सोना काङ् पर से उतरी और उसने कोयले का एक टुकड़ा उठाया। वह निकलकर दरवाजे पर खड़ी हुई तो कुत्तों ने उस पर बिगड़कर भूँकना शुरू किया। उसने उन पर कोयले का टुकड़ा चलाया। कुत्ते और थोड़ी दूर हट गये लेकिन उनका भूँकना न बन्द हुआ।

कुत्तों को छेड़े बगैर भी उसका जी नहीं मानता, माँ ने शिकायत के लहजे में कहा।

मँझले काका, यहाँ हाते में कोई चीज़ पड़ी है।

सोना जब उस चीज़ की ओर बढ़ी तो कुत्ते और गुस्से के साथ भूँकने लगे। उसने उन्हें भगाया। उस 'चीज़' ने डरते डरते अपनी आँखें खोलीं और कुछ बोली। सोना चीख पड़ी—यह बाँस चिरने की सी आवाज थी। बहुत हलचल के बाद इस चेतन आकृति को सूखे रुईदार कपड़े पहनाये गये और उसे गर्म काङ् पर लिटाया गया। उसके कुछ थोड़े से बाल उसके चेहरे को ढँक रहे थे और उसकी बुझी बुझी आँखें गड्ढों में से झाँक रही थीं। सोना अपनी माँ की गोद में सिर रखे रो रही थी। बच्चा अपनी इस दादी को जो उसे गोद में लिये रहती थी और चूमा करती थी, नहीं पहचान सका। निदान वह कमरे के एक कोने में एकदम खामोश बैठा रहा। उसके मुँह से एक शब्द नहीं निकला। मँझली काकी बूढ़ी दादी को भात का माँड पिला रही थी। चेन सिङ् हान डाक्टर को बुलाने चला गया था, उसकी पत्नी सुबकने जो लगी तो उसका सुबकना बन्द ही न हो—मेरी बच्ची···मुझे अपनी बच्ची चाहिए।

माँ, तुम हम लोगों को पहचानती नहीं क्या? चेन सिङ् हान ने बार-बार प्रश्न किया। लेकिन बूढ़ी माँ न तो बोली और न तो उसनेऐसा ही कोई इशारा किया जिससे पता चलता कि वह इन लोगों को पहचानती है।

उसने उसे गौर से देखा। उसका थका, ज़माने की मार खाया हुआ चेहरा जिसमें एक जोड़ा बुझी बुझी-सी, मछली की-सी आँखें जड़ी हुई थीं, उसे जली लकड़ी के टुकड़े-सा जान पड़ा। उसके हृदय की संचित घृणा ने बढ़कर लपट का रूप धारण कर लिया। हर शब्द पर रुककर,

उस पर जोर देते हुए उसने उस भावहीन आकृति से कहा—माँ मैं चाहता हूँ, कि मरते समय तुम शान्ति अनुभव करो। तुम्हारा बेटा तुम्हारी मौत का बदला लेने के लिए अपनी जान दे देगा। अब मैं केवल इसलिए जिऊँगा कि मुझे जापानियों की हत्या करनी है। मैं प्रतिशोध लूँगा, तुम्हारी मौत का, अपने बरबाद गाँव का, शांसी का, चीन का। मुझे जापानी खून चाहिए, अपने देश को धोकर साफ़ करने के लिए, उसकी धरती को उपजाऊ बनाने के लिए। ओह, मुझे जापानी राक्षसों का लहू चाहिए.........

इन शब्दों ने मानों जादू सा किया और काङ् पर लेटी हुई बुढ़िया हिली। उसके ओठ फड़क रहे थे; उसने धीरे धीरे कुछ शब्द कहे और फिर भयभीत स्वर में चिल्ला पड़ी—जापानी राक्षस......। उसने घूमकर पुत्रवधुओं और पौत्र को देखा। वह और कुछ न बोल सकी—हलाल की हुई मुर्गी की तरह जो सिर्फ पंख फड़फड़ाती है। सिर कपड़ों में छिपा कर वह एक बच्चे के समान रोने लगी।

दादी दादी।

गो कि कमरा दुःख और उदासी से भरा हुआ था, तब भी अब वहाँ पर थोड़ी आशा और जीवन का संचार हो रहा था।

२

जीने की अपनी प्रबल इच्छा के ही कारण बुढ़िया जल्दी ही चंगी हो गयी। कुछ दिन बाद एक रोज़ वह आँगन में धूप लेती हुई बैठी थी। परिवार की औरतें उसे चारों ओर से घेरकर बैठी हुई थीं। बुढ़िया ने अपनी कहानी का प्रवाह जारी रखा—लड़की चीख़ती-चिल्लाती रही, वह जब अपने पैर फैलाती तो वे ऐसे दिखते जैसे तासे पर तड़तड़ तड़तड़ के नाद के साथ गिरनेवाली बाँस की खपाचियाँ और उसका हिमश्वेत...

बस करो दादी, बस करो, मुझे डर लगता है। कहकर सोना ने अपना मुँह हाथों में छिपा लिया।

'बारी बारी से तीन जापानी राक्षसों ने उसी समय उससे...' बुढ़िया के चेहरे पर ऐसा भाव आया मानों उसे इस बात का गर्व हो कि उसने अपनी पौत्री को डरा दिया। 'वह लड़की चिल्ला तक नहीं पायी। उसका चेहरा लाल सुर्ख हो गया। दर्द के मारे उसने बूढ़ी गाय की भाँति कराहा। यह पीड़ा प्रसव की पीड़ा से भी अधिक भयानक थी। उसने याचनाभरी दृष्टि से मेरी ओर देखा। अपनी ज़बान काट डालो—ज़ोर से काटो। मैंने सोचा उसके लिए मौत ही अच्छी होगी।'

'दादी, दादी !' कहकर उसकी पुत्रवधू पीली पड़ गयी।

लेकिन बुढ़िया निर्ममतापूर्वक कहती ही गयी—वह मरी लेकिन अपने ही हाथों नहीं। उसकी मरी हुई गौर देह खून से लथपथ पड़ी थी। ध्यान रहे प्रसव में भी उसका इससे अधिक खून नहीं जाता। खून उसकी छाती पर था और वहाँ से वह उसकी कमर और उसके हाथों तक बह बहकर आ रहा था। उन्होंने उसके स्तनों की घुण्डियाँ दाँत से नोच डाली थीं। वे घुण्डियाँ तुम्हारे से बड़ी न थीं।' जादूगरनी की तरह उसने अपनी आँखें अपनी पौत्री पर गड़ा रखी थीं। 'उसका छोटा-सा कोयलसा मुँह बहुत बुरी तरह कटा हुआ था—सड़े सेब की तरह मसला हुआ, और इतने पर भी वह मेरी ओर अपनी बड़ी बड़ी आँखों से देख रही थी।'

बुढ़िया एकदम बदल गयी थी। क्या अब उसे अपना परिवार प्यारा न था? अगर था तो वह क्यों हमेशा वे किस्से सुना सुनाकर उन्हें तकलीफ पहुँचाती रहती थी। मगर कोई आह भरता तो उसका पारा एकदम चढ़ जाता और वह चिल्लाकर कहती, 'कायर...टेसुआ ढरकाते तुम्हें लाज भी नहीं आती! घबराओ नहीं, फिर आयेंगे जापानी राक्षस...' जब वह यह देखती कि उसके वृत्तान्त सुनकर लोगों के चेहरे गुस्से से लाल हो गये हैं तब उसे अपनी लगायी हुई प्रतिशोध की चिनगारी को लपट बनते देख सुख होता।

पहले वह अपने लड़कों के सामने अपनी कथा न कहती। उसे उनकी तीखी निगाहों से डर लगता था, उसे थोड़ी लाज भी लगती, पीड़ा भी होती और वह अपनी कथा जारी न रख पाती।

और उसने अपनी पोती की मृत्यु का वृत्तान्त सुनाया—उसे सैनिकों के आमोद और विलास की चेरी बनाया गया था। जापानी सैनिकों के शरीर के बीच दबकर वह डर के मारे पागल सी हो जाती और अपनी दादी और अम्मा को चिल्ला चिल्लाकर पुकारती। दो सैनिकों को 'सुख पहुँचाने' के बाद उसे घूर पर फेंक दिया गया। लेकिन वह उसके बाद भी एक दिन जीवित रही। आँसू उस वक्त भी उसके तने कुम्हलाये हुए चेहरे पर दीख पड़ते थे।' वृद्धजन समादर समाज † में जाने के पहले उसने लड़की को ज़िन्दा ही घसीटे जाते देखा—शायद कुत्तों के आहार के लिए।

उसने अपनी आँखों से तुङ्का को भी मरते देखा। उसने बिना अपनी पुत्रवधू (तुङ्का की माँ) की भावनाओं का खयाल किये, बहुत विस्तार से अपनी कथा कहना आरम्भ किया। उसने बतलाया कि तुङ्का बहादुर लड़का था। संगीन की नोक पर होते हुए उसने भागने की कोशिश की। वह मर गया लेकिन 'उफ' तक न की। ऐसी बहुत सी घटनाएँ थीं; अपने जीवन में उसने पिछले दस दिनों की सी यंत्रणाएँ कभी न देखी थीं। कुछ पड़ोसी अपने सगे सम्बन्धियों के बारे में पूछताछ करने के लिए आने लगे और तब वह बहुत सच्चाई के साथ बतलाती कि कैसे उसके मा बाप, पत्नी या बच्चों को कत्ल किया गया था और उन्हें कैसी कैसी यातनाएँ पहुँचायी गयी थीं!

उसकी बातचीत से लोगों पर जो असर होता उसी से उसे शान्ति तथा सन्तोष मिलता। अपने श्रोताओं से उसे समवेदना मिलती और वह यह सोचकर सुख पाती कि उसकी घृणा उसके श्रोताओं के जीवन का अंग भी बन रही है।

वह कभी बहुत बातून न रही थी। पहले कहानी कहते कहते

---

† ये सोसायटियाँ बूढ़ों के लिए सदाव्रत के ढङ्ग की चीज़ समझी जाती थीं लेकिन अधिकृत चीन में जापानियों ने इसे बूढ़ों से काम लेने का केन्द्र बना दिया था।

उसके आँसू आ जाते, लेकिन कुछ ही दिन बाद उसने उन पर काबू पाना सीख लिया और समझ गयी कि अपनी बात कहने का सबसे प्रभावशाली ढङ्ग कौन सा है।

उसने अपने अपमान की कहानी भी लोगों को सुनायी। 'वृद्धजन समादर समाज' में उसे सभी तरह के काम करने पड़ते। वह गन्दे कपड़े धोती, जापानी झण्डे बनाती। उसे कोड़े मारे गये थे। कोड़े की बात कहते हुए वह अपनी आस्तीन चढ़ाकर और कालर खोलकर वे दाग दिखलाती। हाँ, उसे एक बूढ़े चीनी के पास ज़बर्दस्ती लिटाया भी गया था। वह बेचारा बूढ़ा चीनी भी विवश था! तमाम जापानी सैनिक चारों ओर खड़े हमको देख रहे थे। बूढ़े की आँख से आँसू टपककर मेरे चेहरे पर आ गिरा था। उसने अत्यन्त पीड़ा के साथ कहा था 'मुझसे घृणा न करना।'

वह रोज़ गाँव में घूमने निकलती और लोगों के झुण्ड उसके पीछे होते। वह ज़ोर से पूछती, 'क्या तुम कभी इसे भूल सकते हो!' अगर सड़क पर उसे काफी लोग न मिलते तो वह घरों में जाकर लोगों को अपनी कहानियाँ सुनाती। अकसर सुननेवाले, बुढ़िया की भावना से स्वयं प्रभावित हो, अपने काम का हर्ज करके बातचीत में हिस्सा लेते।

अब उसे पूरा गाँव जान गया था और बच्चे खास तौर से क्योंकि वे अकसर उससे मिलने और कहानी सुनने आते।

तभी उसके पुत्रों और पुत्रवधुओं ने कहना शुरू किया, 'यह पागल हो गयी है। इसे अपने खाने और बाल ठीक रखने की सुध नहीं रहती। अब यह घर में रहना तो चाहती ही नहीं, सची बात तो यह है।'

बड़ी पुत्रवधू सबसे पहले गरजती, 'हाँ, दादी निश्चय ही बदल गयी हैं। अब रूपा और तुङ्ग का तक के बारे में बात करते हुए उसकी आँख से आँसू का एक कतरा तक नहीं गिरता। मैं कह नहीं सकती, उसके दिमाग में क्या कुछ हो रहा है।'

मँझली ने अपने पति की ओर देखा। पति की मुद्रा चिन्तित थी।

चेन सिङ् हान को पहले दिन की याद आयी जब उसने उधर से गुजरते हुए बुढ़िया को भीड़ से बात करते देखा था। वह अपनी रामकहानी कह रही थी और यकायक उस पर जैसे पागल-पन-सा सवार हो गया। सारा खून दौड़कर जैसे सिर में जमा होने लगा; वह समझ नहीं सका कि वह क्या चाहता है, जोर से चिल्लाना, झपककर अपनी माँ को छाती से लगाना या वहाँ से भाग जाना। उसका शरीर जोर से काँपने लगा। उसी वक्त माँ ने अपने बेटे को देखा, चुप हो गयी और उसकी ओर घूरने लगी। सब श्रोताओं ने उसको देखने के लिए गर्दन मोड़ी, लेकिन हँसा कोई नहीं।

वह अपनी माँ की ओर बढ़ा और अपना हाथ बढ़ाते हुए बोला—माँ, मैं तुम्हारा बदला लूँगा।

भावावेश के कारण माँ का मुँह बिगड़-सा गया था; उसने भी अपना हाथ बढ़ाया लेकिन फिर तुरन्त खींच लिया और हारे हुए मुर्गे की भाँति अपने ही में सिमटने-सी लगी और रोती हुई जैसे मुँह छिपाने के लिए भीड़ की ओर दौड़ी। कोई बोला नहीं। सिर झुकाये हुए वे अपने भारी कदम उठाते वहाँ से चले गये। वह उस खाली सड़क में अकेला रह गया। उसे लगा कि उसका हृदय सूना सूना है लेकिन तब भी जैसे बहुत-सी बातें बाहर न आ सकने के कारण उसका गला घोंट रही हों।

'मैं देखती हूँ हमारा सारा परिवार पागल हुआ जा रहा है।' बड़ी बहू ने फिर बहस शुरू की, 'तुम उनसे कुछ कहते क्यों नहीं, तुम्हें तो जैसे कोई चीज व्यापती ही नहीं,' उसने अपने पति को लक्ष्य करते हुए कहा।

'खूब! भला क्या कहूँ मैं उनसे, तुम्हीं बताओ न? देखता तो हूँ कि बहुत मानसिक पीड़ा वह पा रही हैं।'

'उसकी बात न करो, कौन है जिसका दिल नहीं रो रहा है?'

चेन सिङ् हान फिजूल के लिए झगड़ा नहीं खड़ा करना चाहता था इस लिए वह खामोशी से अपने भाई को देखता रहा। जो कुछ उसने

कहा था, उसमें उसका भाई सहमत था। उसने घर की औरतों से पूछा कि क्या वे यह चाहती हैं कि बुढ़िया को रस्सी से बाँधकर घर में डाल दिया जाय। लेकिन जरा यह भी तो मालूम हो कि बेचारी ने किसी का क्या बिगाड़ा है? उसका खयाल था कि उसकी देखरेख के लिए जब तक सोना है तब तक वह नहीं बहक सकती।

उसका तीसरा बेटा लौटा, सबसे छोटा और उसे सबसे अधिक प्रिय। माँ के सफेद बालों को प्यार से छूते और थपथपाते हुए वह रोने लगा और हकला हकलाकर बोला: माँ, गलती मेरी थी। मैं अगर घर पर होता तो तुम हरगिज हरगिज जापानी राक्षसों के चंगुल में न फँसतीं। लेकिन मा, फौज में रहने के कारण सदा अपने मन की नहीं कर पाता।

'क्या कहते हो बेटा, फौज में तो तुम्हें होना ही चाहिए।' उसने अपने बेटे को देखा और बहुत सन्तोष अनुभव किया। बीस के आसपास की उम्र का छोकरा, छोटी सी जाकट पहने और कमर पर पिस्तौल लगाये। 'अब यह पिस्तौलों और बन्दूकों की दुनिया है। बेटा, बताओ तुमने कितने जापानी मारे?'

उसे अपने इस बेटे के सामने कुछ बतलाने की जरूरत न थी— अपने ऊपर होनेवाले अत्याचार की गाथा गाने की जरूरत न थी। वह जापानियों के ख़िलाफ़ लड़ाई की कहानियाँ सुनना चाहती थी। उनसे उसे कुछ सान्त्वना मिलती थी।

'तुम डरती नहीं न? अच्छा तो फिर मैं तुम्हें सुनाऊँ।'

चेन लिङ् ह्वान की आँखें चमकने लगीं। उसने खाँसा और कहना शुरू किया—हम लोग वेस्ट विलो गाँव पहुँचे और हमने लगभग बीस 'राक्षसों' का काम तमाम किया। फिर हम लोगों ने ईस्ट विलो और लगी गाँवों पर हमला किया। हम लोगों ने एक बार सानयाङ् गाँव पर कब्जा कर लिया था मगर फिर वह हमें छोड़ना पड़ा। लेकिन अब फिर हम लोगों ने उस जगह पर कब्ज़ा कर लिया है। मुझे याद नहीं हम लोगों ने कितने जापानी मारे; लेकिन सामग्री जरूर हम लोगों के

हाथ बहुत सी लगी—तोपें, गोला-बारूद, यहाँ तक कि खाने की सामग्री भी। हमारे ही दल में वह मशहूर बहादुर चाङ् ता चुआन भी था। वह एक बार छोटी मशीनगन अपने कंधे पर मोटे रूईदार कोट के नीचे रखकर शहर ले गया था। परिस्थिति वहाँ की बहुत विषम थी इसलिए वहाँ पर वह कुछ कर नहीं पाया और यों ही लौट आया। लेकिन घर लौटते समय रास्ते में उसकी मुठभेड़ दस जापानी सैनिकों से हुई और उसने उन सबको जहन्नुम रसीद किया। एक बार हम लोगों ने एक जापानी सैनिक गिरफ्तार किया। आम नागरिकों की मदद से हमें उसे ले जाना पड़ा—इतना मोटा था वह। लेकिन ले जाते समय रास्ते से ही वह कहीं भाग गया। हम लोगों ने फिर उसे पकड़ने की बहुतेरी कोशिश की लेकिन बेसूद।

बुढ़िया ने ये तमाम बातें बहुत चाव के साथ सुनीं और दूसरों को सुनाने के लिए बेताब हो उठी। अब उस पर और भी जुनून सवार हो गया था। उसका बड़ा लड़का जो कि किसान सभा का सदस्य था, नये बीज खरीदने गया हुआ था और उसका दूसरा लड़का फौज में था। उसका तीसरा लड़का घर पर बहुत कम रहता और जब रहता भी तो उससे ज्यादा कुछ फर्क न पड़ता, बुढ़िया उससे डरती थोड़े ही थी। एक शाम को उसने दो बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ मैदान में देखीं। उसने अपने लड़के से पूछा, 'वे क्या हमारी गाड़ियाँ हैं?'

'हाँ, हमारी माल ले जानेवाली गाड़ियाँ हैं।'

'होंगी, मुझे इससे मतलब नहीं कि वो क्या माल ले जाती हैं। अगर वे हमारी हैं तो मैं जानती हूँ कि उनका क्या काम है? मैं कल चाँग गाँव जाना चाहती हूँ।'

परिवार के सभी लोग उसकी ओर घूर घूर कर देखने लगे।

'क्या कहा? मेरे लिए जगह नहीं है उसमें, वाह रे! खाली खाना ले जाती है वह गाड़ी? ले जाती होगी! मेरे ठेंगे से! मैं तो जाऊँगी। मैं अपने भाई भौजाई को देखना चाहती हूँ।' उसने सबके विरोध को तानाशाही ढङ्ग से खतम कर दिया।

और दूसरे रोज बुढ़िया सोना को साथ लेकर खाने की गाड़ी में वाँग गाँव की ओर रवाना हो गयी।

वहाँ उसे अपने रिश्तेदार मिले। उनसे उसने अपनी आँखों देखी यंत्रणाओं की चर्चा की। और उनके आँसुओं को देखा। उसने अपने चारों ओर बैठे हुए लोगों के चेहरों पर लिखे हुए डर और गुस्से के भाव भी पढ़े। फिर अपने बेटे से सुनी हुई उत्तेजक और उत्साहवर्द्धक कहानियों की सहायता से उसने उनके घायल जी पर मरहम लगाया और वे फिर हँसने लगे। नौजवानों को उसने छापेमारों के दल में शामिल होने के लिये तैयार किया। अगर वह उनके चेहरों पर ज़रा भी हिच-किचाहट का भाव देखती तो उसकी भवें तन जातीं और वह गुस्से से उबलकर कहती 'छिः कायरो! मौत से डरते हो! अच्छा तो रुको, आने दो जापानियों को, फिर वही उतारेंगे तुम्हें मौत के घाट। बता तो मैं चुकी ही हूँ कि वे कमजोरों को कैसे कत्ल करते हैं।'

हाँ, बहुतों ने उसकी बातें सुनीं और छापेमारों के दल में शामिल हुए। कभी-कभी वह कुछ लोगों को अपने घर लाती और उन्हें अपने बेटे के हवाले करती हुई कहती, लो ये भी तुम्हारी तरह हैं—इन्हें बन्दूक चाहिए।

वाँग गाँव के बाद एक रोज वह सोना को साथ लेकर दूसरे गाँव गयी। जाने के लिए अगर उन्हें गाड़ी न मिलती तो वे दोनों पैदल ही चल देतीं।

वह अक्सर सोना को डाँटकर कहती, 'तू भी लोगों से क्यों नहीं बात करती?' सोना सदा से ही अपनी दादी के पक्ष में थी। वह उसे प्यार करती और दादी के प्यार को सँजोकर रखती। वे जब साथ साथ चलतीं तो वह अक्सर बहुत शान्ति और सहानुभूति के साथ बुढ़िया को देखा करती और उसकी बुढ़िया दादी उसे बाँहों में कसकर छाती से लगा लेती और लंबी साँस लेती। सोना तब उदासी-मिश्रित प्यार का भाव अपने मन में अनुभव करती।

सोना बुढ़िया की जोरदार प्रशंसिका थी। जब वह अपनी दादी की

अनुपस्थिति में लोगों से बात करती तो वह अक्सर ये ही शब्द इस्तेमाल करती, गो कि जरा शर्माते शर्माते।

अपने बेटों के लिए बुढ़िया का प्रेम बिलकुल बदल गया था। वे जब छोटे छोटे थे तो बिल्ली के बच्चों की तरह उन्हें उसने पाला था। तब वह यही सोचा करती कि वे जल्दी से बड़े होकर उसकी तकलीफों और मुसीबतों को बँटा लेंगे। फिर बच्चे बड़े हुए—रीछों की तरह मजबूत और गिद्धों की तरह सतर्क। वे उसकी बातें न समझते इसलिए उसे अपने मन ही मन में उन्हें प्यार करना पड़ता, शान्ति के साथ थोड़ी उदासी के साथ, और उसे हरदम यही डर बना रहता कि कहीं वे उसके लिए बिलकुल अजनबी न बन जायँ और वह उन्हें ज़रा भी समझ न पाये। जैसे जैसे सब लड़के बड़े होने लगे वैसे वैसे परिस्थिति विषम होती गयी और उसके स्वभाव में भी एक दृढ़ता आ गयी। वे कभी अपनी माँ की पर्वाह करते न जान पड़ते और उसे लगता कि वह भी कभी कभी उनसे घृणा करती है। लेकिन जो हो उसे अब अपने लड़कों के प्यार की जरूरत और भी ज्यादा थी। इसलिए वह कमज़ोर हो गयी और बहुत जल्दी आवेश से भर उठती। अपने लड़कों के एक शब्द या संकेत से उसका हृदय द्रवित हो जाता। उसने हमेशा अपने को उनसे बँधा हुआ अनुभव किया था लेकिन अब उनके चेहरों का रंग देख देखकर ही वह अपने दिन न काटती।

उनकी निजी भावनाओं का महत्त्व अब अधिक न था। वह क्या अब उन्हें नहीं प्यार करती? क्या वह उनसे नफरत करती है? नहीं हरगिज नहीं, बात बस इतनी-सी है कि वह अब उन्हें एक भिन्न दृष्टिकोण से देखती है। जब वे उसे जापानी राक्षसों की कहानियाँ सुनाते तो उसका हृदय गर्व से भर उठता। उसे यह सोचकर सन्तोष मिलता कि अपने लड़कों को बड़ा करने के लिए उसने जो जो तकलीफें उठायीं सब अकारथ नहीं गयीं।

उसकी बहुओं का बर्ताव उसकी ओर अधिक मैत्रीपूर्ण हो गया। उनकी दर्द उठानेवाली स्मृतियों और स्वर्णिम भविष्य की आशाओं ने

उन्हें एकता की डोर में बाँध दिया और उनके परस्पर सम्बन्धों में सामंजस्य उत्पन्न कर दिया। अकेले होने पर वे उसी विषय पर बात करतीं। छोटी छोटी सी बातों पर होनेवाले उनके पहले के झगड़े खत्म हो गये और परस्पर विचारसाम्य के फलस्वरूप उनके बीच एक नये प्रेम का उदय हुआ। उनके परिवार में ऐसी एकता और ऐसा प्रेम पहले कभी नहीं देखा गया था, साथ ही उनका सोचने का ढङ्ग भी अब बिलकुल बदल गया था। उन्होंने इस बात को नहीं समझा कि इसका कारण वह बुढ़िया ही थी।

लड़के बड़ी अजीब ख़बर लेकर लौटे। कोई उससे बात करना चाहता है। जरूर इसका कारण बुढ़िया का गाँव-गाँव फिरना होगा। युवती सोना तनिक चिन्तित भाव से अपनी दादी का हाथ थामे हुए थी। दादी ने उसे ढाढ़स बँधाया।

'बेटी घबरा मत। जापानी राक्षसों से अधिक दुःख मुझे अब भला कौन पहुँचा सकता है? मुझे तो बड़ी से बड़ी तकलीफें दी जा चुकी हैं। मुझे तो नरक जाने तक में डर नहीं लगता, तो फिर अब डरने को रहा क्या?'

बड़ी बहू ने गुस्से के साथ कहा—उन्हें हमसे क्या काम हो सकता है? क्या हमारे बोलने पर भी अब रोक लगेगी? हम चीनियों के विरोधी नहीं, जापानियों के विरोधी हैं। तो आखिर उन्हें हमसे क्या काम है?

लेकिन वे बुढ़िया से आख़िर मिलना क्यों चाहते हैं? उसके बेटे की समझ में बात कुछ आयी नहीं। उसने कहा कि असोसियेशन से कोई आदमी आया था और उससे पूछ रहा था कि बुढ़िया उसकी माँ है या नहीं। इसके बाद उसने हम लोगों का पता लिख लिया। उसने कहा मेरी समझ में बात आती नहीं, लेकिन मुझे यकीन है कि कोई गड़बड़ न होगी। लेकिन जो भी हो ख़बर चिन्ता पैदा करनेवाली तो थी ही। ज़िन्दगी में और तो कभी बाहर से मिलनेवाला आया नहीं लेकिन उसने इसके पीछे न तो अपनी नींद गँवायी और न अपने को ज्यादा परेशान ही होने दिया।

दूसरे दिन दो औरतें आयीं। उनमें से एक दादी के समान पहनावा पहने थी और दूसरी वर्दी में थी और उसके बाल अँग्रेजी ढङ्ग पर कटे हुए थे।

देखने में दोनों ही कमउम्र लगती थीं। बुढ़िया दादी बिला तकल्लुफ उन्हें घर के अन्दर ले गयी। फिर उन्होंने बातचीत करना शुरू किया।

'अरे बूढ़ी माँ, तुम तो मुझको नहीं जानतीं लेकिन मैं तो तुम्हें बहुत दिनों से जानती हूँ। मैंने दो बार तुम्हारा भाषण सुना है।'

'भाषण!' वह इस शब्द को नहीं समझ सकी और उनकी ओर सन्देहभरी निगाहों से देखती रही।

'तुम्हारा भाषण सुनकर तो मैं अपने आँसू रोक ही नहीं सकी। बूढ़ी माँ, तुम जापानियों के साथ रह चुकी हो, इसलिए जो कुछ तुमने बताया होगा, वह सब तुमने अपनी आँखों से देखा होगा।'

बुढ़िया के चेहरे पर पहले से अधिक मैत्री का भाव दिखाई पड़ने लगा। उसने सोचा, अच्छा तो ये लोग ख़बरें जानने आये हैं।

फिर उसने अपनी कथा आरम्भ की और धाराप्रवाह बोलती गयी।

उन्होंने बहुत देर तक धीरज के साथ सुना फिर बाधा दी, 'बूढ़ी माँ, हमारा हृदय हर प्रकार से तुम्हारे साथ है। हम भी दिन रात जापानी राक्षसों से नफ़रत करते रहते हैं। हम हरदम इसी बात की कोशिश करते हैं कि हमारी चीनी जनता का प्रतिशोध लेने के लिए अधिक से अधिक लोग सैनिक का वेश धारण करें। लेकिन हम तुम्हारी तरह बोल नहीं पातीं। तुम भी आओ, हमारे महिला संघ में भरती हो जाओ। हमारा उद्देश्य इन्हीं बातों को औरों को बताना और जापानी राक्षसों के ख़िलाफ़ लड़ाई में मदद देना है।'

बुढ़िया ने उन्हें अपनी बात भी नहीं पूरी करने दी और अपनी पौत्री को आवाज दी, 'सोना, ये लोग मुझे अपने महिला संघ में लेने के लिए आये हैं। तुम्हारा क्या ख्याल है?' लेकिन उसने उत्तर की प्रतीक्षा न की और अपने अतिथियों की ओर मुड़ी, 'मुझे तो इन सब बातों की

कोई जानकारी नहीं है, लेकिन अगर तुम लोग कहोगी तो शामिल हो जाऊँगी, उसमें बात ही क्या है। यह कोई धोखे का खेल तो है नहीं। मेरे दो लड़के छापेमारों के दल में हैं। तीसरा किसान सभा में है। तुम्हारे महिला संघ में शामिल होने में कोई बुराई नहीं है। उसमें मेरा कोई नुकसान न होगा। लेकिन मेरी सोना बेटी को तुम लोग अपने में शामिल करो तभी मैं आऊँगी तुम्हारे साथ।' उन्होंने फौरन महिला संघ में आने के लिए सोना का स्वागत किया और बहुओं से भी शामिल होने के लिए कहा।

बुढ़िया के सदस्य बन जाने के बाद महिला संघ बड़ी तेजी से आगे बढ़ा। वह घूम घूमकर नये सदस्य बनाने लगी। औरतें जब उसे महिला संघ में देखतीं तो तुरन्त, बिना किसी हिचकिचाहट के सदस्य बन जातीं। संघ जनता के फायदे के बहुत से काम करने लगा।

और बुढ़िया प्रतिदिन यौवन-सा प्राप्त करती जान पड़ने लगी—भावनाओं और स्वास्थ्य दोनों ही की दृष्टि से।

एक दिन उन्होंने तय किया कि छापेमारों की पिछले तीन महीनों की जीतों की खुशी मनाने के लिए स्त्रियों की एक बड़ी सभा बुलायी जाय। उन्होंने उसको महिला दिवस के रूप में मनाने का निश्चय किया और आसपास के गाँवों की स्त्रियों की एक संयुक्त सभा बुलायी गयी। उस दिन बुढ़िया एक दर्जन लड़कियों और स्त्रियों को साथ लेकर सभा में गयी। उन्होंने अपने बच्चे साथ में ले लिये—कुछ ने गोद में, कुछ ने उँगली पकड़ाकर। लेकिन उनकी बातों का केन्द्र बच्चे न थे। वे अपने काम और अपनी जिम्मेदारियों के बारे में बातें कर रही थीं। बहुतों के पैर अभी तक बँधे हुए थे, लेकिन भीड़ के साथ चलने के कारण वे अपनी थकान भूल गयीं।

लोग पहले ही से सभास्थल पर पहुँच चुके थे। बुढ़िया के बेटे भी वहीं पर थे। बहुत से जान-पहचानवालों ने दूर ही से उसका अभिवादन किया। उसके मन में एक नया भाव उठा और उसे कुछ अस्थिर-सा कर गया। इस नये भाव में कुछ अंश लजीलेपन का था और कुछ गर्व

का। लेकिन कुछ देर बाद जब लोगों से बात करती हुई वह इधर-उधर घूमने लगी तो वह भाव उसके मन से निकल गया।

भीड़ जोरों के साथ बढ़ रही थी। बुढ़िया प्रसन्नता से भर उठी। उसने सोचा, 'अच्छा! तो हमारे इतने समर्थक हैं!'

सभा शुरू हुई। कोई भाषण दे रहा था। बुढ़िया गौर से सुनने लगी। उसे भाषण बहुत अच्छा लगा—उसमें एक शब्द व्यर्थ का न था। कौन होगा जो उससे प्रभावित न हो। कौन है जो अपने देश की सेवा न करना चाहे। फिर उन लोगों ने उसे मंच पर बुलाया।

वह बहुत घबरा रही थी, लेकिन उसमें साहस आ गया। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कुछ कुछ लड़खड़ाती हुई वह मंच की ओर बढ़ी। सब से ऊपर खड़े होकर उसने देखा कि नीचे आदमियों के सिरों का एक समुद्र-सा दूर दूर तक लहरें मार रहा था, और लोगों के चेहरे उसकी ओर मुड़े हुए थे। वह सकपका गयी—उसकी समझ ही में न आया कि क्या कहे। फिर उसने अपनी ही कहानी से शुरू किया—'मुझ बुढ़िया का सतीत्व जापानी सैनिकों ने छीना। ये देखो...उसने अपनी बाहें ऊपर को चढ़ा लीं। उसने जनता की ओर से संवेदना की एक लहर अपनी ओर आते हुए सुनी। 'तुम घबरा गये—इतने ही से।' फिर बिना लोक-लाज का ख्याल किये और बिना यह सोचे कि अपनी बात कहने में मुझे क्या तकलीफ होगी या मेरी बात सुनकर औरों को क्या तकलीफ होगी, उसने बयान करना शुरू किया कि कितनी बेरहमी से जापानियों ने उसके साथ बर्ताव किया था। उसने अपने चारों तरफ के लोगों के चेहरे देखे जो उसे बहुत उदास लगे, फिर वह गुस्से से उबल पड़ी: मुझ पर तरस न खाओ, तरस खाओ अपने ऊपर। अपनी हिफाजत करो। आज तुम मुझ पर तरस खाते हो। लेकिन अगर तुम राक्षसों का मुकाबला करने के लिए नहीं उठ खड़े होते तो खुदा न करे, मैं नहीं चाहती कि तुम पर वही बीते जो मुझ पर बीती। कुछ भी हो मैं तो आखिर बुड्ढी हूँ। मुझे बहुत दिन तकलीफ नहीं बर्दाश्त करनी है, मैं तो थोड़े दिन की मेहमान हूँ। लेकिन जब मैं तुम्हें देखती हूँ—अभी

तुम कितने नौउम्र हो, तुम्हे जीना चाहिए। जिन्दगी के मजे क्या हैं, अभी तुम नहीं जानते। क्या तुम मुझसे यह कह सकते हो कि तुम सिर्फ तकलीफें उठाने या जापानियों के हाथ अपमानित होने के लिए ही पैदा हुए हो ?

हजारों पीड़ित आवाज़ों ने उसकी बात को दुहराया, 'हम जीना चाहते हैं। हम अपमानित होकर नहीं जियेंगे।'

उसने इन हज़ारों आवाजों के दर्द और तकलीफ को महसूस किया। उसके अन्दर सिर्फ एक इच्छा रह गयी कि वह अपने को इन लोगों के सुख के लिए बलिदान कर दे। उसने फिर जोर से चिल्लाकर कहा :

'मैं तुम सबको प्यार करती हूँ अपने बेटों की तरह। मैं तुम्हारे लिए मरने को तैयार हूँ लेकिन जापानी सिर्फ मुझे नहीं चाहते, वे तुम सबको चाहते हैं। वे हमारे हजारों लाखों आदमियों के खून के प्यासे हैं। मैं अगर एक न होकर दस हजार भी होती तो भी मैं तुम्हारी हिफाजत न कर सकती। तुम्हें अपनी हिफाजत आप करनी होगी। अगर तुम जिन्दा रहना चाहते हो तो तुम्हीं को उसकी सूरत निकालनी होगी। एक वक्त ऐसा भी था जब मैं अपने बेटों को अपनी नजर से ओझल भी न कर सकती थी। आज वे सब छापेमारों के दल में हैं। हो सकता है कि एक दिन वे मारे भी जायँ लेकिन अगर वे छापेमार न बनते तो शायद और भी जल्दी मारे जाते। पर अगर तुम जापानियों को मार भगाने के लिए जिन्दा रहो जिसमें हम सभी सुख से जीवन बिता सकें तो मुझे अपने बेटों की कुर्बानी मंजूर है। अगर मेरा कोई बेटा मारा जाता है तो मैं उसे याद रक्खूँगी, तुम सब उसे याद रक्खोगे क्योंकि उसने हम सबके लिए अपनी जान दी होगी।'

उसके शब्द पूर में आयी हुई नदी के पानी के समान उबलते हुए बह चले और उसकी समझ ही में न आया कि वह अपने को रोके तो कैसे ! लेकिन उसकी भावना के उबार ने उसे अशक्त सा कर दिया था—वह ठीक से खड़ी न हो पाती थी। उसके पैर डगमग होते थे, उसकी

आवाज भारी हो गयी थी और अब वह जोर से न बोल पाती थी। जनता से उठनेवाला तुमुल शोर रुकता ही न था—वे और भी कुछ सुनना चाहते थे।

शब्द की तरंगों के साथ वह विशाल जनसागर जब सिर हिलाता तब ऐसा जान पड़ता मानों उसमें ज्वार आ गया हो। बुढ़िया ने अपनी सारी शक्ति बटोरकर जोर से चिल्लाते हुए कहा—'हम अन्त तक लड़ेंगे।' उसके ये शब्द तट से टकराती हुई समुद्र की लहरों के समान जनता के तुमुल गर्जन में प्रतिध्वनित हुए।

वह अपने को सहारा देनेवाले कंधों पर थकी हुई सी एकदम झुक गयी और उसने मंच के नीचे दूर दूर तक फैली हुई उद्वेलित जनता को देखा। उस क्षण उसे अपनी जनता की महत्ता का अनुभव हुआ। उसने धीरे धीरे अपनी दृष्टि उनके चेहरों पर से अनन्त नीलाकाश की ओर उठायी। उसने सभी जराजीर्ण वस्तुओं के ध्वंस और एक नये संसार की ज्योति के उदय को देखा। उसका दृष्टिपथ आँसुओं से धुँधला हो रहा था लेकिन तो भी उसके नये विश्वास का आलोक सतत बढ़ता जा रहा था।

अलेक्जैंडर कुप्रिन

अलेकजैंडर इवानोविच कुप्रिन। जन्म १८७०, मृत्यु अगस्त १९३८। मास्को के कडेट स्कूल में शिक्षा पायी। १८९० में फौज में दाखिल हुआ। १८९७ में फौज से इस्तीफा दिया। १८९५ में उसका पहला सफल उपन्यास 'द डुएल' प्रकाशित हुआ। उसके पहले फौजी जीवन के बारे में उसने कई कहानियाँ लिखी थीं। 'द डुएल' में उसने पश्चिमी मोर्चे की फौजी जिन्दगी का यथार्थवादी चित्र खींचा है और उग्र-पंथियों में उसकी लोकप्रियता बढ़ने का कारण यही है कि उसने फौज की व्यवस्था आदि पर प्रहार किया।

कुप्रिन मूलतः क्रान्ति के पहले का साहित्यकार है, क्रांति के बाद उसने बहुत थोड़ा लिखा है। इस काल की रचनाओं में उसका करुण लघु उपन्यास 'जीनेट' है जिसका मुख्य चरित्र रूस से भागकर पेरिस में बसनेवाला एक व्यक्ति है।

क्रान्ति में कुप्रिन बोलशेविकों का विरोधी था और क्रान्ति-विरोधी सेनाओं की हार के बाद रूस से चला गया। सन् १९३८ में वह सोवियत रूस वापस आया। जिस प्रकार उसके तमाम क्रान्तिविरोधी अतीत को एक तरह से भूलकर उसके देशवासियों ने उसे स्नेह और मान दिया, उसने उसको कितना

प्रभावित किया, यह तेलेशोफ़ नामके एक अत्यन्त वृद्ध सोवियत लेखक ने अपनी साहित्यिक संस्मरणों की किताब 'ए राइटर रिमेम्बर्स' में बतलाया है। वह एक अपूर्व चीज़ है।

अंग्रेजी में उसकी पुस्तकों के जो अनुवाद मिलते हैं, उनमें से कुछ ये हैं : द ब्रेसलेट आफ गार्नेट्स (१९११), साशा (१९२०), द रिवर आफ लाइफ (१९१६) ए स्लाव सोल (१९१६) यामा द पिट (जिसका अनुवाद हिन्दी में 'गाड़ीवालों का कटरा' नाम से हुआ है), द कावर्ड, द कडेट्स, द इनटेरोगेशन, द नाइटवाच, डिलिरियम, गैंब्रियस, द इनसक्ट, द क्लाउन, मोलॉक, कैप्टेन रिबनिकोफ, द स्वाम्प (जिसका अनुवाद आपके सामने है) आदि।

दलदल

वह गरमी की शाम धीमे-धीमे घिरती आ रही थी; जंगल विश्राम करने जा रहा था। एक भावपूर्ण शान्ति चारों ओर विराज रही थी। चीड़ के दरख्तों की चोटियाँ अब तक आखिरी रोशनी के हलके गुलाबी रङ्ग से रँगी हुई थीं; मगर नीचे सब कुछ अँधेरा और नम हो गया था। गोंद की गरम और खुश्क बू मद्धिम पड़ गयी थी, और उसकी जगह धुएँ की भारी गंध ने ले ली थी, जो कि किसी दूर की जंगल की आग से बहकर आ रही थी। जल्दी-जल्दी, चुपके-चुपके, दक्षिणी प्रदेश की रात ज़मीन पर छा गयी। सूरज डूबने के साथ चिड़ियों ने अपना गाना बन्द कर दिया, सिर्फ कठफुड़वे की ऊँघती हुई, काहिल आवाज अब तक झाड़ियों में गूँज रही थी।

ज्याकीन, खेत की पैमाइश करनेवाला (अमीन) और निकोलाई निकोलाईविच, विद्यार्थी जो एक छोटी-सी जागीर की मालकिन मदाम सरडुकोव का लड़का था, दोनों अपने काम पर से लौट रहे थे। सरडुकोवा (मदाम सरडुकोव का निवास-स्थान) जाने के लिए देर भी बहुत हो गयी थी और दूरी भी बहुत थी, इसलिए उन्होंने रात जंगल में चौकीदार स्टीपान के यहाँ काटने का इरादा किया। पेड़ों के बीच वह सँकरा रास्ता इधर-उधर कन्नियाँ काटता हुआ निकल रहा था। यहाँ तक कि दो कदम आगे का हिस्सा आँख से ओझल रहता था। अमीन, जो कि लंबा और सींक सा था, झुका हुआ-सा, सिर नीचे को झुकाये, लंबे रास्ते तय करने-वाले आदमी के ढंग पर झूमता हुआ चल रहा था। थलथल, छोटे पैरों

चाला नाटा विद्यार्थी मुश्किल से उसके साथ हो पाता था; उसकी सफेद टोपी गर्दन के पिछले हिस्से पर आ रही थी; उसके लाल बिखरे हुए बाल माथे पर गिर रहे थे; उसका एक शीशेवाला चश्मा टेढ़ा होकर उसकी भीगी नाक पर बैठा हुआ था। उसके पैर कभी पिछले साल की पत्तियों की क़ालीन पर बिछलते और कभी रास्ते की ओर निकले हुए ठूँठों से टकराते। अमीन उसकी इस परीशानी को देख रहा था, लेकिन वह अपनी चाल कम न करता था। वह थका हुआ, नाराज़ और भूखा था। इसलिए उस छात्र की परीशानियाँ उसे एक खास तरह का आनन्द पहुँचा रही थीं जो डाह से पैदा होता है।

उर्याकिन को मदाम सरडुकोव ने जंगल के उन उजाड़ टुकड़ों की पैमाइश करने के लिए लगाया था, जो कि उनके थे, जिन्हें जानवरों ने रौंद डाला था, और जिनके पेड़ किसानों ने काट लिये थे। उनके लड़के, निकोलाई निकोलाईविच ने खुद अपनी खुशी से उसे मदद पहुँचाने का इरादा ज़ाहिर किया था। सहकारी के रूप में वह नवयुवक एकाग्रचित्त और मेहनती था, और उसकी प्रकृति ऐसी थी कि लोग आसानी से उसके मित्र बन जाते थे—तेज़, मस्त, बेलाग बात कहनेवाला और उदार, यद्यपि अब भी उसमें कुछ बचपने का शेष था, जो कि उसकी अत्यधिक जल्दबाज़ी और उत्साह में झलक जाता था। अमीन अधेड़ आदमी था, अकेला, कठोर और शक्की। ज़िले भर में वह शराबी की हैसियत से जाना जाता था और परिणामवश काम पाने में उसे विशेष कठिनाई होती थी, और काम मिल जाने पर पैसे कम मिलते थे।

दिन-भर तो वह नौजवान सरडुकोव के संग दोस्ती दिखलाता लेकिन रात के समय, दिन-भर की लंबी दौड़ से थका हुआ और चिल्लाने से तंग, वह बहुत चिड़चिड़ा हो जाता था। और उस वक्त उसे ऐसा मालूम होता था कि इस नौजवान छात्र की काम में दिलचस्पी, और किसानों के घरों पर उनसे बातचीत, सब कुछ केवल बहाना है, और असल बात यह है, कि उसकी मा ने उसे मेरे संग इस गुप्त आदेश से लगा दिया है कि वह देखे कि कहीं काम के समय मैं शराब तो नहीं

पीता हूँ! साथ ही ज्याकिन को विद्यार्थी से जलन इसलिए और भी होती थी कि वह सात दिन ही में पैमाइश संबंधी तमाम बातें समझने लग गया था जब कि खुद मियां ज्याकिन तीन बार फेल हुए थे! निकोलाई निकोलाईविच का असंयत बातूनीपन उस बुड्ढे में खीझ पैदा करता था, और वैसी ही खीझ पैदा करता था उस विद्यार्थी का ताज़ा पुष्ट यौवन, उसकी सफ़ाई-सुथराई, उसकी विनीत सहृदयता। लेकिन सबसे ज़्यादा तकलीफ़ ज्याकिन को अपने उदास बुढ़ापे, अपने उजड्डपन, अपने कुचले हुए दिल, और अपनी पुरुषार्थहीन अन्यायपूर्ण ईर्ष्या से ही होती थी।

दिन के काम का खात्मा क़रीब आने के साथ साथ अमीन और भी उजड्ड और झगड़ालू हो जाता था। वह निकोलाई निकोलाईविच की हर ग़लती को तीखेपन के साथ बढ़ाकर कहता और उसे क़दम-क़दम पर टोकता।

लेकिन विद्यार्थी के पास युवकोचित उत्साह और अपनी मोहक प्रकृति का ऐसा अक्षय भण्डार था कि उसे कोई बात लगती ही न थी। अपनी ग़लतियों के लिए वह ऐसी तत्परता से माफ़ी माँग लेता था कि वह दिल में खुब जाती थी। ज्याकिन की तमाम डाँट फटकार का जवाब वह एक ऐसी मुक्त हँसी से देता था, जो बड़ी देर तक पेड़ों के बीच गूँजती रहती थी। अमीन के ऊपर वह सवालों और दिल्लगियों की झड़ी लगा देता था, मानो वह उसके उदास मन को सच ही बिलकुल ठीक ठीक समझ पाता हो—ठीक उसी खुशदिली, बेढङ्गी मस्त खुशदिली के साथ जिससे कोई कुत्ते का खिलन्दड़ी पिल्ला किसी बुड्ढे कुत्ते को चिढ़ाता है।

अमीन चुपचाप आँखें नीची किये चल रहा था। निकोलाई निकोलाईविच उसकी बगल में रहने की कोशिश करता था, लेकिन चूँकि वह अक्सर पेड़ों से टकराता और ठूँठों से ठोकर खाता था, इसलिए वह पीछे छूट जाता और अपने साथी को पकड़ने के लिए उसे दौड़ना पड़ता। हाँफते हुए भी वह ऊँचे स्वर में जल्दी जल्दी सजीव

भाव-भंगिमा और अप्रत्याशित शब्दावली का प्रयोग करते हुए बोल रहा था। उसकी आवाज सोते हुए जङ्गल में गूँज रही थी।

उसने अपनी आवाज को एक पैना स्वर देने की चेष्टा की करते हुए और अपने हाथ को प्रभावोत्पादक ढंग से वक्ष पर रखते हुए कहा—इगोर इवानोविच, मैं ज्यादा दिन देहातों में नहीं रहा हूँ और मैं इसे मानता हूँ, तुम्हारी बात को पूरी तरह से मानता हूँ कि मैं देहात को नहीं जानता, लेकिन अब तक मैंने जो भी देखा है उसमें बहुत कुछ इतना मोहक गहरा और सुन्दर है...हाँ, हाँ, तुम यह कहोगे कि मैं नौजवान हूँ और मेरी अक़्ल अभी कच्ची है, तुम यह कह सकते हो लेकिन एक संतुलित और व्यावहारिक बुद्धिवाले आदमी की दृष्टि से मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों की जिन्दगी को दार्शनिक दृष्टिकोण से देखो...

अमीन ने अपनी नफ़रत जाहिर करते हुए कन्धा हिलाया, और एक अजब तकलीफदेह ढंग से मुस्कराया, लेकिन चुप रहा।

—ज़रा सोचो भी प्रिय इगोर इवानोविच, देहाती जीवन कितनी ऐतिहासिक पुरानी चीजों का इस्तेमाल करता है। हल, हेंगा, झोपड़ी, गाड़ी—किसने इनका आविष्कार किया? किसी ने नहीं। सारी मानव-जाति ने उसे पाया। दो हजार साल पहले भी ये चीजें वैसी ही थीं जैसी कि आज हैं। आज भी उसी तरह आदमी बोता है, हल चलाता है और मकान बनाता है। दो हजार साल पहले! लेकिन कब, किस शैतान के-से पुराने युग में इस दानवसम गृहस्थी का जन्म हुआ? प्रिय इगोर इवानोविच, हम इसके विषय में सोच सकने की हिम्मत भी नहीं रखते। यहाँ पर हमें अगणित, असंख्य शताब्दियों के अँधेरे इतिहास से ठोकर खानी पड़ती है। हम कुछ भी नहीं जानते। कब और कैसे आदमी ने पहली गाड़ी बनायी? इस रचनात्मक काम को करने में कितने सैकड़ों और हजारों बरस लगे, किसे मालूम है? विद्यार्थी एकाएक अपने पूरे जोर से जल्दी से टोपी आँख पर खींचते हुए चिल्ला पड़ा—मैं नहीं जानता, कोई भी नहीं जानता...तुम चाहे किसी भी चीज को देखो—कपड़े, बर्तन, चटाई के जूते, फावड़ा, चर्खा, चलनी,

चाहे जो ले लो—लेकिन उसे पाने के लिए पुश्त-दर-पुश्त लाखों आद-मियों को सिर धुनना पड़ा है। देहाती लोगों के पास अपनी दवाएँ हैं, अपनी कविता है, अपनी व्यावहारिक बुद्धि है, अपनी सुन्दर भाषा है। लेकिन उतना सब कुछ होते हुए भी, मैं चाहता हूँ कि आप इसे समझें कि लेखकों की दुनियाँ में एक नाम भी आनेवाली सदी के लिए नहीं जोड़ा गया, एक लेखक नहीं! मुमकिन है लड़ाई के जहाजों और दूरबीनों के मुक़ाबले में लेखक का कुछ महत्व न हो और वे तुच्छ हों; लेकिन, यक़ीन मानो मेरी दृष्टि में, 'अनाज से भूसी अलग करनेवाली मशीन का कहीं ज्यादा महत्व है! कहीं ज्यादा!'

'टुरुरु, टुलुलु', ज्याकीन ने एक खींची हुई आवाज में गाया और हाथ को यों घुमाया, मानो सितार के कान ऐंठ रहा हो। 'मशीन चल निकली! मैं हैरान हूँ कि तुम थकते नहीं, रोज-रोज वही पचड़ा।'

विद्यार्थी जल्दी-जल्दी बोल रहा था—नहीं, इगोर इवानोविच, तुम सुनो। इससे कोई बहस नहीं कि किसी किसान का जी किस बात में लगता है, न इससे ही बहस है कि किन चीजों पर उसकी नजर जाती है। उसके चारों तरफ हर जगह पुराना सत्य ही है, ऊपर से स्पष्ट और ज्ञानपूर्ण। हर चीज बाप-दादों के तजुर्बे से रोशन है, सब कुछ सादा, सीधा और व्यावहारिक है। और जो बात सबसे ज्यादा महत्त्व की है, वह यह कि उनके साथ मेहनत की सार्थकता का कोई भी सवाल नहीं है। मिसाल के लिए, एक डॉक्टर को लीजिए, जज को लीजिए, लेखक को लीजिए—इन पेशों में बहुत कुछ ऐसा है जिसका विरोध किया जा सकता है और जो छलनामय है। और भी मिसालें चाहते हों तो लीजिए एक मुदर्रिस को, एक जनरल को, एक नौकरशाह को, एक पादरी को...'

'कृपया धर्म को इसमें न घुसेड़िये'—ज्याकिन ने गम्भीरता-पूर्वक कहा।

'इगोर इवानोविच, तुम मेरी बात नहीं समझे।'—परडुकोव ने अधीरता के साथ हाथ हिलाते हुए कहा—अगर ऐसा ही है तो बैरिस्टर को लीजिए, कलाकार को लीजिए, संगीतज्ञ को लीजिए। मुझे इन नामी-

गरामी लोगों के खिलाफ कुछ नहीं कहना है। लेकिन हर किसी ने अपने आप से जिन्दगी में एक बार यह सवाल जरूर पूछा होगा कि क्या उसका पेशा मनुष्यता के लिए उतना जरूरी साबित हुआ जितना कि मालुम पड़ता था। एक किसान की जिन्दगी इतनी सीधी सादी और एक लकीर पर चलनेवाली है कि अचरज होता है। अगर तुम वसन्त के दिनों में बोओ, तो जाड़े में खाने को पाओगे। अगर तुम अपने घोड़े को खिलाओ तो बदले में वह तुम्हारी मदद करेगा। इससे ज्यादा निश्चित और स्पष्ट भला और क्या हो सकता है? यही व्यवहारकुशल आदमी अपनी सीधी सादी जिन्दगी से खींच लिया जाता है और गर्दन पकड़कर 'सभ्यता' के हाथों में फेंक दिया जाता है। 'फलाँ दफा के अनुसार और फलाँ संख्या के लिए कोर्ट ऑफ अपील की जाँच के अनुसार आइवन सिडोरोव नामक किसान ने जाती मिल्कियत के कानून के खिलाफ फलाँ जमीन के हिस्से पर हस्तक्षेप करके जो कि फलाँ हिस्से से गुजरती है, जुर्म किया है और इसके लिए उसे सजा दी जाती है।' वगैरह, वगैरह। आइवन सिडोरोव बहुत संगत जवाब देता है: योर हाइनेस, हमारे दादा और परदादा उस विलो के दरख्त के पास जमीन जोतते थे जिसका कि सिर्फ अब ठूँठ बच रहा है।' लेकिन उसी समय दृश्य-पट पर ज्याकीन आ जाता है।

ज्याकीन ताव के साथ टोंकता है—कृपया मुझे मत घसीटो।

'अच्छा अगर इसमें तुम्हारी तबीयत खुश होती हो तो फर्ज कर लो सरडुकोव नामक अमीन आ जाता है, और कहता है: अ ब नामक रेखा, जो कि आइवन सिडोरोव की मिल्कियत को, कंपास के अनुसार खतम करती है, दक्षिण-पूर्व चालीस डिग्री तीस मिनट के कोण पर चलती है—जिसका मतलब होता है कि आइवन सिडोरोव और उसके दादा और परदादा ने उस जमीन को जोता है जो कि उनकी नहीं थी। और आइवन सिडोरोव बड़े न्यायसंगत रूप में पीनल कोड की सारी दफाओं की रू से जेल में ठूँस दिया जाता है। लेकिन वह बेचारा आदमी कुछ भी नहीं समझता और सिर्फ आँखें मुलमुलाता बैठा रहता है। वह भला तुम्हारे कंपास और चालीस डिग्री को क्या समझे जब कि उसने मा के

दूध के साथ ही यह विश्वास भी पिया है कि जमीन किसी खास आदमी की नहीं है, बल्कि ईश्वर की है ?'

ज्याकीन ने उदासी के साथ पूछा—लेकिन भाई तुम ये सारी बातें मुझे क्यों सुना रहे हो ?

'या दूसरी बात लो—आइवन सिडोरोव फौज में खदेड़ दिया जाता है।' सरडुकोव अमीन की बात सुने बिना उत्साहपूर्वक कहता गया, 'अटेंशन ! आईज़ राइट, ड्रेस बाइ दि राइट ! अटेंशन !' सारजेंट उसे सिखलाता है। मैंने भी अपने देश की सेवा दो महीने की है और मैं यह मानने के लिए तैयार हूँ कि फौजी काम के लिए ये सारी बातें जरूरी हैं, लेकिन एक किसान के लिए तो ये सारी बातें फिजूल और बेहूदा हैं। तुम जो चाहे कहो, लेकिन तुम एक ऐसे आदमी से, जो एक सादी और सरल जिन्दगी से खींच लाया गया है, यह उम्मीद नहीं कर सकते कि वह तुम्हारी बात मान ले और यकीन कर ले कि ये सारी पेचीदगियाँ वाकई जरूरी हैं, और इनके पीछे सचमुच कोई सूझबूझ है। और वह तुम्हारी तरफ उसी तरह देखता है जैसे एक भेड़ा नये दरवाजे को।'

अमीन ने पूछा—क्या बात करने से अभी तुम्हारी तबियत नहीं भरी निकोलाई निकोलाईविच ? मैं तुमसे सच कहूँ, अब मेरी तबियत ऊब गयी है। तुम कुछ न कुछ बनने की कोशिश करते हो, लेकिन तुम जो कुछ भी कहते हो, उसमें कोई युक्ति या तर्क नहीं है। क्या तुम डान जुआन बनना चाहते हो ? इतनी सब बातें आखिर क्यों ? मैं वाकई कुछ नहीं समझ पाता।

विद्यार्थी एक झाड़ी का चक्कर लगाकर और जरा तेज चलकर फिर ज्याकीन के संग हो लिया।

'अगर तुम्हें याद है, तो तुमने आज सुबह कहा था कि किसान बेवकूफ' काहिल और जङ्गली होता है।' तुम्हारी बात में उसके प्रति नफरत थी और यही वजह है कि तुम उसके साथ उतना इन्साफ न कर सके, जितना कि तुम्हें करना चाहिए था। पर क्या तुम नहीं समझते प्रिय इगोर इवानविच, कि किसान एक दूसरी ही दुनिया में रहता है। कितनी

मुश्किल के साथ वह थोड़ासा ज्ञान पा सका है और इसी बीच हम आइंटसटाइन के रिलेटिविटी के सिद्धान्त पर बहस करने लगे हैं। तुम यह भला कैसे कह सकते हो कि किसान बेवकूफ है। तुम्हें तो उससे सिर्फ मौसम के बारे में, उसके घोड़े के बारे में, भूसी अलग करने के बारे में बात करनी चाहिए, क्योंकि वही वह जानता है, और उस मामले में उसका ज्ञान आश्चर्यजनक है। हर शब्द सादा, सार्थक, स्पष्ट और मौजूँ है'''लेकिन तुम उसी किसान से इसके बारे में एक कहानी सुनो कि वह कैसे शहर गया था और वहाँ कैसे थियेटर गया, और वहाँ पर एक बैरेल-आर्गन कैसे बज रहा था, और सराय में उसका वक्त कैसी अच्छी तरह कटा, तो देखोगे कि अपने को व्यक्त करने का उसके पास कैसा अभद्र ढंग है, और कैसी बुरी तरह बिगड़े हुए शब्दों का वह इस्तेमाल करता है! उसको सुनना मुसीबत है!" विद्यार्थी फूट पड़ा, शून्य का आश्रय लेते हुए और हाथों को बाहर की ओर फेंकते हुए मानो सारा जंगल उसके सुननेवालों से भरा हो : मैं यह मानता हूँ किसान गरीब है, रूखा और उजड्ड है, गन्दा है, लेकिन उसे आराम करने का वक्त दो। उसके ऊपर के निरन्तर तनाव ने उसे तोड़ दिया है। उसे खाने को दो, उसकी चिकित्सा करो, उसे पढ़ना-लिखना सिखाओ, लेकिन किसी भी हालत में उस पर अपनी थियरी आफ रिलेटिविटी का बोझ मत डालो। मुझे पक्का विश्वास है कि जब तक तुम लोगों को सजग नहीं बनाते, तुम्हारे कोर्ट आफ अपील के सारे फैसले, तुम्हारे कंपास, तुम्हारे दस्तावेज की तसदीक करनेवाले अफसर, तुम्हारी गुलामी सब उसके लिए, तुम्हारी थियरी आफ रिलेटिविटी की ही तरह अनर्गल बात होगी।

ज्यार्कीन यकायक रुक गया और विद्यार्थी की ओर मुखातिब हुआ।

'निकोलाई निकोलाईविच, मुझे तुमसे यह बकबक बन्द करने के लिए कहना ही पड़ेगा!' उसने जोर से एक बुड्ढी औरत की तरह खिन्न स्वर में कहा—तुमने इतनी बात की है कि अब मेरा धैर्य खतम हो चला। मैं अब और बिलकुल नहीं सुन सकता। और मैं सुनना चाहता भी नहीं। देखने-सुनने से तुम साधारण समझ के आदमी

मालूम पड़ते हो, फिर भी तुम इतनी आसान-सी बात नहीं समझ पाते। लेक्चर झाड़ने का मौका तुम्हें मकान पर और अपने दोस्तों के बीच मिल सकता है। मैं तुम्हारा दोस्त तो हूँ नहीं। तुम तुम हो, मैं मैं हूँ। और मैं ऐसी बातें नहीं चाहता; और मुझे पूरा हक है...'

निकोलाई निकोलाईविच ने ज्याकीन को अपने चश्मे के ऊपर से कनखियों से देखा। ज्याकीन का चेहरा अस्वाभाविक था—तंग, लंबा और आगे की ओर नुकीला, लेकिन बगल से चौड़ा और सपाट—कहना चाहिए, एक चेहरा जिसका आगा हो ही नहीं, और एक उदास दबी दबी सी नाक। और साफ हलकी गोधूलि में, विद्यार्थी ने इस चेहरे में कुछ इतनी ज्यादा ऊब और जिन्दगी के लिए कुछ इतनी नफरत लिखी देखी कि उसका हृदय करुणा से कराह उठा और उसने तुरंत बड़ी स्पष्टता से समझ लिया उस सारे ओछेपन को, उन सारी खामियों को और स्वभाव के उस अनावश्यक तीखेपन को जो उस बेचारे बदनसीब आदमी के निचाट एकाकी हृदय को भर रही थीं।

उसने मनाने के तौर पर मगर बात को अनजाने में ही और बिगाड़ते हुए कहा—खफा न हो इगोर इवानिच। मैं तुम्हें चोट नहीं पहुँचाना चाहता था। तुम बड़े चिड़चिड़े हो!

'चिड़चिड़े, चिड़चिड़े!' ज्याकीन ने फिजूल ही द्वेष के स्वर में दुहराया—कोई वक्त था कि मैं चिड़चिड़ा था। मैं ऐसी बातें नहीं पसंद करता, मैं तुमसे कहे देता हूँ...और भला मैं तुम्हारा साथी कैसे हो सकता हूँ? तुम शिक्षित हो, धनी हो, और मैं क्या हूँ? एक बुड्ढा, राख के रंग का, परछाईं की तरह धुँधला जीव, और कुछ नहीं।'

विद्यार्थी, जिसकी अब आंख खुल रही थी, चुप रहा। जब भी उसे रूखेपन या अन्याय का सामना करना पड़ता वह उदास हो जाता था। वह पैमाइश करनेवाले से पीछे रह गया था और चुपचाप उसकी पीठ देखता हुआ चल रहा था। और यहाँ तक कि उस आदमी की झुकी हुई, तंग और अकड़ी पीठ भी, एक तरह से उसकी बेमतलब और निकम्मी

जिन्दगी का ही पता दे रही थी, नियति द्वारा लगाये गये कठोर घूँसे, और उसका जिद्दी खोटा अहं... ।

जंगल में काफी अँधेरा हो गया, लेकिन वे आँखें जो रोशनी के अँधेरे में बदल जाने की अभ्यस्त थीं, वे अब भी दरख्तों के अस्पष्ट और कल्पित रूप को पहचान सकती थीं । न तो एक आवाज सुन पड़ी, और न कोई गति ही ; हवा घास की मीठी खुशबू से भारी थी जो दूर के खेतों से आ रही थी ।

रास्ता ढालुवाँ था । एक मोड़ पर, सीलन की-सी ठंढक ने, जो मानो जमीन के अन्दर के किसी तहखाने से आ रही हो, विद्यार्थी के मुँह पर तमाचा मारा ।

ज्याकीन ने बिना घूमे हुए कहा—सँभलकर चलो, यहाँ पर एक दलदल है ।

निकोलाई निकोलाईविच ने तब ख्याल किया कि उसके पैरों की कोई आवाज नहीं आ रही है, मानो वह किसी नरम गलीचे पर चल रहा हो । उसके दाहिनी और बाईं तरफ छोटी छोटी उलझी झाड़ियाँ थीं, जिनके चारो ओर फैली हुई हिलती हुई शाखों को पकड़कर कुहरे के सुफेद, बिखरे हुए बादल उड़ रहे थे । जंगल के बीच यकायक एक अजीब आवाज गूँज उठी ; खिंची हुई धीमी और अजब एक उदासी से भरी हुई आवाज मानो जमीन के अन्दर ही से आ रही हो । विद्यार्थी डरकर रुक गया ।

'यह क्या है ?'—उसने काँपती हुई आवाज में पूछा ।

'बिटर्न † की आवाज—ज्याकीन ने रूखेपन से जवाब दिया—हम लोगों को तेज चलना चाहिए, यहाँ पर एक बाँध है ।

अब कुछ नहीं दीख पड़ता था । दाहिनी और बाईं तरफ कुहरा, एक सफेद भारी पर्दे की तरह लटक रहा था । विद्यार्थी ने उसका नम और चिपचिपा स्पर्श अपने चेहरे पर अनुभव किया ।

---

† एक चिड़िया का नाम ।

उसके सामने एक काला हिलता हुआ धब्बा था—ज्याकीन की पीठ, ज्याकीन आगे-आगे चल रहा था। रास्ता दीख नहीं पड़ता था, लेकिन उसके दोनों तरफ के दलदल का पता लग जाता था, जिसमें से सड़ती हुई घास और नम कुकरमुत्तों की तेज बदबू आ रही थी। बाँध पैरों को नरम और गुदगुदा लग रहा था और हर कदम पर उसमें से कीचड़ बहने लगता था।

ज्याकिन रुका, सरद्धुकोव का मुँह उसकी पीठ से जा टकराया।

'होशियार रहो, फिसल जाओगे !'—ज्याकीन बड़बड़ाया—जब तक मैं चौकीदार को बुलाता हूँ तब तक अच्छा हो कि तुम रुके रहो। तुमने जरा गड़बड़ की और उस मनहूस दलदल में जा रहे !

उसने अपना हाथ मुँह से लगाया और खिंची हुई आवाज दी : स्टिपाऽऽन !

आवाज नरम कोहरे में उड़ रही थी और इसलिए धीमी और स्वरहीन मालूम पड़ी मानो दलदल की नम गैसों ने उसे भिगोकर भारी कर दिया हो।

'छि:, तुम यह भी नहीं जानते कहाँ को चलना चाहिए !'—ज्याकिन अपने दाँतों को कसकर दबाते हुए गुर्राया—मालूम होता है हमें पेट के बल घिसटकर चलना होगा। स्टिपाऽऽन ! वह फिर खिझी हुई आवाज में चिल्लाया।

'स्टिपान !'—विद्यार्थी ने फुर्ती से खोखली, धीमी, गहरी आवाज में पुकारा।

बारी-बारी से उन्होंने उसे बड़ी देर तक पुकारा और तब आखिरकार उन्हें कुछ दूरी पर कुहरे के बीच से होकर पीली रोशनी का एक बेशकल धब्बा दीख पड़ा। वह इन लोगों की तरफ आता नहीं मालूम होता था, बल्कि दाहने और बायें घूम रहा था।

'स्टिपान तुम हो क्या ?' ज्याकिन ने पुकारा। दूरी से एक दबी हुई आवाज आती मालूम पड़ी—गॉप, गॉप ! तुम हो क्या, इगोर इवानिच ?

रोशनी का वह धुँधला धब्बा कुहरे के बीच से पीला चमकता हुआ, पास आकर फैल गया, आलोकित जगह में एक विराट् परछाईं पड़ने लगी, अँधेरे में एक छोटा सा आदमी हाथ में टीन की लालटेन लिये निकल आया।

चौकीदार ने लालटेन ऊपर को उठाते हुए कहा—तो यह बात है। और वह तुम्हारे साथ कौन है? छोटे सरडुकोव तो नहीं?

'गुड ईवनिङ्ग निकोलाई निकोलाइविच। मेरा ख्याल है आप रात को रुकेंगे? मैं आपका स्वागत करता हूँ। मैं अचरज कर रहा था कि कौन हो सकता है जो मुझे बुला रहा है, लेकिन मैंने वक्त-ज़रूरत के लिए अपनी बन्दूक साथ ले ली थी।

लालटेन की पीली रोशनी के पड़ने से स्टिपान का चेहरा और भी स्पष्ट हो गया। वह घने सुन्दर बालों से घिरा हुआ था, घुँघराले और नर्म—दाढ़ी मूँछें और भवें। उसकी छोटी-छोटी नीली आँखें उस घने गुच्छे के भीतर से झाँक रही थीं, और उनके चारों तरफ छोटी-छोटी झुर्रियों की भँवरियाँ उसके चेहरे को एक अच्छे पर थके हुए मुस्कराते बच्चे की भंगिमा प्रदान कर रही थीं।

'हमें चलना चाहिए।' उसने कहा और घूमने के साथ कुहरे में विलीन हो गया। उसके लालटेन से निकलता हुआ रोशनी का बड़ा, पीला धब्बा जमीन पर सिहर रहा था, और रास्ते के कुछ हिस्से को आलोकित कर रहा था।

चौकीदार के पीछे पीछे जाते हुए ज्याकीन ने पूछा—अब तक काँप रहे हो, स्टिपान?

स्टिपान की आवाज ने दूर से जवाब दिया—हाँ, इगोर इवानिच, दिन में तो इतना बुरा नहीं रहता, लेकिन रात होते ही, कँपकँपी शुरू हो जाती है। लेकिन हम लोगों को इसकी आदत पड़ गयी है, इगोर इवानिच।'

'मेरिया की हालत कुछ अच्छी है क्या?'

'नहीं, मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है, नहीं। बीबी-बच्चे

सबकी हालत बहुत खराब है। बच्चा अब तक तो ठीक है, ईश्वर की कृपा से, लेकिन उसे भी यह रोग लग जायेगा जरूर, वक्त आने पर। और तुम्हारा छोटा धर्मपुत्र जिसे पिछले हफ्ते हम निकोल्स्की ले गये थे...उसे लेकर तीन हुए जिन्हें हम दफना चुके।...लाओ मैं तुम्हें रोशनी दिखला दूँ, इगोर इवानिच। यहाँ पर तुम्हें होशियारी से चलना चाहिए।'

निकोलाई निकोलाईविच ने देखा—चौकीदार की झोंपड़ी खूँटों पर बनी थी, जिससे कि फर्श और जमीन के दरमियान पाँच फुट की जगह छुटी हुई थी। दरवाजे तक पहुँचने के लिए कुछ टेढ़ी-मेढ़ी सीढ़ियाँ थीं। रास्ता दिखलाने के लिए स्टिपान ने लालटेन अपने सर से ऊपर उठायी, और विद्यार्थी ने, उसके करीब से गुज़रने पर देखा कि वह सर से पैर तक काँप रहा है और अपनी भूरी वर्दी के कॉलर में घुस जाना चाहता है।

खुले हुए दरवाजे में से एक गर्म, सड़ी हुई बदबू निकल रही थी जो कि एक किसान के मकान के लिए आम बात है, और जिसके संग पकाये गये चमड़े की खालों और सेंकी हुई रोटियों की खट्टी गंध मिली हुई थी। दरवाजे में सब से पहले ज्याकोन झुकते हुए घुसा।

'गुड ईवनिंग, मालकिन!'—उसने सरल भलमनसाहत के साथ स्टिपान की पत्नी का अभिनंदन किया।

खुले दमकले के पास खड़ी हुई एक लम्बी पतली-सी औरत ने उसकी तरफ जरा-सा मुड़कर, बिना उसे देखे, उदासी और शान्ति के साथ, अपने को नवा दिया और फिर अँगीठी में अपनी खोज-बीन में लग गयी। स्टिपान की झोंपड़ी बड़ी थी और गन्दी। वहाँ की ठण्डक और वीरानेपन ने उसे एक आदमी की उजड़ी हुई बस्ती की शकल दे दी थी। उन लकड़ी की दीवालों के रू-बरू, जो दरवाजे के सामने कोने में आकर मिलती थीं, एक तंग, लम्बी-सी बेंच, जो बैठने और लेटने के लिए यक-साँ तकलीफदेह थी, पड़ी हुई थी। बहुत-सी कालिख पुती हुई तसवीरें कोने में लटक रही थीं, और उनके दाहनी और बाईं तरफ, दीवाल से कुछ बहुत परिचित, सस्ती लकड़ी के ठप्पे की मूर्तियाँ लगी हुई

थीं।—जैसे 'आखरी नतीजा' जिसमें अनेकों हरे दैत्य और सफेद फरिश्ते दिखलाये गये थे, जिनके चेहरे भेड़ की तरह थे—'लाजरस और अमीर आदमी की कहानी', 'मानव जीवन की सीढ़ी' और 'रूसी आमोद प्रमोद।' इसके उल्टी तरफ कोने में एक समोवार रखा हुआ था जो कि झोंपड़ी का तिहाई हिस्सा घेरे हुए था। उसके ऊपर से दो बच्चों के सर दीख रहे थे, जिनके बाल इतने सुफेद और धूप से फीके थे जितने कि सिर्फ गाँव के बच्चों में देखने को मिलते हैं। पीछेवाली दीवाल के सहारे एक चौड़ा, दुहरा पलँग रक्खा हुआ था, जिस पर कि लाल छींट का परदा था। उसके ऊपर एक छोटी-सी दशवर्षीय लड़की बैठी हुई थी, और उसके पैर झूल रहे थे। वह एक चरचराते हुए पालने को झुला रही थी, और उसकी चमकती हुई बड़ी-बड़ी आँखें नये आनेवालों को डर के साथ घूर रही थीं।

कोने में तसवीरों के नीचे, एक बड़ी-सी नंगी मेज थी और उसके ऊपर छत से लगे हुए काँटे से एक अत्यन्त हीन-सा लंप लटक रहा था जिसकी चिमनी मैली थी। विद्यार्थी मेज के पास बैठ गया और उसी दम उसके ऊपर एक गहरी ग्लानि छा गयी; उसे लगा कि वह उस जगह घंटों से लाचार बेकारी की हालत में बैठा हुआ है। लंप से निकलती हुई माम की गंध ने उसके दिमाग में एक धुँधली बीती हुई स्मृति जगा दी। क्या यह सपना था या स्मृति? कब और कहाँ उसे यह मिली? उसे लगा वह एक नंगे, मेहराबनुमाँ गूँजते हुए कमरे में बैठा है जो देखने में बरामदा लगता है; एक लंप से मोम की तेज गंध आ रही थी; और दीवाल से, बूँद-बूँद करके, पानी आवाज करता हुआ अँगीठी की लोहे की पत्तर पर ढुलक रहा था, और सरडुकोव का हृदय निचाट उदासी की भावना से भर आया।

ज्याकीन ने पूछा—स्टिपान, हमारे लिए अँगीठी तो तैयार करो, और एक अंडा?

स्टिपान ने जल्दी से जवाब दिया—अभी लो, इगोर इवानिच, अभी लो।

अनिश्चितता की हालत में वह अपनी पत्नी की ओर घूमा—मेरिया, अँगीठी तो तैयार करो । ये महाशय जरा .....क्या पीना पसंद करेंगे ?

मेरिया ने नाराज होकर जवाब दिया—अच्छा, मैंने सुन लिया उन्होंने क्या कहा ।

वह रास्ते पर बढ़ गयी । ज्याकीन ने मूर्ति के सामने जाकर सारी अपवित्रता को अपने से अलग करते हुए अपने ऊपर सलीब का चिह्न बनाया और मेज के पास बैठ गया । स्टिपान उनसे कुछ दूर हट कर बैठ गया—दरवाजे के पासवाली बेंच के ठीक किनारे पर, जहाँ पर पानी की बाल्टी रक्खी थी ।

'और मैं अचरज कर रहा था कि यह कौन हो सकता है जो मुझे बुला रहा है ।' उसने खुशदिली के साथ कहना शुरू किया—कहीं यह हमारा जंगल का अफसर तो नहीं है ? मैंने सोचा । लेकिन उसे भला रात के वक्त कौन-सा काम हो सकता है ? अपना रास्ता भी पाने में उसे दिक्कत हुई होगी । निश्चय ही वह अजीब आदमी है । वह हम सब से सिपाहियों के ढंग के आचरण की उम्मीद करता है । उसे इसमें बड़ा मजा आता है । तुम अपनी बन्दूक लेकर जाओ और यों रिपोर्ट करो—योर हाइनेस, मेरे हल्के में सब कुछ ऐसा था जैसा कि जंगल में स्थित पर्नाटिन्स्की हाउस में होना चाहिए...लेकिन फिर भी वह आदमी इन्साफपसन्द है । यह बात तो है कि वह लड़कियों की आबरू जरूर खराब करता है, लेकिन हमको इस बात से कोई सरोकार नहीं है...

वह रुका । मेरिया का सस्वर अँगीठी में कोयला झोंकना सुन पड़ा, और अँगीठी के पास के बच्चों ने भारी साँस ली । पालने की अनुपम, एकरस चरचराहट जारी थी । बिस्तर पर वाली लड़की को सरन्गुलोव ने और गौर से देखा, और उसके उष्ण सौन्दर्य और उसके चेहरे के अनोखे भाव को देखकर चकित रह गया । उसके गाल फूले फूले और उसके अंग-प्रत्यङ्ग नरम और कोमल थे, सुन्दर पारदर्शक बाँहें मद्धी

के टुकड़े पर बनी चित्रकारी के समान। राफायेल † के प्रारंभिक चित्रों की स्त्रियों की तरह एक स्वप्निल भोले आश्चर्य से ताकती हुई वे बड़ी-बड़ी सुन्दर आँखें अस्वाभाविक रूप में चमक रही थीं।

'तुम्हारा नाम क्या है ?'—विद्यार्थी ने प्यार से पूछा।

लड़की ने चेहरा अपने हाथों से ढँक लिया और जल्दी से पर्दों के पीछे छुप गयी।

'बड़ी लजीली है।'—स्टिपान ने कहा—अरी पगली, तुझे डर काहे का है !' वह एक अजब अटपटे किन्तु सहृदय ढंग पर मुस्कराया जिससे उसका पूरा चेहरा उसकी दाढ़ी में खो गया, और उसकी शकल साही जैसी हो गयी। उसका नाम वारिया है। घबड़ा मत बावली, ये महाशय तुझे मारेंगे नहीं।—उसने लड़की को ढाढ़स बँधाते हुए कहा।

'क्या वह बीमार भी है ?'—निकोलाई निकोलाईविच ने पूछा।

'ओह !' स्टिपान ने कहा। उसके चेहरे पर के झाड़ी-सरीखे बाल अलग हो गये और एक बार फिर उसकी कोमल, थकी हुई आँखें बाहर की ओर एकटक निहारने लगीं। 'क्या तुमने यह पूछा कि यह लड़की बीमार है ? हाँ, हम सभी बीमार हैं,—अंगीठी, बीवी, बच्चे—हम सब। हमने तीसरे बच्चे को मंगल के दिन दफना दिया। जगह नम है, तुम जानते हो, यही खास वजह है। हमें कँपकँपी मालूम होती है, मालूम होती रहती है। और धीरे-धीरे अन्त आ जाता है।'

'इसके लिए तुम कुछ खाते क्यों नहीं ?'—विद्यार्थी ने सिर हिलाते हुए पूछा—मेरे संग आओ, मैं तुम्हें कुनैन दे दूँ।

'धन्यवाद, निकोलाई निकोलाईविच, ईश्वर तुम्हें इस भलमंसाहत का फल दे। हमने बहुत बार बहुत कुछ खाने की कोशिश की, लेकिन कुछ नतीजा नहीं होता।'—स्टिपान ने मायूसी से हाथ फेंकते हुए कहा—हम तीन को दफना चुके...दलदल की वजह से यहाँ पर बहुत नमी है, और हवा भारी है। और निश्चल।

---

† राफायेल—इटली का विश्व-विख्यात चित्रकार।

'तुम किसी और जगह क्यों नहीं चले जाते ?'

'किसी और जगह ?'—स्टिपान ने सवाल दुहराया। ऐसा लगता था कि उससे जो कुछ कहा जा रहा है उस पर ध्यान जमाने में उसे मिहनत पड़ रही है। हर लफ्ज पर उसे अपनी सुस्ती दूर करनी पड़ती थी। 'इसमें कोई शक नहीं, महाशय, कि किसी दूसरी जगह चले जाना अच्छा होगा, लेकिन फिर भी कोई न कोई तो यहाँ रहेगा ही। घर बड़ा है, और यहाँ पर बिना चौकीदार के उनका काम नहीं चल सकता। अगर हम नहीं, तो दूसरे रहेंगे। मेरे आने के पहले चौकीदार गब्रावशन यहाँ पर रहता था, गंभीर और आजाद प्रकृति का आदमी था। पहले उसके दो बच्चे गये, फिर बीबी और सब के बाद वह खुद। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता नज़र आता कि कोई कहां रहता है। स्वर्ग में हमारा पिता जो है, वह समझदार है; वह यह बहुत अच्छी तरह जानता है कि हमें क्या करना और कहाँ रहना चाहिए।'

कोहनी से दरवाजा खोलती और बन्द करती हुई, मेरिया अँगीठी लिये अन्दर आ गयी।

'क्या कहने हैं! वाह रे, यों बैठे हुए हैं नवाबों की तरह!' वह स्टिपान पर बरस पड़ी, 'इतनी देर में तुम कम से कम प्याले तो ठीक कर ही सकते थे!'

उसने गुस्से से समोवार को आवाज के साथ मेज पर धर दिया। उसका चेहरा जो कि समय से पहले बूढ़ा हो गया था, दुबला और फीका फीका था; उसके गालों पर नन्ही नन्ही झुर्रियों की जाली के नीचे दो अंगारे-से लाल दाग थे; उसकी आँखें अस्वाभाविक ढंग से चमकती थीं। उतने ही गुस्से के साथ उसने प्याले, तश्तरियाँ और डबल रोटी मेज पर फेंक दी।

सरड्कोव चा न पी सका। उसने उस दिन-भर जो कुछ देखा और सुना था, उससे वह घबरा और टूट-सा गया था। अमीन का अकारण तीखा द्वेष, स्टिपान का एक रहस्यमय निर्मम भाग्य के सम्मुख नत भाव, उसकी पत्नी का मूक क्रोध, दलदल के बुखार से बच्चों के

एक-एक करके मरने का दृश्य—सब मिलाकर एक दम घोंटनेवाली ग्लानि उसे अनुभव हो रही थी ; वह तीखी और घोर निराशापूर्ण ग्लानि जिसका अनुभव हमें या तो बीमार कुत्ते की समझदार आँखों को या बेवकूफ की रंजीदा निगाहों को देखने में होता है, या कि जब हम बेगुनाह मर्दों और औरतों द्वारा झेली गयी तकलीफों, सहे गये जुल्मों और यातनाओं के बारे में पढ़ते या सुनते हैं।

अमीन ने प्याले पर प्याले चा पी, मरभुखे की तरह रोटी खायी, बड़े बड़े कौर। खाते वक्त उसके गाल की हड्डियाँ जोरों के साथ हरकत कर रही थीं, उसकी भोथरी और उदासीन आँखें, एक जानवर की आँखों की तरह सामने किसी चीज़ पर लगी हुई थीं। बहुत कहने-सुनने पर पूरे परिवार की ओर से अकेले स्टिपान ने एक प्याला पीना मंजूर किया। वह उसे बहुत देर तक और बहुत सस्वर रूप में तश्तरी पर फू-फू करके और अपने शकर के टुकड़े को कुतरते हुए पीता रहा। जब वह खतम कर चुका तो उसने अपने ऊपर सलीब का चिह्न बनाया, प्याले को औंधा दिया और बाकी बची हुई शकर को सतर्कता के साथ एक डब्बे में रख दिया, जिस पर मक्खियों ने अनगिनत अण्डे दे रखे थे।

वक्त बहुत धीमे-धीमे और तकलीफ के साथ गोया घिसट रहा था। सरडुकोव सोच रहा था कि अभी और न जाने कितनी लम्बी और शिथिल संध्याएं उस झोंपड़े में बीतेंगी जो कि नम और ज़हरीले कुहरे के समुद्र में एक छोटे-से अकेले द्वीप की तरह उजाड़ था।

बुझती हुई अँगीठी ने एकाएक एक पतला, दर्दनाक सुर गुनगुनाना शुरू कर दिया—फैली हुई मायूसी और निराशा की प्रतिध्वनि। पालने ने चरमराना बंद कर दिया, सिर्फ जब-तब, बँधे समय के अंतर पर एक झींगुर अपना मनहूस, उबा देने वाला संगीत सुना रहा था। बिस्तर पर की लड़की ने अपने हाथ घुटनों के बीच डाल लिये और लैंप की रोशनी को विचार-मग्न होकर घूरती हुई तंद्रा-मग्न की तरह बैठी रही। उसकी बड़ी-बड़ी, अपार्थिव-सी आँखें और भी अधिक खुल गयीं, सिर

एक ओर को शिथिलता के मारे झुक गया, उस मुद्रा का भी अपना सौंदर्य था। वह इतने ध्यान से रोशनी को देखती हुई क्या सोच रही थी, क्या अनुभव कर रही थी ? बार-बार उसकी पतली-पतली नन्ही-नन्ही बाँहें थकी कमजोरी के कारण आगे को झूल जातीं, और ऐसे वक्त उसकी आँखें एक विचित्र, अकथ्य, सूक्ष्म, सजल और प्रतीक्षा-भरी मुस्कराहट से आलोकित हो जातीं मानो रात की चुप्पी और अँधेरी उसके लिए एक मीठी उम्मीद लिये हुए हों। एक क्षुब्ध कर देने वाला विचार उसके भीतर उठा, जिसमें अंधविश्वास का पुट भी मिला हुआ था। उसे सारा कुनबा बीमारी की एक रहस्यमय ताकत के पंजे में जकड़ा मालूम हुआ। लड़की की अस्वाभाविक रूप में चमकती हुई आँखों को देख कर उसे शक हुआ कि उसके लिए साधारण दैनिक जीवन है भी या नहीं। धीरे-धीरे दिन अपनी रोज की चिन्ताओं और शोरोगुल और थकान पैदा करनेवाली रोशनी के साथ आ जायगा, फिर शाम आयगी और लैंप की रोशनी पर आँखें गड़ाये हुए वह क्लांत अधीरता के साथ रात का इंतजार करती हुई बैठी रहेगी, और फिर एक रोज उसी असाध्य रोग का रक्तशोषक पिशाच, उसके छोटे-से कमजोर शरीर को चूसता हुआ, उसके नन्हे से दिमाग को अपनी गिरफ्त में ले लेगा और उसे एक भयंकर, शून्य, यातनापूर्ण, नशीले सपने की बर्फानी चादर में लपेट देगा...

बहुत दिन पहले सरदुकोव ने कहीं किसी प्रसिद्ध चित्रकार की बनायी हुई 'मलेरिया' शीर्षक तसवीर देखी थी। एक दलदल के किनारे, पानी के पास, जो कुई के फूलों से ढँका था, एक बच्ची लेटी हुई थी। वह नींद में बुरी तरह छटपटा रही थी और वहीं दलदल में से एक बड़ी खूँखार आँखोंवाली, प्रेत-सी औरत जिसके कपड़ों की परतें दलदल में विलीन सी होती जान पड़ती थीं, उदासीनतापूर्वक निकली और लड़की की ओर धीरे-धीरे बढ़ने लगी। सरदुकोव को एकाएक यह विस्मृत चित्र याद आ गया, और वह एक रहस्यमय भीति से जकड़ गया, मानो उसकी रीढ़ के नीचे-ऊपर किसीने एक ठंडी कूँची फेर दी हो।

कुरसी पर से उठते हुए, अमीन ने कहा—अमेरिका में कायदा है कि वे बैठे बैठे रहते हैं और फिर उठकर सोने चल देते हैं। मेरिया, तुम हमारे बिस्तर तो लगवाओगी?

सब लोग उठ खड़े हुए। उस लड़की ने अपना सिर हाथों में पकड़ लिया और बिस्तर पर बिथर गयी। उसने अपनी आँखें आधी मूँद लीं। तब उसके मुँह पर एक मुदित स्वप्निल मुस्कराहट खेल रही थी। मेरिया, जम्हाई और अंगड़ाइयाँ लेती हुई बाहर चली गयी और दो मुट्ठी सूखी घास ले आयी। उसके चेहरे का रुष्ट भाव जा चुका था, उसकी आँखें कोमल थीं, उनमें एक अजीब अधीर आतुरता चमक रही थी।

जब कि वह बेंचें खींच कर उन पर घास बिछा रही थी, तब निकोलाई निकोलाईविच देहलीज तक चला गया। उसके चारो तरफ सिवाय घने, भूरे, नम कुहरे को छोड़कर और कुछ न दीख पड़ता था, और जिन सीढ़ियों पर वह खड़ा था, वे समुन्दर में नाव की तरह हिलती-डुलती मालूम पड़ती थीं। जब वह फिर अन्दर गया तो उसके बाल, कपड़े और चेहरा सब दलदल के घने कुहरे से भिंदे हुए थे, ठंढे और भींगे।

विद्यार्थी और अमीन दोनों बेंच पर लेट गये। स्टिपान ने फर्श पर स्टोव के पास एक बिस्तर जमा लिया। फिर उसने लैंप बुता दिया और बहुत देर तक कोई प्रार्थना बुदबुदाता रहा। उसके बाद वह लेट रहा। मेरिया, नंगे पैर दबे पांव बिस्तर तक गयी। झोपड़ी पूर्ण नीरव हो गयी; सिर्फ झींगुर अपनी एकरस तन्द्रालस आवाजमें गा रहा था और मक्खियाँ भनभनाती हुई बार बार आ आकर खिड़की के शीशे से टकरा रही थीं।

थकान के बावजूद सरडुकोव न सो सका। वह आँखें खोले, चित पड़ा रहा, उन चित्र विचित्र ध्वनियों को सुनता हुआ जो अँधेरी और निद्राहीन रातों में भयानक रूप से घनी हो पड़ती हैं। अमीन फौरन अंटागफील हो गया और मुँह से सांस लेने लगा जो गले की किसी पतली झिल्ली को, गलल-गलल की आवाज के साथ तोड़ती हुई आती मालूम पड़ी। बिस्तर पर अपनी मा के साथ सोती हुई छोटी

लड़की ने कुछ अस्पष्ट शब्द बुदबुदाये ; समोवार पर सोये हुए लड़के जोर जोर से साँस ले रहे थे, मानो वे उस जलती हुयी, सड़ी गर्मी को अपने होंठों से हवा फेंक कर उड़ा देना चाहते हों। स्टिपान हर साँस के साथ कराहता था।

एक निंदासे बच्चे ने चिड़चिड़ेपन के साथ पुकारा, मा, थोड़ा पानी !

मेरिया, तुरत बिस्तर में से कूदकर बाहर आ गयी नंगे पैर थपथप करती हुई कमरों को पार करके पानी की बाल्टी तक गयी। विद्यार्थी ने पानी को लोहे की सुराही में गिरते सुना, और फिर गटागट हविस के साथ बच्चे को पानी पीते सुना जो साँस लेने भर के लिए बीच-बीच में रुक जाता था। फिर सब शान्त हो गया। अमीन के गले से खर्राटों की आवाज हमेशा एक-सी निकल रही थी, और बच्चों की साँस, धुआँ फेंकते हुए छोटे भाप के इञ्जन की तरह, जल्दी और तेजी से आ रही थी। सबसे बड़ी लड़की बिस्तर पर उठकर बैठ गयी ; उसने कुछ कहना चाहा, लेकिन उसके ओंठ शब्द न बना पाये ; उसके दाँत बुरी तरह बज रहे थे। 'स्स्स् सर्दी' आखिरकार उसने कहा। मेरिया ने आह भरते और प्यार के स्वर में कुछ कहते हुए एक कोट बच्ची के चारो तरफ लपेट दिया। लेकिन विद्यार्थी ने बहुत देर तक अँधेरे में उसके दाँतों का बजना सुना। सरडुकोव ने नींद बुलाने के सारे आजमूदा तरीके इस्तेमाल किये। लेकिन व्यर्थ। उसने सौ तक गिनती गिनी, अपनी रटी हुई सारी कविताओं को दोहराया और पैंडेक्ट्स † में से कानून को; उसने एक चमकते धब्बे और समुद्र की हिलती सतह पर ध्यान स्थिर करना चाहा ; लेकिन सब निष्फल। उसके चारों तरफ बुखार से पीड़ित और बीमार लोग भारी साँसें ले रहे थे, और उस गहरे घोंटनेवाले अँधेरे में उसे क्रूर, रक्त की प्यासी किसी प्रेतात्मा की रहस्यमय, अदृश्य उपस्थिति का भान होने लगा जो उस चौकीदार की झोपड़ी में आ बसी थी।

---

† दीवानी कानून का कोड जो सम्राट् जस्टीनियन की आज्ञा से छठीं सदी में बनाया गया था।

बिस्तर के पास का बच्चा रोने लगा। मा ने पालने को हलका सा धक्का दिया, और नींद से युद्ध करते हुए उसने चरमराती रस्सियों के साज के साथ एक विषादपूर्ण लोरी शुरू की :

'आ हा आ हा
भले लोग सोये हैं,
और जानवर भी...

उस उदास तन्द्रिल गीत का मद्धिम स्वर, अँधेरे में, खिंचा हुआ और भारी मालूम पड़ने लगा—और उसके उस अबोध संगीत में उसे सुदूर, धुँधले कालों का कुछ आभास-सा मिला। मानव जीवन के उषः काल में, ऐतिहासिक युगों के बहुत-बहुत पहले गुफाओं के लोगों ने भी इसी तरह गाया होगा। रात के क्षणों में अपनी असहायता से दलित, वे समुद्र के किनारे अपनी गुफा के पास, आग के चारो तरफ, रहस्यमयी लपटों को घूरते हुए बैठे रहा करते होंगे, उनके घुटने उनकी बाहों के घेरे में और उनके सिर उस उदास संगीत की ताल पर झूमते हुए।

विद्यार्थी अपने सर के ऊपरवाली खिड़की से आती हुई एक अप्रत्याशित खट-खट से चौंक पड़ा। स्टिपान फर्श पर से उठकर खड़ा हो गया। बहुत देर तक, मानो अपनी खोई हुई नींद के लिए अफसोस करता हुआ, होठ हिलाते और सर और छाती खुजलाते हुए एक ही जगह पर खड़ा रहा। फिर अपने को ठीक करते हुए वह खिड़की तक गया और शीशे से मुँह चिपकाते हुए अँधेरे में बोला—कौन है ?

खिड़की के दूसरी तरफ से एक घुटी-घुटी आवाज़ आयी।

स्टिपान ने उस अदृश्य आदमी से पूछा—किस्लिन्स्का में ? हाँ, मैं सुन रहा हूँ। अच्छा तुम जा सकते हो, भगवान तुम्हारा साथ दें। मैं फौरन आऊँगा।

विद्यार्थी ने आतुरता से पूछा—क्या बात है स्टिपान ?

स्टिपान अंगीठी के पास दियासलाई के लिए खोज-बीन कर रहा था।

उसने अफसोस के साथ कहा—अरे भई...मुझे जाना है, ज़रूर

ही। कुछ नहीं किया जा सकता। किस्लिन्स्की हाउस में आग लग गयी है, और जंगल के हाकिम ने सारे चौकीदारों को बुलाने के लिए हुक्म दिया है...अभी-अभी गुमाश्ता यहाँ आया था।

आहों, कराहों और जम्हाइयों के साथ स्टिपान ने लैंप जलाया और कपड़े पहने। जब वह बाहर निकल गया तो मेरिया धीमे से, बिस्तर में से, दरवाजा बन्द करने के लिए निकली। किसी सड़ी हुई जहरीली भाप की तरह एक झोंका, गरम कमरे के अन्दर घुस आया।

'अपने साथ एक लालटेन लेते जाओ', दरवाजे के पीछे से मेरिया ने कहा।

स्टिपान ने एक शांत खोखली आवाज में जवाब दिया, जो कि फर्श के नीचे से आती जान पड़ी—क्या फायदा? लालटेन से तो और भी रास्ता भूल जाता है।

खिड़की की चौखट पर ठुड्डी को सहारा देते हुए सरडुकोव ने खिड़की से अपना चेहरा चिपका दिया। बाहर अँधेरी रात थी और था भूरा कुहरा। एक ठंडा चुभता हुआ झोंका खिड़की की दरार से अन्दर आ रहा था। स्टिपान के फुर्तीले, जल्दी-जल्दी उठाये हुए कदम, खिड़की के नीचे सुन पड़ते थे, लेकिन खुद वह अब दीख न पड़ता था, कुहरे और रात ने उसे निगल लिया था। बिला सवाल-जवाब, बिला शिकवा-शिकायत, बुखार से तङ्ग, रात के उस पहर में वह उठा था, और नम कुहरे में चला गया था, उसमें एक भयानक स्थिरता थी। विद्यार्थी के लिए इसमें कुछ भी बोधगम्य न था। उसने वह रास्ता याद किया जिस पर कि वह चला था—बाँध के दोनो तरफ कुहरे के सुफेद पर्दे, पैरों के नीचे की नरम, दलदली जमीन, 'बिटर्न' की धीमी, खिंची हुई आवाज—और एक बच्चे की तरह, उसे भय से रोमाञ्च हो आया। रात में उस विराट् घने, अथाह दलदल में, कैसे-कैसे विचित्र, असम्भव जीव जन्तु पलते हैं? कैसी डरावनी साँप-सी चीजें नरकुल में और विलो की गँठीली शाखों में हिलती-डोलती, रेंगती हैं? और अकेले, नियति के समक्ष विवशता से नत, हृदय में तनिक भी भय के बिना, ठण्डक से,

नमी से, बुखार से जो उसे सता रहा था, स्टिपान अब उस दलदल को पार कर रहा था, काँपता हुआ—वही बुखार जो उसके तीन बच्चों को कब्र में घसीट ले गया, और मुमकिन है बाकियों को भी ले जाय। और वह सरल हृदय, साही की-सी दाढ़ी और सहानुभूतिपूर्ण थकी आँखोंवाला आदमी, सरडुकोव के लिए एक अबोध्य रहस्य हो पड़ा।

विद्यार्थी की आँख थोड़ी देर को लग गयी। पीले छाया-सम चित्र और आकृतियाँ उसके सामने आयीं। अपने को सोता हुआ जानकर उसने अपने से कहा—यह तो केवल सपना है; और ये सब सिर्फ भूत। उदास धुँधली छाया के रूप में वह एक बार फिर दिन भर की अङ्कित अनुभूतियों के बीच साँस लेता रहा—तपानेवाले सूरज के नीचे सुगन्धित चीड़ के पेड़ों का निरीक्षण; सँकरा रास्ता; बाँध के दोनों तरफ का कुहरा; स्टिपान की झोंपड़ी; खुद स्टिपान और उसके बीवी बच्चे। और सरडुकोव ने सपना देखा, हाँ, कि अपने अमीन से व्यग्रता- और व्यथा-पूर्वक वह कह रहा है—इस जीवन का आखिर उद्देश्य क्या है? गर्म आँसू उसकी आँखों में झलक रहे थे। यह दयनीय मानव वानस्पत्य आखिर किसी के किस काम का? ग़रीब मासूम बच्चे, जिनका खून दलदल के पिशाच द्वारा चूसा जा रहा है, उनकी बीमारी और मौत में आखिर कौन-सा इन्साफ है? उनकी तकलीफों के लिए, किस्मत के पास कौन-सा हवाला है या कौन-सी दलील है? लेकिन अमीन ने गुस्से में अपनी भवें चढ़ा लीं और मुँह फेर लिया। वह दार्शनिक चिन्ताओं से थक चुका था। और स्टिपान एक सहृदय, भली मुसकान के साथ खड़ा हुआ था। उसने मानो हलके-से सिर हिलाया; उस उद्धत युवक के लिए करुणा प्रदर्शित की, जो यह न जान सका कि आदमी की जिंदगी ओछी, दयनीय और अनर्गल है, और न यही जान सका कि इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन कहाँ पर मरता है—मैदाने-जंग में, विदेश में, घर पर अपने बिछौने में, या दलदल के बुखार में।

और जब वह सोकर उठा तो सरडुकोव को लगा मानो वह बिलकुल

सोया ही न हो और तारतम्यहीन ढंग से इन चीजों के बारे में सोचता रहा हो। बाहर, पौ फट रही थी। रात की ही तरह अब भी कुहरा मोटा और भारी जमा बैठा था, लेकिन अब उसका रंग भूरे से बदलकर बर्फ की तरह सुफेद हो गया था और कहीं-कहीं एक ऐसे भारी पर्दे की तरह हिलता था जो कि अब उठने ही वाला हो।

सरडुकोव को सूरज देखने और गर्मी की सुबह की ताजी और साफ हवा खाने की प्रबल आकांक्षा हुई। उसने जल्दी से कपड़े पहने और बाहर चला गया। नम कुहरे का एक घना झोंका उसके मुँह से आ टकराया, जिससे उसे खाँसी आयी। रास्ता पाने के लिए, नीचे झुकते हुए, सरडुकोव तेजी से दौड़कर बाँध पार कर गया और ऊपर चढ़ने लगा। उसकी मूँछों और आँख की बरौनियों को भिगोता हुआ कुहरा आकर उसके चेहरे पर जम गया; उसने उसे अपने होठों पर महसूस किया, लेकिन हर कदम के साथ साँस लेना आसान और और आसान होता गया। आखिरकार वह एक बलुई पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा, और उसे ऐसा लगा कि मानो वह किसी एक अथाह गहरे, नम नरक में से बाहर आ रहा हो। एक अकथनीय आनन्द की लहर में उसकी साँस रुक गयी। उसके पैरों पर कुहरा, एक अनन्त, सुफेद, हलके चमकते हुए मैदान की शकल में छाया हुआ था, लेकिन उसके ऊपर नीला आसमान था, और सुगन्धित, हरी डालियाँ एक दूसरे से काना-फूसी कर रही थीं और सूरज की सुनहली किरणों से सारी दुनिया जगमग थी।

एडवर्ड बकलैंड

सन् १९०६ में लन्दन में जन्म हुआ। गरीबी के कारण उच्च शिक्षा न मिल सकी। चौदह साल की उमर में एक मोटर गैरेज में काम शुरू किया। उसके बाद अनेक बार बेकार हुए और अनेक ऊटपटांग काम किये।

अपने बारे में वह लिखता है :

'जब मैं यह सोचता हूँ कि कितना कुछ है जो मैं नहीं जानता, कितनी चीज़ें हैं जो मैंने नहीं कीं, कितनी जगहें हैं जो मैंने नहीं देखीं, तो मुझे अपने दुःसाहस पर आश्चर्य होता है कि मैं कुछ भी कैसे लिख सका। लेकिन खैरियत यही है कि ऐसा दुःसाहस मैं कम ही करता हूँ—इङ्गलैंड में शायद ही कोई ऐसा लेखक हो जो इतना कम लिखता हो।'

बकले राबर्ट्‌स के नाम से उसने कुछ लोकप्रिय मासिकों में कहानियाँ और कविताएँ लिखीं। सन् ३६ में हर्बर्ट हॉज के संग मिलकर एक व्यंग्यात्मक वामपक्षीय नाटक लिखा, 'ह्वेयर इज़ दैट बॉम', जो यूनिटी थिएटर द्वारा खेला गया और लॉरेन्स एँड विशर्ट के यहाँ से छपा है। इस नाटक को काफी सम्मान मिला।

मजदूर सभा का जोशीला कार्यकर्ता है और मजदूरों

के एक पत्र का सहकारी संपादक है। अपने कम लिखने का कारण बतलाते हुए वह कहता है कि मैं जीविकोपार्जन की चिन्ता में ही इतना व्यस्त रहता हूँ कि लिखने के लिए न तो मेरे पास समय रह जाता है न शक्ति।'

प्रस्तुत कहानी को वह अपनी सबसे अच्छी कहानी समझता है।

सड़क की लंबाई

।

हंटले ने पहले कभी खून नहीं किया था। जब वह आकृति जिस-पर उसने गोली चलायी थी एक अकड़ी हुई गति के साथ उछली और जमीन पर जा रही, उसे अपने आवेग की कमी पर एक हलका-सा अचम्भा हुआ। उस उछाल और अकड़ी हुई भंगिमा में इतनी कुछ भद्दी असंगति थी कि दया या दुख अरुचि में खो गया।

एनरीक, खुश था। वह हँसा और फिर उसने हंटले के कन्धों को थपथपाया।

उसने कहा—एक कम हुआ।

हंटले सड़क के पार किसान के उस टूटे-फूटे घर को देखता रहा, जिसके साथ तरु-पंक्तियाँ खत्म होती थीं।

उसने कठोर गंभीरता के साथ जवाब दिया—एक और जिन्दगी की जवाबदेही लदी।

वह थका हुआ था। वह डर जिसके साथ वह अर्से से लड़ रहा था, अब धमकियों के साथ धुँधली शक्ल में दिख रहा था। यहाँ आने में उसने कैसी बेवकूफी की, वापस लन्दन में, आना कितना सही मालूम पड़ा था। यूनियन, शाखा और पार्टी द्वारा दिया गया उत्साह और उसकी ओर सम्मान ने उसके निश्चय को बहुत सुन्दर और हिम्मती दीख पड़नेवाला बना दिया था। हर चीज ही ने उस रास्ते की ओर इशारा किया था; 'दि सोशलिस्ट' नाम के पर्चे के लिए फरवरी में मैड्रिड का उसका सफर, जबान पर उसका अधिकार, वैलेंशिया में

उसके ताल्लुकात—एक तरह से यह नामुमकिन ही होता कि वह न आता। उसने यश की दमक में मकान छोड़ा था।

यहाँ पर, सब मुख्तलिफ था। वह उनके अहसान के बारे में शक नहीं करता था, लेकिन अगर थोड़ी ख्याति उसे और भी मिल सकती तो अच्छा था।

यहाँ पर प्रदर्शन और तकरीरें नहीं थीं। ये लोग अपनी जिन्दगी और अपनी आजादी के लिए लड़ रहे थे, और किसी भी चीज के लिए उनके पास वक्त नहीं था। उन्होंने सिर्फ उसे स्वीकार कर लिया, उन्होंने सिर्फ उससे उतना ही देने की उम्मीद की जितना वह खुद दे रहे थे।

बहुत ठीक। बेशक, स्वाभाविक भी। सिर्फ...

हंटले को झंडों और तकरीरों, सिर्फ लफ्जी तजवीजों, शुक्रिया या विश्वास की वोटों, इज्जत और स्तुति की ही बान पड़ी हुई थी। इन लोगों की जान पर खेलनेवाली खूँखारी ने उसे डरा दिया, और अपने बारे में उसका शुबहा जो उस इतवार को थर्लो स्क्वायर में शुरू हुआ था, धीरे-धीरे पक्का हो चला।

उस चिरस्मरणीय इतवार तक, उसने हमेशा यह मान किया था कि अगर मौका आये, तो उसका क्रांतिपूर्ण काम भी उतना ही तेज़ और निश्चित होगा, जितना कि उसका क्रांतिपूर्ण भाषण। लेकिन घुड़सवार सिपाहियों की आगे को बढ़ती आती हुई एक कतार उस आदमी के लिए बड़ी भयावनी चीज होती है जिसने फुटबाल की भीड़ से ज्यादा उग्र कोई चीज न देखी हो। हंटले जब तक कि कतार उस तक आये, उसके बहुत पहले उछलकर भाग चला था, बेशर्मी के साथ भागा था, और अपने से नफरत करते हुए भागा था। यह कि औरों ने भी ऐसा ही किया था, यह कि उसका वहाँ टिका रहना भी बेकार और बेमतलब होता, उसे आराम न पहुँचा सका। वह डर से भागा था; बाद की कितनी ही सफ़ाइयों और दलीलों ने उस शर्म और डर को जो तब से बिलकुल गायब कभी नहीं हुआ, हलका या कम नहीं किया।

किसी ने उसकी बाँह को छुआ। यह लियोकेडियो था। वह अपनी

घुटनों से उठा और अपनी राइफल उस दूसरे को दे दी, जो उसकी जगह में, खिड़की के पीछे, टॉमस की बगल में, जा धँसा। हंटले, टूटी हुई आराम कुर्सी पर एनरीक से जा मिला और पानी की पेश की हुई बोतल से धीरे-धीरे पीने लगा। वह ताज्जुब कर रहा था कि एक बार मौत की क्रिया का सामना कर लेना इस तरह की अनंत थकान और तनाव से अच्छा है या नहीं।

एनरीक बोल रहा था, उस खास तरह की लय में जो वैलेंशिया-वालों की अपनी बात है।

'......क्योंकि यहाँ पर हम सिर्फ मर ही सकते हैं। किसी न किसी को जाना ही होगा।'

हंटले अचानक उठ खड़ा हुआ।

'क्या ? क्या हुआ ? किस के बीच से जाना होगा ?'

एनरीक ने खिड़की की तरफ इशारा किया।

'लुई को। कल, दोपहर तक, फ्रैंको के हबशी आ जायँगे। तब सब खत्म समझो। लियोकेडियो कहता है वह जायगा।'

हंटले अचकचाया हुआ, खिड़की की तरफ नजर गड़ाये रहा। यह गैरमुमकिन है। इस बिल से निकलने का अकेला रास्ता गाँव की उस सड़क के बीच से था। पीछे चढ़ी हुई और दुर्गम नदी, और दोनों तरफ दलदली झाड़ियों के होते हुए, दूसरा कोई रास्ता मुमकिन न था। और सड़क उस खेत से लगे मकान द्वारा संचालित होती थी, जिसके अन्दर मुट्ठी भर बागी थे। यह सच था कि जब तक राजभक्तों के कब्जे में वह मकान था, बागी सड़क से इस ओर नहीं आ सकते, लेकिन वे आखिर आयें ही क्यों ? उन्हें तो सिर्फ वक्त गुजारना था। सड़क के बीच से भला कौन गुजर सकता था ? क्या हंटले ने अभी उस लापरवाह बेवकूफ को गोली नहीं मार दी थी जिसने खेत से लगे मकान के ओसारे से आगे चले आने के सिवा कुछ नहीं किया था ?

'यह नामुमकिन है।' उसने कहा।

'इसे नामुमकिन नहीं होना होगा। नामुमकिन तो है मरना जब

इतना काम करने को बाकी है। या—हम लोग पकड़े जा सकते हैं, जो कि बदतर है। हम सिर्फ इतना जानते हैं। टॉमस के पास कागज़ात हैं......नहीं, सुनो। जब अँधेरा हो जायगा, लियोकेडियो, चुपचाप, बिला अपनी रायफल लिये जायगा, जिसमें अड़चन न हो। सड़क के आखीर में एक गहरी खाई है। उसी के अन्दर से वह मकान को पार कर सड़क पर पहुँच सकता है। और फिर तीन कोस के अन्दर वेन्टोरिलो है, जहाँ वह फोन कर सकता है और जब तक चढ़ाई करनेवाले उसके पास न पहुँच जायँ, छुपा रह सकता है। फिर उसने महसूस किया कि वह इधर से उधर झुलाया जा रहा है।

'और अगर वह पकड़ा गया ?'

'दूसरा जाता है। एक को पार जाना ही होगा। इसका महत्व जितना तुम समझते हो, उससे ज्यादा है।'

हंटले ने अपनी ठुड्डी को हाथ का सहारा दिया और केहुनी घुटनों पर टिकायी।

'मैं समझता हूँ तुम ठीक कहते हो', उसने थकान के साथ कहा—सिर्फ अगर तुमने गाँव को उस वक्त छोड़ दिया होता जब मैंने कहा था, तो हम कभी यों कटकर अलग न हो जाते।

एनरीक ने उसकी ओर पैनेपन के साथ निहारा।

'तुम नहीं...लेकिन तुम थके हुए हो, साथी! अँधेरा होने तक धीरज रखो, और तब तुम देखोगे!'

अपने मजाक से खुश उसने दूसरे की ओर देखकर मुसकरा दिया और फिर लियोकेडियो से बातचीत करने के लिए खिड़की तक गया। हंटले दीवार पर गिर पड़ा और अपनी थकान और आकांक्षाओं से भारी आँखें उसने बन्द कर लीं।

उसने फिर महसूस किया कि वह इधर से उधर झुलाया जा रहा है। उसने आँखें अँधेरे में खोलीं और एक पल के लिए इस खयाल में रहा कि वह नाव में है, अपनी सोने की जगह में। तब उसे होश हुआ कि कोई उसे झकझोर रहा है। खुरक और चकराया हुआ, वह उठ

बैठा, और खिड़की की मद्धिम रोशनी के पट पर खिंची हुई उस शक्ल पर आँखें गड़ाने लगा। यह था एनरीक।

'लियोकेडियो जा रहा है। हमें पहरा देना होगा। आओ।'

वह अकड़ा हुआ उठा और अपनी राइफल ली। एक कोने में लियोकेडियो चुपके-चुपके टॉमस से बातें कर रहा था। वह उनके पास गया और लियोकेडियो की तरफ अपना हाथ बढ़ा दिया।

'सौभाग्य साथ हो', उसने अंग्रेजी में कहा।

लियो ने खुशी के साथ दाँत गड़ाये। 'क्या जरूरत!' उसने आनन्द के साथ जवाब दिया—शायद वही सारी अंग्रेजी थी जो कि वह जानता था—और फिर दूसरों की तरफ मुखातिब हुआ।

'अगर सब खैरियत रहे, तो मैं दो घंटे में लुई पहुँच जाऊँगा। अगर तुम तीन घंटे में एक लाल बमगोला न देखो—तो खैरियत नहीं रही, यही समझना।'

बिना एक और शब्द कहे वह चला गया।

शेष लोग सैन्य-सज्जित खिड़की के पास भीड़ लगाये यों खड़े थे, कि उनके बीच में जगह केवल राइफलें घुमाने भर की थी और वे धुँधली सड़क को आँखें स्थिर कर घूर रहे थे। सौभाग्य से अँधेरा था गो कि थोड़ी देर बाद चाँद आ जायगा अगर उसे बादलों ने न छुपा लिया। उन्होंने बाहर एक मद्धिम सरसराहट सुनी, गोया चूहों की हो, और उन्होंने देखा कि उस पलस्तर के ढेर पर जो कभी ओसारा था, एक परछाई करीब-करीब अदृष्ट-सी डोल रही थी। फिर वहाँ कुछ न था। सिर्फ घनी चुप्पी और अँधेरा।

इंटले को अपने साथियों की साँस की आवाज उस पंप की-सी मालूम पड़ी जिसमें दरार हो। स्वयं उसकी साँस मुश्किल से आ रही थी, मानो वह फेफड़े से नहीं बल्कि पेट से खींची जा रही हो। दस कभी न शेष होने वाले मिनट शेष हुए। उसके हाथ की घड़ी की चमकदार सुई नौ की ओर दहशत के साथ बढ़ी। और, कोई आवाज नहीं आयी।

अब वह चुपके-चुपके गा रहा था। वह लंदन के बारे में नाच के,

पार्टी के 'दि सोशलिस्ट' के दफ्तर के बारे में सोच रहा था। हे भगवान्, लेकिन लियो भी था हिम्मती! अब तक तो उसने सब कर लिया होगा। इस वक्त वह निश्चय ही खाई' में होगा। बेशक वह पानी से भरी होगी, लेकिन पानी की एक बूँद से क्या?

उस चीख ने जो एक कुत्ते के अकेले भूँकने की तरह आ रही थी, उन्हें लकवा-सा मार दिया और फिर वह एकाएक रुक गयी गोया घोंट दी गयी हो। इसके बाद भागते पैरों की आवाज सुन पड़ी। सड़क की अँधेरी ने जैसे तीखी लपटें उगलीं। आधी दर्जन राइफलें स्फोट के साथ जो पड़ीं। एनरीक ने कुछ बातें कहीं जो हंटले की समझ से बाहर थीं, मुहावरेदार, डरावनी बातें—धीमी पर गंभीर मानो वह प्रार्थना कर रहा हो। टॉमस खिड़की के चौखटे के किनारों पर, बग़ल को झुका हुआ था, और हंटले, बिना जाने कि वह ऐसा क्यों कर रहा है, गुस्से के साथ गोली चलाने लगा। अँधेरे में दिन से ज्यादा तेज आवाज जान पड़ी, एक शोर जो गिर्जेघर के शोर-सा बेमतलब था।

इसके बाद कोई भी इंसानी आवाज नहीं सुन पड़ी। जरा ही देर में बागियों ने गोली चलाना बन्द कर दिया, और हंटले ने भी। फिर, घनी शान्ति उन्हें आशंका और अनिश्चय से सताने के लिए लौट आयी। बहुत देर तक उन्होंने आँखों और कानों पर जोर दिया, नहीं तो कहीं लियोकेडियो लौट आये या बागी रात में हमला करने की कोशिश करें। हवा की हर साँस, हर चलती-फिरती परछाईं', डर जगाती थी। फर्ज करो उन्होंने गोली दाग दी, और वह लियो हुआ, तो? और मान लो, उन्होंने गोली न चलाई और ये फाशिस्त बागी निकले, तो?

एनरीक ने कहा—मैं अभी देखने जाऊँगा।

टॉमस ने कहा—नहीं, मैं जाऊँगा।

हंटले ने थर्लो-स्कायर के बारे में सोचा। कम से कम, मौत वहाँ दीख तो पड़ती थी।

पौने दस बजे, चाँद टूटे हुए बादल के टुकड़ों में से अचानक निकल आया, और गाँव पर एक धूमिल उँजियारी फेंकने लगा। आधा चलने

पर सड़क के उस तरफ एक आकृति पड़ी हुई थी, निश्चल। वह सड़क पर पड़ी थी, चेहरा नीचे को था, शक्ल या कपड़े से पहचानना उसे नामुमकिन था। उस पार हल्का-सा दीख पड़ता हुआ, खेत से लगा, घर था, या जैसा कुछ कि पिछले हफ्ते की लड़ाई ने उसे साबूत छोड़ा था।

कुछ मिनटों में चाँद छुप गया और अँधेरा फिर छा गया। लेकिन जब थोड़ी देर बाद, रोशनी फिर आयी, पहले से जरा तेज, तब एनरीक ने हंटले की बाँह कसकर दबोची।

'देखो! वह खलिहान के ज्यादा करीब है!'

यह सच था। वह आकृति, अपनी पिछली जगह से तीन-चार गज दाहनी तरफ थी। बागियों ने भी इस बात को देख लिया था, क्योंकि राइफलें फिर गूँजीं। एक झटके के साथ वह आकृति आधी उठी और सड़क पर मोड़ और घुमाव की चेष्टा करते हुए लँगड़ाकर चलने लगी। यह लियोकेडियो था, स्पष्टतः, घायल। चाँद फिर ढँक लिया गया, और जब वह फिर नजर आया, सड़क खाली हो गयी थी। टॉमस ने उल्लास के आवेश में एनरीक को झकझोरा।

उसने उफनकर कहा—वह बचकर निकल गया। निश्चय ही वह अब खलिहान के दरवाजे में होगा।

एनरीक ने कहा—वह बुरी तरह घायल हो गया है, अब वह बचकर नहीं निकल सकता। मैं जाऊँगा।

हंटले को स्वयं अपनी आवाज कूक की तरह मालूम हुई जब उसने कहा:

'मैं जाऊँगा।'

उसने यह भी उसी वजह से कह डाला जिस वजह से उसने जिन्दगी-भर और सारी बातें कही थीं—क्योंकि यह नाटकीय-रूप में मौके के खयाल से मौजूँ था। उसकी शिक्षा लेखक की तरह हुई थी—नाटकीय तत्व उसकी अंदरूनी चेतना में बिंधे हुए थे। इस प्रकार उसने पार्टी के घरेलू नौकर, सेक्रेटरी, संवाददाता, जुलूस के झंडा-

बरदार, सब हैसियत में अपनी खुशी से काम किया था। कभी-कभी उसे अपने दिये हुए शब्द को वापस ले लेना पड़ता था, क्योंकि उदारता आदमी को नकल करने की ओर झुका देती है। लेकिन अब एनरीक ने धीमे से कहा :

'यह सबसे अच्छा है' और एक इशारे से टॉमस के उठनेवाले विरोध को घोंट दिया।

हंटले ने अपने तईं मंजूर किया कि एनरीक नेता है, प्रकृतरूप में मनोवैज्ञानिक। उसने जाना कि एनरीक सब कुछ समझता है। तब उस वैलेंशियन के प्रति उसकी घृणा में प्रशंसा मिली हुई थी। उसने गौर के साथ आदेशों को सुना, यह विश्वास करने की कोशिश करते हुए कि उसकी कँपकँपी रात की ठंडी हवा के कारण है, और जब और कुछ कहने को न रह गया, तो उसने अपनी राइफल दीवाल के सहारे टिकायी और दरवाजे की ओर बढ़ा।

एनरीक ने अपना हाथ बढ़ा दिया। 'हम लोग मैड्रिड में फिर मिलेंगे,' उसने कहा। हंटले को अंधेरे के कारण खुशी थी। उसने व्यग्र टॉमस से भी हाथ मिलाया और पक्के फर्शवाले आँगन में खिसक गया।

नदी से आती हुई ठण्डी हवा के कारण बाहर बहुत सर्दी थी। सड़क पर जाने की हिम्मत करने के पहले, उसने चाँद के छुपने का इन्तज़ार किया, क्योंकि उसकी प्रगति रह-रहकर उगने और छुपनेवाले चाँद के पर्दे में, रुक-रुक कर हो सकेगी। इन्तजार करने के साथ, उसने सड़क को समझा ; वह खाकी सड़क जिसकी धूल मेंह से कीचड़ हो गयी थी, वे बेडौल क्रमहीन इमारतें, जो एक दूसरे से अलग और कटी हुई थीं, जिनके बीच पेड़ और घास के छोटे चौतरे बिखरे हुए थे। इस गाँव पर जहाँ पिछले हफ्ते सैन्य-दल ठहरा था, बुरी तरह गोले बरसाये गये थे और मकानों में सिवाय दीवालों और टूटी शहतीरों के और कुछ नहीं बच रहा था। फिर भी खँडहर का अगवाड़ा बेडौल सा था, जिसके पीछे अँधेरे में एक होशियार आदमी परली तरफ खाई तक पहुँच सकता था।

और खास अगली मंजिल के लिए था उस अधजले खलिहान का ठिंगना डील, जो घायल लियोकेडियो को छुपाये हुए था।

और जब वह इन्तजार कर रहा था, हंटले ने अपनी ऐलबर्ट हाल की वक्तृतावाली रात को याद किया; किस तरह तब भी उसने उसी घुटी हुई साँस के साथ, उसी दुर्बल मन के साथ, जीत की जरूरत से उस ओर को खिंचते हुए फिर भी भागकर गायब हो जाने की आकांक्षा करते हुए समय बिताया था। उस वक्त उसने भाषण दिया था, विजय-माल पहनी थी, उसका डर विजयोल्लास में बदल गया था। क्या उसका जीवन हमेशा वैसा ही नहीं रहा? भय—यत्न—विजयोल्लास?

थर्लो स्कायर को छोड़कर।

ओह, उसे फेंको भी जहन्नुम में! इसे तो ऐलबर्ट हॉल होना चाहिए, थर्लो स्कायर नहीं। सड़क ओझल हो गयी; दीवालें परछाईं में जा डूबीं। करीब-करीब खुश वह चला।

ओसारे से सड़क तक के नन्हें फासले को एक तेज चाल में। विराम। कीचड़ से दूर रहो, नहीं कहीं जूतों की किर्र-किर्र न सुन ली जाय। फिर उस कङ्करीट और छड़ों के उलझे ढेर पर, जो कभी गारजा था। चाँद ऐसा मरा हुआ था गोया कभी पैदा ही न हुआ हो; और तय किये हुए फासले के खयाल से उसका हौसला बढ़ा। सड़क से जरा हटकर, मलबे के कूड़े-करकट से भरा हुआ चौतरा। निश्चय ही, यह बड़ा मकान रहा होगा। एक पक्का आँगन जो किसी राजगीर का चबूतरा मालूम पड़ता था, जिसके चारों तरफ वह चक्कर काटता रहा होगा। अब फिर जल्दी से उस धुँधली खाकी रेखा द्वारा राह पहचानते हुए, जो कि सड़क थी पगडंडी पर।

खलिहान से सिर्फ पचास गज के फासले पर उसने बादलों को फटते देखा और एक नीची मुँडेर की आड़ में दुबककर छुप गया। अब वह खलिहान के इतने करीब था कि उन पर्देदार खिड़कियों और दरारों को देख सके जिनके द्वारा उनकी रक्षा होती थी।

झूठा खतरा। बादलों का छँटना सिर्फ क्षणिक था और वह रोशनी नहीं

आयी जिसका सख्त अन्देशा था। हंटले ने सोचा कि वह सफर भी उसके जीवन से कितना मिलता-जुलता है। भयभीत संशय, आकस्मिक प्रयत्न, रोड़े साफ। नामुमकिन बातों की आशंकाएँ जो आशंकाएँ ही रहीं। आखिरकार यह भी आसान ही था—बिलकुल उसके जीवन की तरह। तुम डर रहे थे, लेकिन तुमने हिम्मत बाँधी और आगे बढ़ आये—और कामयाब रहे। अपने उस मिलान पर वह खुशी से मुसकराया तक।

मुँडेर को छोड़कर एक ऐसी जगह को पार करते हुए, जो कभी घिरा हुआ बाड़ा रहा होगा, वह झुकने से बिलकुल दोहर ही जाते हुए खलिहान की तरफ दौड़ा। और चूँकि जिन्दगी भी उसी तरह की चीज है, उजाला, चढ़ते हुए पानी की चुपचाप तेजी के साथ, सड़क में फिर फैल गया। घबराहट ने उस पर छापा मारा। वह टूटी हुई चहारदीवारी छलाँग मारकर साफ पार कर गया और खलिहान की ओर दौड़ा पर देख लिया गया।

खलिहान में तभी बिठाले हुए उन पहरुओं ने उसके कूदने के पहले से ही गोली चलाना शुरू कर दिया था, इसलिए दौड़ के वे पाँच सेकण्ड एक विस्फोट-से हो गये। किसी और दौड़ की खूँखार तेजी ही उसका अकेला बचाव थी। वह गोली जो उसकी बाईं जाँघ में लगी, एक भारी चोट की तरह महसूस की गयी, बिला पैनेपन के, जब तक कि वह खलिहान के दरवाजे में तेजी के साथ, मुशकिल से साँस पाता हुआ एक ढेर की तरह लड़खड़ाकर गिर न गया। तब थोड़ी देर को महफूज, उसे दर्द अनुभव करने और डरने का अवकाश मिला। जिस दिशा से वह आया था, उधर से उसके साथियों द्वारा बागियों से बचाव करने के लिए छोड़ी गयी गोलियों की आवाज आयी, और तब एक बार फिर शान्ति छा गयी।

'इतना गुल न करो।' एक महीन आवाज ने कहा, और उसने महसूस किया कि वह जोर से सिसक रहा था। जियोकेडियो, मुश्किल से खुले दरवाजे के भीतर दाहनी ओर, दीवाल के सहारे उठंगकर इस

तरह बैठा हुआ था कि वह खलिहान पर नजर रख सके। हंटले फर्श पर, अपने को ...की ओर घसीट ले गया।

वह बुदबुदाया, 'मैं चोट खा गया हूँ। क्या तुम भी?'

जैसे ... मुस्कराया, लियो के दाँत अस्पष्ट-से दीखे। उसने फिर कहा—

'जरा भी नहीं।' फिर स्पेनिश में, 'मुझे अपना घाव देखने दो। मेरे पास पट्टियाँ हैं।'

'तुम्हारा क्या हाल है?'

'कोई बात नहीं। मैं अब चल नहीं सकता। लेकिन अगर तुम बुरी त... नहीं चोट खा गये हो, तो तुम—पट्टियाँ बँध जाने पर—चल सकते हो।'

हंटले का भीतर और बाहर सब कुछ जैसे विद्रोह कर उठा।

'चला चलूँ? मरना इससे अच्छा होगा।' उसने अपने मोजों की पट्टियाँ सरका लीं और ब्रीचेज को जाँघ से नीचे गिरा दिया। अँधेरे में काले, उमड़ते हुए खून ने उसे ठेस पहुँचायी। और पहले कभी भी उसके इतना खून न बहा था। लियोकेडियो ने, एक कड़ेपन और नम गुरगुराहट के साथ, जिनसे डाक्टर भी चौंक उठता, उसके जख्म को मैदानी पट्टी से मोटे और भद्दे रूप में बाँध दिया।

उसने कहा—यह (जख्म) छोटा है। गोली सिर्फ छूती हुई निकल गयी और अंदर नहीं दाखिल हुई। मैं, मुझे तो तुममें से एक ने मार दिया!'

आवाज सुनने पर अपने उन्मत्त गोली चलाने को स्मरण करते हुए, हंटले ने उसे घूरा।

'हे ईश्वर!' उसने धीरे से कहा, और उस तिक्त मजाक का स्वाद अनुभव किया। उसके न होने भर से, लियो शायद निकल जाता, और उसे इस सब से नजात मिल जाती।

'मैं अब फिर वहाँ बाहर नहीं जा रहा हूँ।' उसने जमे हुए दाँतों के बीच से कहा। इस खबर के प्रति कि उसने लियो को मार दिया है,

अपनी प्रतिक्रिया के कारण वह अपने से नफरत कर रहा था। दूसरे ने अपना सिर दीवाल के सहारे टिका दिया और प्रतीक्षा करने लगा।

हंटले ने बाहर सड़क की तरफ देखा जो चाँदनी में खाकी हो रही थी, और उस विपत और तीखेपन के खिलाफ जो उस पर छापा मार रहे थे, अब संघर्ष बंद कर दिया। आखिरकार यह था जीवन से वास्तविक मिलान। उसका सारा जीवन एक ज्यों-त्यों आधी रौशन सड़क के बीच एक जोखिम का सफर था। सारी जीतें, सारे रोड़ों पर फतह पाना और फासले का तय करना, सब कुछ इस ओर ला रहा था, फंदे में फँसे हुए जानवर की तरह धीमे-धीमे प्राण तोड़ने की ओर। और किस लिए? यह सब किस मसरफ का था—जिन्दगी के बीच उसका सफर, उस सड़क के बीच उसका सफर, जब कि दोनों कट जायँगे, और बिलकुल बेकार?

इस परदेशी जगह में जब कि लड़ाई और खून की बू उसके नथनों को भर रही थी, उसे घर की दारुण चाह हुई। लंदन के खयाल ने उसके चिथड़े कर दिये। उसने सूरज में चमकती हुई ग्रेज़ इन रोड की ट्रामलाइनें देखीं, बिशप पार्क के नीचे सिहरन के साथ बहती हुई टेम्ज़ देखी, 'दि सोशलिस्ट' के दफ्तर में का घिसा हुआ फर्श देखा। वह यहाँ क्या कर रहा है, एक स्पेनिश गाँव में खून बहते जाने से मर रहा है, जब कि इंगलैण्ड में हजारों उसके-से ही मजदूर इन सब बातों से बरी अपनी औसत जिन्दगी बसर कर रहे थे? वे अब सिनेमा में होंगे—सिनेमा में!—संगीतालयों में, कुत्तों के 'शो' में। कुछ—उसके-से ही बेवकूफ!—मीटिङ्गों में, सभाओं में, प्रदर्शनों में होंगे; शायद यहाँ आने के हेतु वे सिंहद्वार।

उसने शर्ली का कांतिपूर्ण और कोमल चेहरा देखा, जब कि वह उसे विदा करने आयी थी; शर्ली जिसके साथ उसने इतने दिन काम किया था, और जिसे उसने देने कहा तो बहुत था पर दिया था बहुत कम।

काश उसके मरने पर कुछ बाकी रहता—काश जिन्दगी का कुछ मतलब होता! लेकिन कहीं कुछ न था। लन्दन लौटने पर था थर्लो

स्क्वायर, यहाँ यह खलिहान का खँडहर। दोनों हालतों में सिवाय दर्द और तकलीफ के और कुछ नहीं हासिल। और बाहर चाँदनी में निकल जाने में सिर्फ तत्क्षण मौत और कैद के बीच ही चुनने को है।

लियोकेडियो, जो मानो मन का भेद पहचानता हो, फिर बोला।

'क्यों अपनी जिन्दगी बर्बाद कर रहे हो? यहाँ तक तुम आये हो—सिर्फ मरने के लिए। कल हबशी आ जायँगे। लेकिन आज रात तुम अब भी खाई तक—और लुई—पहुँच सकते हो। क्या यहाँ हम लोग रोकर और आराम कर एक दुनिया बनायँगे?'

'तुम खुद क्यों नहीं जाते? मैं क्यों जाऊँ? जब मरना ही है तो जैसे कहीं और वैसे यहाँ।'

'कामरेड, मैं अब फिर कहीं न जा सकूँगा। लेकिन तुम...अगर तुम निकल जाओ तो बहुत कुछ कर सकते हो। और अगर नहीं—खैर, तुमने कोशिश कर ली होगी। पर—स्पेन तुम्हारा देश नहीं है। शायद हम तुमसे ज्यादा मांग रहे हैं।'

वह चुप हो गया, मुश्किल से साँस लेते हुए। बहुत अँधेरा हो चुका था और देहली के उस पार मेंह की एक धार गिरने लगी। दूर पर एक आदमी जोर से खाँसा। एकाएक लियोकेडियो आगे की ओर व्यग्र होकर झुक गया। हंटले ने अँधेरे तक में उसकी चमकती आँखें अनुभव की।

'फिर भी यह तुम्हारा देश है' वह एक डरावनी बुदबुदाहट में चीख पड़ा—'सारा संसार हमारा देश है। क्या हम लोग भाई नहीं हैं—क्या हम लोग वहाँ साथ-साथ काम नहीं करते जहाँ मानव आजादी माँगता है? कल यह जर्मनी और इटली था। आज स्पेन है। शायद कल, तुम्हारा इंगलैण्ड होगा!'

उसकी आवाज में कुछ था जिससे जोश उमँगता था। उसने हंटले को उकसा दिया, जैसे कि पहले भी ऐसी पुकारों ने अकसर किया था। वह बेचैनी के साथ बोला।

'अगर इसके लिए नहीं, तो फिर तुम यहाँ हो किस लिए? नहीं

तो तुम पैदा ही क्यों हुए थे, अगर कोशिश करने के लिए नहीं ? देखो—तुमसे पहले आनेवाली हर पीढ़ी ने तुमको पैदा करने में मदद की है। तुम्हारा सारा जीवन इस एक क्षण की ओर तुम्हें लाता रहा है। इंगलैण्ड में तुम्हारे काम के बारे में मैं जानता हूँ। वह एक कायर और गद्दार का काम नहीं है। तुम्हारा सारा काम तुम्हें इस ओर लाया है, इस देश की ओर, इस सड़क की ओर, इस खलिहान की ओर। क्या तुम इस सबको अब यों ही फेंक दोगे ? तुम्हारे साथियों के प्रति यह दगा है—अपने प्रति इससे भी बदतर कुछ। एक सफल जीवन जो निकम्मी मौत द्वारा निकम्मा कर दिया गया ? तुम्हारे इंगलैण्ड में लोग क्या कहेंगे ?'

वह पीछे को लुढ़क गया, चूर होकर। हंटले गतिहीन था और दरवाजे की तरफ, जो अँधेरे में सिर्फ एक धुँधली छाया-सा मालूम पड़ता था, घूरता हुआ बैठा रहा। यह सब सच था। यह उसके सड़क और जिन्दगी के मिलान का सही जवाब था, कि आया वह आधे रास्ते रुक जायगा, या चला चलेगा। इधर आधी सड़क पर, वह घायल, उसका उद्देश्य अपूर्ण, थी असारता। इधर आधे जीवन पर, वह डरा हुआ, उसका काम रुका हुआ, थी नपुंसकता।

उसने स्पष्टतया, बिना शंका या राग के देखा, कि यह कोई राजनीति का सवाल नहीं है। समस्या राजनीतिक निमित्तों से, उपयोगिता से बहुत ऊपर थी। यह एक आसान-सा सवाल था, क्या जिन्दगी का कोई मतलब है ? अगर है तो उसे चले चलना चाहिए। बचकर निकल जाय, अगर मुमकिन हो, मर जाय अगर जरूरत हो—लेकिन मरे, चेष्टा करते हुए।

जीवन में शायद पहली बार मानव-कर्तव्य का परिज्ञान उसे हुआ, जीवन को जगाये रखने का कर्तव्य, वह कर्तव्य जो अकेला मानव को मिला है—मनुष्य जाति के प्रति कर्तव्य। सही या गलत ये ही थीं उसकी धारणाएँ, ये ही उसके साथी। यदि इस वक्त वह चूका तो उसे सचमुच शायद किसी ऐसी चीज का सामना करना पड़े जो वस्तुतः मौत से खराब हो—एक अपूर्ण, निष्फल जीवन।

उसने एक बड़ी लम्बी साँस खींची।

'क्या मैं तुम्हारे जरा भी जोड़-पैबन्द लगा सकता हूँ?' उसने पूछा।

लियोकेडियो ने, बोलने से परे, सिर हिलाया।

'आँ—शुक्रिया। मैं—मैं अब चलूँगा।'

लियो ने इशारा किया और हंटले उसकी ओर झुका।

'यह तो मैं हूँ जो तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूँ', वह बुदबुदाया, 'अब लो मेरा कोट उतार लो और खुद पहन लो। उसमें...' उसने धीमे अस्पष्ट रूप में बुदबुदाकर दूसरे को वह सारा प्लान समझा दिया जो उसने एनरीक के साथ तय किया था कि अगर सब कुछ नाकामयाब रहे, तो उस योजना को पूरा किया जाय। एक प्लान जिसने हंटले को डर के मारे अधमरा कर दिया। लेकिन जितनी नरमी से हो सकता था, उसने उस कराहते हुए आदमी के ऊपर से कोट उतार लिया और प्लान को दिमाग से दूर रखने की कोशिश करते हुए, उसे मेहनत करके पहन लिया। आखिर काम हो गया। उसने लियो के हाथ को एक पल के लिए छुआ और दरवाजे की ओर बढ़ गया।

वह अपनी जाँघ की चोट भूल गया था, लेकिन पैर पर जोर पड़ने पर, उसे ऐसा लगा मानो एक आरे से काटी गयी हड्डी ऐंठ रही है। दर्द से उसका मुँह बिगड़ा, वह कराहा-सा, फिर दाँत पर दाँत जमा लिये और लँगड़ाकर बाहर हो गया।

अब बारिश सख्त हो रही थी और घुप्प अँधेरा था। अपने रास्ते को शांति के साथ पहचानते हुए, अपने दिमाग से बिना आवाज बढ़े जाने के खयाल के अलावा और तमाम खयालों को बाहर कर, वह सतर्कता के साथ सड़क की ओर बढ़ा और खलिहान की खिड़की में से निकलती हुई अकेली रोशनी की ओर मुड़ा।

उस जगह से, जहाँ उसने सड़क पायी, दस गज की दूरी पर एक काली परछाईं उसके पीछे मालूम पड़ी। उसके सर के पुश्त पर कोई चीज जोर से लगी, और वह लड़खड़ाकर एक दूसरी परछाईं की बाहों में

जा रहा। थोड़ी देर को जीवन में सिर्फ हड़बड़ संभ्रम, अटपटी वेदना, धींगामुश्ती और ठेल-ठाल ही शेष रह गयी।

फिर उसका दिमाग साफ हुआ। वह खलिहान में फिर लौट आया था। कोई उसे कॉलर से ताकत के साथ पकड़े हुए था और एक दूसरी धुँधली आकृति हाथ में चोरबत्ती लिये खड़ी थी, जिसकी रौशनी लियो पर पड़ रही थी।

'देवी मेरी !' रौशनीवाले आदमी ने धीमी आवाज में कहा, और रोशनी लाश पर से फिरा ली। लेकिन कैदी के सब कुछ देख लेने के पहले नहीं। उसने सोचा कि हर गोली जो उसने चलायी होगी निश्चय ही लियो को लगी, जो कि अब भी हंटले को कायरता और पराजय से बचाने के लिए काफी वक्त जिंदा रहा। तो शायद, उसके जीने का कुछ मकसद रहा।

सड़क के ऊपर खलिहान तक का चलना, पीठ से दो राइफलें लगी हुईं, यों लगा कि जैसे कभी खत्म ही न होगा। उसने कई बार सोचा कि वह दौड़ेगा और जल्दी से मौत पा लेगा, लेकिन वह अपने को किसी तरह भी इस प्रयत्न के लिए तैयार न कर सका। और सर और पैर के दर्द से लड़ना ही बहुत काफी था। वह वक्त जानने को उत्सुक हुआ। एनरीक और टॉमस को छोड़ने के बाद से दुनिया ही बदल गयी थी। क्या अभी सिर्फ एक घंटा—दो घंटा हुआ था ? वाह रे दिल्लगी कि यहाँ का कीचड़ भी विलायत के कीचड़ से कितना ज्यादा चिपचिपा है। मिट्टी है, शायद। क्या उसको पकड़नेवाले स्पेन के हैं या इटली के ? इस हिस्से में अनेकों इटैलियन हैं। यह भी कितनी साफ बात होनी चाहिए थी कि वे खलिहान को घेर दे सकते थे। अगर वह सड़क पर वहाँ तक चला जा सके, वे भी वैसा ही कर सकते थे। लेकिन वह तो अपनी इज्जत के बारे में सोच रहा था। उसकी इज्जत ! वह हँसा, और उसके पकड़नेवालों में से एक ने उसे सिसकते जानकर संगीन से गोदा। उसने सोचा कि बेशक उसने इनमें से एक को मार दिया था। वे इसे भूल नहीं सकते।

उस खेत से लगे मकान की रसोई नीची और लंबी थी, एक पुरानी अँग्रेजी सराय से मिलती-जुलती-सी। एक खुरदुरी मेज पर दो अफसर बैठे हुए थे। चार बन्दूक से लैस आदमी खिड़कियों पर पहरा दे रहे थे। चार और, धूम्रपान करते हुए, कमरे के उस सिरे पर बैठे हुए थे। 'दस', उसने शान्त भाव से सोचा।

उनमें से एक अफसर बात कर रहा था। हंटले के सिर में इतनी सख्त तकलीफ हो रही थी कि वह इन चीजों की ओर ध्यान दे सके ऐसा मुमकिन न था। किसी ने उसी नुकीली चीज से गोदा।

'आँ ?' उसने अस्पष्टता के साथ कहा—आँ—हाँ। हम लोग बारह थे। एक मर गया है। और मैं यहाँ हूँ। बाकी बचे दस, हुजूर !'

'क्या यही सच है ?'

'हाँ ?'

'क्या इसकी तलाशी ली गयी है ?' एक अफसर ने पूछा।

कैद करनेवालों में से एक ने कहा—अभी नहीं, हुजूर ! हमने सोचा इसे अंदर ले आना ही अच्छा होगा, शायद इसके साथी इसे बचाने की कोशिश करें।'

मेज पर एक घड़ी पड़ी थी। उल्टी तरफ से उसे पढ़ते हुए उसने देखा कि ग्यारह बजने को पाँच मिनट है। अंग्रेजी घड़ी-सी मालूम देती थी। उसने बनानेवाले का नाम पढ़ना चाहा जो उसके चेहरे पर लिखा हुआ था। पहला अफसर और भी सवाल पूछ रहा था। राइफल की नली द्वारा गोदा जाता हुआ, वह भी ध्यान देने की कोशिश कर रहा था। मेज यों काँप रही थी जैसे गर्म हवा में मरीचिका। उस तेल के बड़े लंप की रोशनी में बीस आदमी दीख रहे थे और उनमें से एक भी स्थिर न था।

'तुम क्या कर रहे थे ? कहाँ जा रहे थे ? क्या तुम्हारे अफसर भी हैं ?'

उसने यों ही थकी हुई-सी हालत में, अटकलपच्चू जवाब दिये। वे जेनरल मैस्सो से मिलने की कोशिश कर रहे थे। मैड्रिड में। हाँ,

उनके एक अफसर था। नाम ढूँढ़ने में बहुत दिक्कत हो रही थी। उसने कहा अफसर का नाम हंटले है। हाँ, वह अंग्रेज है।

और सवालात। उसे खुश्की और बेहोशी-से मालूम हुई। खतरनाक सवालात। चीजें जो कि वह जानता है और हरगिज नहीं बताना होगा। हरगिज नहीं। फर्ज करो वे तत्क्षण मौत की सजा देने कहें? क्या वह उसे सह सकेगा? क्या वह बोल देगा?

यहाँ पर अन्दर बहुत सर्दी थी। वह सोच रहा था कि क्या इंगलैण्ड में भी सर्दी होगी। शर्ली एक फर का कोट खरीदने जा रही थी। वह खुद उन बड़े, ऊँट के बाल के कोटों में से एक चाहता था। नफीस चीजें। लेकिन...

'इधर देखो,' उसने अचानक, अंग्रेजी में, विस्मित अफसरों से कहा—मेरे पास एक कोट है! लियो ने मुझे दिया!'

उस स्पेनिअर्ड ने मेज पर घनी आवाज के साथ हाथ पटका।

'इसे वहाँ ले जाओ और इसकी तलाशी लो,' वह कड़ककर बोला।

पहरेदारों के आने के पहले उसे याद हो आयी। अफसर के आदेश और पहरेदारों के उसके स्पर्श करने के बीच के एक सेकेंड में, उसकी चेतना जाग गयी। अगर उसकी तलाशी ली गयी, या अगर उसने सब कुछ बतला दिया, तो फिर सड़क का उसका सारा सफर, जिन्दगी के बीच उसका सारा सफर किस काम का? उसे लियो का कोट याद हो आया था और लियो का आखिरी प्लान।

वह चीखा, 'नहीं। इसकी जरूरत नहीं है। मैं बीमार हूँ, घायल। अब मैं एक पल भी खड़ा नहीं हो सकता। मैं तुम्हें बतला दूँगा। मुझे—मुझे इन नक्शों के साथ लुई की सराय तक निकल जाना था। देखो, उसके अंदर ही सब कुछ है। इसके बाद, तुम फिर कुछ न पूछोगे!'

उन्माद के साथ उसने अपने कोट के लंबे जेब में सर्र से हाथ डाला और एक मोटा, कागज में लिपटा और रबड़ की मजबूत पट्टी से कसा हुआ पार्सल निकाल लिया। शायद काँपती हुई उँगलियों से उसने रबड़ की पट्टी नोचकर फेंक दी।

कमरे का हर शख्स, जितनी कि हिम्मत कर सकता था उतने करीब मुँह लगाकर बड़ी उत्सुकता से उसे देख रहा था।

उसने जान-बूझकर पार्सल मेज पर, अफसरों के सामने रखा, और किसी ने ढीले कागज में उस उभरन को नहीं देखा, जहाँ पर रबड़ की दाबती हुई पट्टी से छूटकर ढेकली बम के बाजू से ऊपर को उठ गयी थी।

अगले तीन सेकेंड में हंटले बहुतेरी सड़कों से गुजरा।

इसके पहले कि धड़ाके की चमक और आवाज खत्म हो, एनरीक सड़क पर दौड़ रहा था और टॉमस भी उसके बगल में। सड़क पर अब पहरा न था, लेकिन एनरीक आँसुओं के कारण मुशकिल से दौड़ पा रहा था।

चुन चान ये

चुन चान ये एक नौजवान चीनी लेखक हैं। लड़ाई जब शुरू हुई तब वे तोकियो में थे। जापानियों ने उन्हें बहुत यातनाएँ दीं। चीन लौटने पर उन्होंने चीनी फौज में कुछ दिन काम किया और फिर जापानियों द्वारा अधिकृत चीन से निकलकर वे स्वतंत्र चीन चले गये जहाँ स्कूलों में अध्यापन ही उनका मुख्य कार्य रहा। सन् ४४ में वे चीन के सम्बन्ध में भाषण देने के लिए चीन की मिनिस्ट्री आफ इन्फ़र्मेशन की ओर से इंगलैंड गये। आजकल किंग्स कालेज, केम्ब्रिज में अँग्रेजी साहित्य पर कुछ खोज का कार्य कर रहे हैं। अँग्रेजी में उनकी पहली कहानी सन् ३८ में 'न्यू राइटिंग' में छपी। अभी हाल में उनका एक संग्रह 'द इगनोरंट ऐंड द फारगॉटेन' प्रकाशित हुआ है जिससे प्रस्तुत कहानी ली गयी है।

मेरे चाचा और उनकी गाय

उन दिनों जब मैं छोटा था, हम लोग मध्यचीन में यॉंग सी नदी की तराई में रहते थे और तब मैं अपने चाचा की गाय के साथ, जिससे वे खेत जोतने का काम लेते थे, बहुत खेलता था। बड़ी प्यारी गाय थी वह, मेहनती और सहनशील, जैसी कि गाँव की किसान औरतें होती हैं ; मगर वह उनकी तरह व्यर्थ की बकवास न करती थी। जब वह बहुत थक जाती तो खामोशी से सिर लटका लेती, धीरे-धीरे मुँह चलाती रहती, यहाँ तक कि उसके मुँह के इर्द-गिर्द फेन-सा इकट्ठा हो जाता। मगर वह कभी हल खींचने से जी न चुराती। हाँ, वह इतना जरूर करती कि बीच-बीच में सिर घुमाकर जमीन काटते हुए हल की मूँठ पकड़े चाचा को खामोश निगाहों से देख लेती। चाचाजी भी अच्छे किसान थे। फौरन समझ जाते कि उस निगाह का क्या मतलब है। उसकी गर्दन से जुआ अलग करके उसे छुट्टी देते हुए वे उसको मेरे सिपुर्द करते और कहते—अब जाओ, उसके साथ खिलवाड़ करो। और वह खुद धान के खेत की मेड़ के पास एक पत्थर पर बैठ जाते और अपना लम्बा-सा पाइप पीने लग जाते जो कि अजगर की शक्लवाली एक बहुत भद्दी बाँस की जड़ का बना था।

सबसे पहले मैं उसे नदी किनारे ले गया जहाँ उसने करीब दस मिनट तक खूब जी भर के पानी पिया। जब उसने धीरे-धीरे सिर उठाया तो उसके मुँह से पानी की बूँदें नदी में गिरीं और तब वैसी ही आवाज हुई जैसी कहीं दूर पर बोझा ढोनेवाले खच्चरों के गले की घंटियों के

बजने पर होती है। गाय ने बहते हुए पानी के बहाव के उस पार हरे मैदानों और पहाड़ियों को बहुत शान्तिपूर्वक देखा। हमारी तीन हजार मील लम्बी, वृद्धा याँग सी मध्य चीन की तराई में पहुँचकर बहुत फैल जाती है, उसका पाट बहुत बढ़ जाता है। यहाँ तक कि उस पार के मैदान और पहाड़ियाँ इस पार से अजब धुँधली धुँधली और कुहरे से ढँकी हुई दिखलायी देतीं। ऐसा लगता कि उसको उनकी चाह है, उनके लिए उसके मन में अजब कोई भाव है। एक बार जब वह पानी के उस पार देख रही थी तो वह बहुत तेजी से और देर तक बोलती रही थी।

चाचा खड़े हुए, फिर उसके पास पहुँचते हुए बोले—छी, यह सब पागलपन मत करो, उधर कोई साँड़ नहीं बैठा है। और उसके नरम नरम पुट्ठों को उन्होंने प्यार से थपथपाया।

'तुम्हारी तरह जल्दी से उत्तेजित हो जानेवाली भावुक स्त्री मैंने नहीं देखी।' यह कहकर उन्होंने उसे फिर जोत दिया और वह अपने आप हल खींचने लगी जैसे उसे अब और समझाने की कतई जरूरत न हो। अपनी स्वभावगत शान्ति और धीरज के साथ वह उस सदियों पुरानी धरती को हल से काट चली।

मेरे चाचा अच्छे किसान थे यानी वह धरती और जोते जानेवाले जानवर, दोनों को ठीक से समझते थे। जाड़े का मौसम बीत जाने पर वह खेत से मुट्ठी भर मट्टी उठाते, उसे अँगूठे से मलते और ध्यान से सूँघते। वह फौरन यह बात बता सकते थे कि मट्टी में नया जीवन आ गया है या नहीं। यानी यह कि बीज डालने चाहिए या नहीं। चावल बो दिये जाने पर वह पानी में की धरती के रंग को देख कर यह बता सकते थे कि उसे अभी और खाद की जरूरत है या नहीं—और सो भी ठीक ढंग की खाद। उनका कहना था 'सूअर की खाद बहुत तेज होती है। एक हिस्सा गोबर में दो हिस्सा पानी मिलाने से अच्छी खाद तैयार होती है।' ऐसे मामलों में उनकी राय शायद ही कभी गलत होती।

लेकिन चचा के पास अपना खेत कभी नहीं रहा। खेती-किसानी ही मेरे दादा की जीविका थी। वे भी बड़े समझदार थे और चाचा ही की तरह वे भी खेत को और उस जानवर को जिससे उन्हें काम लेना होता खूब अच्छी तरह समझते; मगर वे बड़ी गरीबी में जिये और मरे। उनकी जो मड़ैया थी वह भी ताबूत† खरीदने के वास्ते जमींदार के हाथ बेच दी गयी, वही जमींदार जिसका खेत वह पैदावार का तीन पाँचवा हिस्सा बतौर लगान के देकर जोतते थे। मड़ैया बिक जाने पर उनके पास फिर कुछ नहीं बचा बावजूद इसके कि वह बहुत ईमानदार और मेहनती किसान थे। यह एक रहस्य है जिसे आज तक मैं नहीं समझ पाया हूँ। बहरहाल, मैं यह कहना चाहता था कि मेरे चाचा को दस साल की उम्र से ही अपनी रोटी आप कमानी पड़ी। पहले कुछ दिन उन्होंने चरवाहे का काम किया, फिर खेतिहर मजदूर हो गये। पचीस साल की हाड़तोड़ मेहनत के बाद उनके पास इतना पैसा हो गया कि उन्होंने एक मेले में जाकर जहाँ गाय-बैल बिकने आते थे, एक बछिया खरीद ली। उन्होंने उसको उसी तरह पाला पोसा जैसे एक माँ अपने बच्चे को। वह सुबह उसी के साथ उठते और उसी के साथ उसी मड़ैया में सोने जाते। उसको उन्होंने बढ़ते हुए देखा, उसके रत्ती रत्ती मांस और हड्डी को। उसको उन्होंने आज की हालत तक बढ़ते देखा है, जैसी कि वह आज है—चिकनी चिकनी, रेशम की तरह, सीधी-सी और शर्मीली।

अब वह पैसेवाले थे—उनके पास अब अपनी गाय थी और कुछ बीघों की काश्त। लेकिन अब तक उन्हें बीवी न मिली थी, गोकि वह अधेड़ और अधेड़ क्या बूढ़े हो चले थे—हाड़तोड़ मेहनत करनेवाले किसान जल्दी बूढ़े भी तो हो जाते हैं।

उन्होंने अपने आपको समझाया, 'कोई बात नहीं, जब तक मेरे पास जमीन और यह गाय है तब तक मुझे बीवी मिलेगी और जरूर मिलेगी।'

---

† मुर्दे को जिस बकस में रखकर कब्र में गाड़ा जाता है।

और वह परिवार का स्वप्न देखने लगे, एक औरत का जो उनके लिए खाना पकाये, उनके साथ सोये, जमींदार के यहाँ अपमानित होने पर या कारिन्दे के हाथ पिटने पर निकले हुए आँसुओं को उनके गाल पर से पोंछ दे। और वह फिर एक लड़के का स्वप्न देखने लगे, एक लड़का जो उनके नाम को चलायेगा और उनके काम को, यही खेती किसानों का काम। 'मगर ओफ!' उनके मुँह से अनायास निकल गया, 'अगर मुझे एक बछिया खरीदने के लिए पच्चीस साल तक हाड़तोड़ मेहनत करनी पड़ती है, तो एक जोरू पाने के लिए और भी बीस साल...'

सोचकर वह काँप गये। और उनकी समझ में अच्छी तरह आ गया कि उन्हें और भी हाड़तोड़ मेहनत करनी पड़ेगी।

मगर वह अपने सपनों को पूरा करने लिए जमकर काम शुरू भी न कर पाये थे कि दक्षिण चीन में राष्ट्रवादियों और मजदूरों की क्रान्ति शुरू हो गयी। फिर वही क्रान्ति एक आँधी की तरह मध्यचीन के ऊपर से भी बह गयी और अपने साथ तमाम सामंतशाही जमींदारों और मजिस्ट्रेटों को भी उड़ा ले गयी जो गाँव में जालिम कारिन्दों को लगान और कर वसूल करने के लिए भेजा करते थे। साथ ही साथ यह नयी शक्ति गाँवों की ओर भी फैली।

एक दिन क्रान्तिकारी सेना का एक नौजवान आया और गाँव के चौक में खड़े होकर उसने किसानों से कहा—'तुम लोग नित नये कर के बोझ से नहीं दबना चाहते न, कि चाहते हो? तुम जमींदारों से अपना पिंड छुड़ाना चाहते हो न, कि नहीं?'

किसी को इन सवालों का जवाब देने का हौसला न हुआ क्योंकि किसी ने ऐसे सवाल पहले नहीं सुने थे।

'अच्छा तो तुम्हें उन लोगों से छुटकारा मिल जायगा।' नौजवान ने लोगों के मौन को स्वीकृति का लक्षण समझकर कहा।

मेरे चाचा ने सिर हिलाते हुए अपने आप से कहा, 'अच्छा तो है, बात कुछ बुरी तो नहीं है।'

'अच्छा तो तुम लोगों को चाहिए' नौजवान बोलता गया, 'कि अपनी हिफाजत के लिए किसान सभा बनाओ।'

'अरे नहीं भैया, वह न होगा,' चाचा ने सोचा, 'उसके लिए मेरे पास वक्त नहीं। खेत परती पड़े रहने दूँ? गैया को भूखों मरने दूँ?' अपनी बगल में खड़ी हुई गाय की ओर वह मुड़े और उससे उन्होंने पूछा, 'क्यों ठीक कहता हूँ न? अच्छा चलो प्यारी, कुछ काम किया जाय।'

और वह उसे लेकर खेत पर चले गये।

किसान सभा के लिए उनके पास वक्त हो चाहे न हो, उन्हें उसका सदस्य बना लिया गया। हर हफ्ता उनका आधा दिन गाँव के चौक में किसान सभा की जनरल मीटिंग में जाता, आधा दिन शहर में प्रदर्शनों में, जहाँ सभी बड़े बड़े जमींदार रहते थे और आधा दिन नौजवान क्रान्तिकारियों के भाषण सुनने में।

उन्होंने सोचा, अजब थकान की चीज है यह और वक्त बहुत बरबाद होता है। लेकिन और कुछ हुआ हो चाहे न हुआ हो, जमींदार डरकर भाग गये। बहुत से कर वसूल करनेवालों को गोली मार दी गयी। लिहाजा किसानों को पहले के मुकाबले में चिन्ताएँ अब कम हो गयी थीं। 'हाँ, हाँ...' चाचा को इस नये आन्दोलन की आलोचना के लिए कोई ढंग का कारण न मिलता था। 'जब तक अपनी गाय से अपने खेत पर काम करता हूँ...।'

मगर कुछ ही दिनों में बाहर से दूसरी दूसरी तरह की खबरें आने लगीं। चाचा की समझ में राजनीति की बातें तो कभी आती न थीं लिहाजा बेचारे बड़ी गड़बड़ में पड़ गये, उनकी समझ में बात ही कुछ न आती। सुनने में आया कि क्रान्तिकारियों की शक्ति दो टुकड़ों में बँट गयी है। यह भी सुनने में आया कि नयी सरकार ने बहुत से नये लोगों को निकाल दिया और अब पुरानी और नयी क्रान्तिकारी शक्तियों में लड़ाई चल रही है। इस खबर के कुछ दिनों के अन्दर ही किसानों को राइफलें पकड़ा दी गयीं और किसान सभा का नया नामकरण हुआ:

आत्मरक्षा वाहिनी ; और गाँव खुद एक बड़े परिवार के समान हो गया जिसमें जमीन पर सबका बराबर का हक था और जिसमें सब एक ही खेत पर सहकारी ढंग से काम करते थे। इस पंचायती खेती का सभापति था गाँव का एक हज्जाम और दो नौजवान क्रान्तिकारी उसके सलाहकार थे।

'गाँव की सारी जमीन अब हम सब लोगों की है,' हज्जाम ने गाँव के चौक में जोश के साथ चिल्लाकर कहा। हज्जाम के इस तरह चिल्लाने पर गाँव में सबको बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि पहले कभी इस तरह पब्लिक में चिल्लाने की उसकी हिम्मत न पड़ी थी और पड़ती भी कैसे, कितना गरीब था वह, रहने के लिए एक अस्तबल तक तो था नहीं उसके पास। 'सब कुछ अब हमारा है!'

'मेरी गाय नहीं, हज्जाम!' चाचा ने प्रतिवाद किया, उन्हें अब तक बोलनेवाले की नयी उपाधि, ग्राम पंचायत का अध्यक्ष, का पता न था। 'उसे मैंने तबसे पाला-पोसा है जब वह जरा-सी थी।'

चाचा की बात की किसी ने रत्ती भर भी परवाह नहीं की क्योंकि उसी वक्त पास की पहाड़ियों से गोलियाँ चलने की आवाज आयी।

'दुश्मनों की फौज हमारा सफाया करने आ रही है,' दो में से एक नौजवान सलाहकार ने श्रोताओं से कहा। 'अपनी हिफाजत के लिए हमें उनसे लड़ना पड़ेगा।'

और भीड़ हज्जाम के नेतृत्व में पागलों की तरह पहाड़ियों की ओर चलने लगी। मेरे चाचा हतसंज्ञ से चौक में अकेले खड़े थे। उनकी समझ ही में न आता था कि यह सब क्या हो रहा है। गाँव अब भी वही पुराना गाँव था, वही काले खपड़ेवाली छप्परें जिनमें बीच-बीच में फूस का छाजन दिया हुआ था, वही एल्म के पेड़, वही एक दरवाजे से लेकर दूसरे दरवाजे तक कँकरीले रास्ते, जो कि उनकी पुरानी से पुरानी याददाश्त से लेकर आज तक बिलकुल वैसे ही हैं। लेकिन लोग अब वैसे नहीं हैं। लोग बदल गये हैं। हज्जाम ही की तरह सभी लोगों पर एक तरह की वहशत सवार है। ऐसा क्यों हुआ? उन्होंने अपने से

सवाल किया, मगर उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। इसी दिमागी परेशानी की हालत में वह हिफाजत के खयाल से गाय को गाँव के दूसरे सिरे पर ले गये।

गोलियाँ करीब दो घण्टे तक चलती रहीं। फिर खामोशी छा गयी। गाँववाले वापस आ गये, चुप, कोई एक शब्द नहीं बोला। दोनों सलाहकार गायब हो गये थे। हज्जाम का भी पता न था। कोई कुछ बोलना न चाहता था। चाचा को बहुत अकेला अकेला-सा लगने लगा तो उन्होंने गाय को संग लिया और अपने हाथों से—बहुत बड़े बड़े हाथ थे उनके—जिन्होंने दस साल की उमर से खेत में काम करना शुरू कर दिया था, अपने बोये धान को देखने के लिए खेत पर चले गये। और वहाँ खेत के एक सिरे पर हज्जाम की लाश पड़ी हुई थी—उसे इतनी गोलियाँ लगी थीं कि शरीर चलनी हो गया था। यह क्या? उन्होंने कभी किसी को अपनी जमीन पर इस तरह मारे जाते नहीं देखा था। खून से मट्टी का रंग बदल जाता है, और मट्टी का असर फसल पर पड़ता है, चाचा ने सोचा। मैं अपने पुराने मुलाकाती बेचारे हज्जाम के खून से सिंचा हुआ अनाज कैसे खा सकता हूँ? उन्होंने अपने मन में कहा और इस तरह गाय की ओर ताका मानों उन्हें उससे जवाब मिलने की उम्मीद हो। गाय उनकी आँखों में अपनी भावशून्य आँखें गड़ाये उनके सामने खड़ी थी। दोनों एक दूसरे को देखते रहे, नीरव। फिर एकाएक चाचा को रोना आ गया, उनकी समझ में नहीं आया, क्यों? अपनी जिन्दगी में वे पहले कभी नहीं रोये थे, तब भी नहीं जब कि मेरे दादा मरे थे।

उनके वापस गाँव आने आने तक उस पर फौज का कब्जा हो चुका था। कमांडर ने कहा, 'यह डाकुओं का गाँव है। इसे आग लगा दो!' और कुछ सिपाही छप्परों पर जलती मशालें फेंकने लगे। सौभाग्य से फौजवाले ज्यादा देर गाँव में नहीं रहे। आत्मरक्षा वाहिनी का सफाया करने के लिए वे दूसरे जिलों को चले गये। गाँववाले ठीक मौके से आ गये और आग बुझा दी गयी, नहीं तो पूरा गाँव जलकर खाक हो गया होता। मेरे चाचा की छत भी एक चौथाई जल गयी थी मगर

उन्होंने फिर उसे पुआल-वुआल भरकर ठीक कर लिया। इस काम में वह करीब तीन दिन लगे रहे और ये तीनों दिन गाय पास की पहाड़ी पर रही और भूख के मारे सूखकर काँटा हो गयी। उसकी पसलियाँ निकली देख कर चाचा ने दर्दभरी चीख की-सी आवाज में कहा, 'अरे मेरी प्यारी।' और फिर खेत के चावल की बात सोचकर जो हज्जाम के खून से सना हुआ था और जिसे वह खा नहीं सकते थे, उन्होंने फिर उसी दर्दभरी चीख की-सी आवाज में कहा, 'अरे मेरी प्यारी।'

गाँववालों ने अपने घरों की मरम्मत का काम खत्म ही किया था और अभी यह सोचने की कोशिश कर ही रहे थे कि फिर से कैसे जिन्दगी शुरू की जाय कि छापेमारों का एक दस्ता गाँव में आया। वे सभी राइफलों से लैस किसान थे। उनके साथ कुछ और नौजवान थे जो कि देखने में पहले के सलाहकारों जैसे थे। उनमें से एक ने फिर गाँव के चौक में खड़े होकर गाँववालों के सामने भाषण दिया, कहा— 'पुराने सामन्तों और जमींदारों की फौजें हमें नष्ट कर डालने की कोशिश कर रही हैं; वे हमारे आन्दोलन का गला घोंटना चाहती हैं, हमारे ऊपर पुराने तौर-तरीके फिर से लादना चाहती हैं। हमें अपनी ताकत से अपने हितों की रक्षा करनी पड़ेगी।'

और गाँववाले भी छापेमार हो गये और सैनिक-शिक्षा पाने लगे। मेरे चाचा भी उनमें से एक हो गये। हर रोज वह दो तीन घंटे राइफल चलाना और निशाना साधना सीखते। हर बार जब बन्दूक उनके हाथ में होती तो उन्हें गोलियों से चलनी हज्जाम की याद आ जाती जो उनके खेत की एक मेड़ पर मरा पड़ा था, उनके हाथ काँपने लगते और दिल धड़कने लगता। करीब एक हफ्ते की ट्रेनिंग के बाद वह चीज उनसे और न बर्दाश्त हुई। वह ग्राम-पंचायत के नये सलाहकार के पास गये जो शहर का एक नौजवान आदमी था और बोले, 'साहब, मुझसे यह बन्दूकवाला मामला नहीं चलने का, बिलकुल नहीं चलने का। मेरा दिल बहुत पुराने ढंग का है; अब उससे लोगों को गोली मारना नहीं सीखा जाता।' और उन्होंने बन्दूक लौटा दी।

सलाहकार ने कहा, 'बहुत अच्छी बात है, हम किसी को सैनिक बनने के लिए मजबूर नहीं करते ।'

और तब चाचा गाय को लेकर चरागाह चले गये और घास पर लेट गये । उनका दिमाग अजब उलझन में था, कभी सूरज को देखते और कभी उस जानवर को जिसने घास चरने और जमीन जोतने के अलावा और कुछ नहीं जाना । वह उस खेत में काम नहीं करना चाहते थे जिसकी मट्टी पर इन्सान के खून के दाग हैं । मगर खेत में हल चलाना ही उनका पेशा था । उनके हाथ-पैरों को आराम का अभ्यास न था, उनके दिमाग को इस बात का अभ्यास न था कि वह धान की खेती के बारे में न सोचे और न ही उनकी आँखों को यों ही बेमतलब ताकते रहने का अभ्यास था, जैसा कि वह इस वक्त कर रही थीं । जिन्दगी में पहली बार उन्हें अपनी जिन्दगी पहाड़ मालूम हुई ।

कुछ दिन बाद वे फौजी फिर आये । गाँववाले उनसे लड़ने के लिए गये । इस बार बहुत भयानक लड़ाई हुई क्योंकि अब गाँववाले भी बन्दूक चलाना जान गये थे । और सचमुच वे बहुत खूब लड़े क्योंकि उन्हें लड़ाई का अनुभव भी मिल चुका था । और वे सब हज्जाम ही की तरह डटकर लड़ते रहे, जैसे सब पर वहशत सवार हो । मगर हमलावर फौजी अपनी मशीनगनों की मदद से गाँव के बहुत पास तक पहुँचने में कामयाब हुए । गोलियाँ छतों पर से सॉं-सॉं करती जा रही थीं और ट्रेंचमार्टर के गोलों से जमीन में गड्ढे हो जाते थे । चाचा पहाड़ी के पास की एक चट्टान की गुफा में घुसकर और कानों में अच्छी तरह उँगलियाँ ठूँसकर बैठ गये । वह उस लड़ाई की आवाज नहीं सुनना चाहते थे जिसका सिर-पैर कुछ उनकी समझ में नहीं आ रहा था । दिन खत्म होते-होते गाँववालों ने हमला करनेवालों को खदेड़कर उस जगह पर पहुँचा दिया जहाँ से उन्होंने अपना हमला शुरू किया था । मेरे चाचा गुफा से निकले—मानों कोई दुःस्वप्न देखकर अभी उठे हों । पहला काम जो उन्होंने किया वह था अपनी गाय को खोजना जिसे वह पहाड़ी पर चरती छोड़ गये थे । पहले तो वह उनको मिली नहीं ।

जब आखिर को उन्होंने एक झाड़ी के पास एक गाय की खून में सनी लाश देखी तब अँधेरा हो चला था। उसके पेट में भी वैसी ही बेशुमार गोलियाँ लगी थीं जैसी कि हज्जाम के लगी थीं। अगर उन्होंने उस गाय की लम्बी, चिकनी पूँछ न देखी होती तो वह हरगिज़ न कह सकते कि यह उन्हीं की गाय है क्योंकि उन्हीं की गाय तो थी जो हमेशा उन्हें अपने पास आते देखकर अपनी लम्बी, चिकनी पूँछ धीरे धीरे हिलाती थी। चाचा ने रोना चाहा मगर रो नहीं सके। वही गाय जो कभी इतनी प्यारी, इतनी सीधी और इतनी शर्मीली थी अब कितनी बदसूरत दिख रही थी! तब भी उन्हें ऐसा ही लगा कि जैसे वह उन्हीं की सन्तान हो, उन्हीं की सृष्टि जिसे उन्होंने अपने हाथ से खाना खिलाया हो और जो उन्हीं के देखते देखते बड़ी हुई हो।

उस रात चाचा की एक पल को भी आँख न लगी। वह उस गाय के बारे में सोचते रहे जो उन्होंने पच्चीस साल की कड़ी मशक्कत की कमायी से खरीदी थी; उस खेत के बारे में जिसमें वह चावल पैदा होगा जिसे वह खा नहीं सकेंगे; उस औरत के बारे में जो अब उन्हें शायद कभी न मिलेगी...वह पौ फटने तक इसी तरह चित लेटे रहे, इन्हीं तमाम बातों के बारे में सोचते हुए, आँखें खुली हुईं और उन्मत्त-सी। फिर वह पागल आदमी की तरह कूदकर खड़े हुए और सीधे गाँव की कौंसिल में गये।

उन्होंने सलाहकार से कहा, 'मुझे एक बन्दूक दीजिए, साहब!'

'किस लिए?'—नौजवान ने पूछा।

'लड़ने के लिए।'

'यह लड़ने की बात तुमने ठीक से तय कर ली है न?' नौजवान ने विश्वास न करते हुए पूछा क्योंकि उसे यह बात याद थी कि चाचा ने पहले सैनिक शिक्षा लेने से इन्कार कर दिया था।

'बिला शक!' चाचा ने दृढ़ स्वर में कहा और फिर उनका स्वर धीमा हो गया मानों अपने आप से बात कर रहे हों। उनकी दुखी आँखें उनके खूब लम्बे चौड़े किसानी हाथों पर गड़ी हुई थीं। उन्होंने

उसी धीमे स्वर में कहा, 'यह अशांति का युग है। जमीन नहीं, गाय नहीं, औरत नहीं......'

एक पल के लिए नौजवान ने चाचा के, मौसम की मार खाये हुए रूखे भूरे चेहरे को देखा जो कुछ उद्विग्न-सा तो जरूर दिखता था मगर जिस पर गंभीरता और ईमानदारी लिखी हुई थी जैसी कि सभी किसान चेहरों पर लिखी होती है। इस एक पल के मुआयने के बाद नौजवान ने तय किया कि उनको बन्दूक दी जानी चाहिए।

दोपहर को फिर हमला हुआ। तमाम गाँववाले इकट्ठा हुए और उनका मुकाबला करने गये। मेरे चाचा सबसे आगे गये, वैसे ही उत्तेजित और उन्मत्त जैसा कि वह हज्जाम था।

लड़ने के लिए कोई मोर्चा तो था नहीं क्योंकि न तो कोई खाइयाँ ही थीं, और न कँटीले तार। किसान लड़ाकों ने पेड़ों और चट्टानों के पीछे से और जौ के खेतों की सूखी गड़हियों में से लड़ना शुरू किया। वे गोलियाँ कम चलाते थे। जब कि हमला करनेवाले सैनिक, जिनको न तो उस जगह के भूगोल का पता था और न छिपने की जगहों का, बहुत पास आ जाते तभी ये गाँववाले गोली चलाते। हमला करनेवाले लगभग सभी किस्मत के मारे सैनिक जो पास आ जाते, बंदूक की धायँ के साथ गिर पड़ते, कुछ की दर्दभरी चीख निकलती, कुछ की न निकलती मगर बचता शायद ही कोई।

मेरे चाचा एक छोटी-सी पहाड़ी पर एक कब्र के पीछे छिप गये। वही अकेले थे जो बेतहाशा बेसिर पैर गोलियाँ चलाये जा रहे थे; राइफल की धायँ धायँ में वह सारी सुध-बुध खो बैठे थे। बंदूक की नली को वह अपने हाथ में लपकता देखते और फिर कुंदा कंधे पर चोट करता। इसी चीज से उन्हें नशा सा हो गया था। मगर उनके इस तरह बेसिर-पैर ढंग से गोली चलाने से दुश्मन को उनकी छिपने की जगह का पता चल गया। तभी अचानक एक सैनिक उनके सिर पर बंदूक का निशाना साधे उनसे दस गज की दूरी पर दिखायी पड़ा। उन्होंने भी अपनी राइफल का निशाना उस पर साधा। मगर उस

सैनिक का चेहरा भी उन्हें इतना रूखा, भूरा, मौसम की मार खाया हुआ दिखा कि अपनी वर्दी को छोड़कर और किसी बात में वह उन्हें गाँववालों से अलग न जान पड़ा। 'यही वह दुश्मन है जिसे मुझको मारना है ?—'चाचा ने अपने आपसे सवाल किया। इसके पहले कि उन्हें इस सवाल का जवाब मिले उनके विरोधी ने गोली दाग दी। और वह गिर पड़े।

शाम के वक्त जब हमला करनेवालों को पीछे ढकेला जा चुका था और लड़ाई खत्म हो गयी थी, घर को लौटते हुए गाँववालों को मेरे चाचा कहीं नहीं दीख पड़े। लड़ाई के मैदान की अच्छी तरह छानबीन करने पर एक पहाड़ी के पास उन्हें एक लाश मिली जो मेरे चाचा से बहुत मिलती जुलती थी। लेकिन निश्चित स्वर में कोई कुछ नहीं कह सकता था क्योंकि सिर का आधा हिस्सा बिलकुल उड़ गया था।

आखिरकार एक बुड्ढे किसान ने जो चाचा का पड़ोसी था, धीरे धीरे बुदबुदाकर कहा, 'वह देखो, कैसे बड़े बड़े हाथ हैं ! उसे छोड़ और कौन हो सकता है।'

पियोतर पावलेंको

उसे सबसे पहले अपने उपन्यास 'द बैरिकेड्स' के कारण ख्याति मिली। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि १८७१ का पेरिस कम्यून है जब कि पेरिस की जनता ने क्रान्ति करके कुछ काल को अपना शासन स्थापित कर लिया था। 'इन द ईस्ट' शीर्षक उपन्यास में सोवियत रूस और साम्राज्यवादी जापान की लड़ाई का चित्र है। सोवियत सरकार ने साइबेरिया में क्या-क्या रचनात्मक कार्य किये हैं, इसका बड़ा जीता जागता चित्र उसने उपन्यास में दिया है। जिस वर्ष यह उपन्यास प्रकाशित हुआ था, उस वर्ष सोवियत में उसी की सबसे अधिक बिक्री हुई थी।

लेखक की जन्मतिथि नहीं मिल सकी।

लेखक जीवित है और 'सोवियत लिटरेचर' में बीच बीच में उसकी रचनाएँ पढ़ने को मिल जाती हैं।

जिन्दगी

वह अपने चार साल के लड़के को साथ लिये सड़क पार कर रही थी। दो गाड़ियाँ चौराहे के दोनों तरफ, रास्ता रोके रुकी पड़ी थीं। वह ठहर गयी जिसमें गाड़ियाँ निकल जायँ।

यकायक लड़का खुशी के मारे हल्ला मचाता हुआ माँ से अपने को छुड़ाते हुए गाड़ियों के सामने से जो अब चलने लगी थीं, सड़क पार करने के लिए तेजी से दौड़ा।

माँ चिल्लायी। उसकी चीख इतनी डरावनी थी कि दोनों गाड़ियों के ड्राइवरों ने एक साथ अपने अपने ब्रेक लगा दिये। गाड़ियों के भीतर के लोग खिड़कियों में से बाहर को देखने लगे कि आखिर क्या मामला है और पाँवदानों पर लटके हुए लोग पहियों के नीचे। चारों तरफ से औरतें चिल्ला पड़ीं, 'कैसी अजीब माँ है! उसे अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए।'

वह 'कोलिया! कोलिया!!' चिल्लाती हुई, घबराहट की मूर्त्ति बनी दोनों गाड़ियों के बीच की तंग जगह की ओर दौड़ी और उसका समूचा चेहरा पलक भाँजते दुखी और संत्रस्त हो गया।

'कैसा है तुम्हारा लड़का? नीली जाकट, बाल भूरे?' वह बोलने में असमर्थ हो रही थी। उसने चेहरे पर ढुलकते हुए पसीने को पोंछते और एक हाथ गले पर रक्खे हुए, सर हिलाया और अपने चारों तरफ के लोगों को भय से विस्फारित आँखों से देखा।

'वह तो नहीं है तुम्हारा लड़का? वह देखो! एक फौजी आदमी

ने झपटकर उसे उठा लिया था। बहुत करके उसे चोट आ गयी है...'

'कहाँ? कहाँ?' और वह दौड़ी जिधर लोगों ने इशारा किया था।

एक लंबा हवाबाज जो सर से पैर तक इस कदर धूल में सना हुआ था कि खाकी वर्दी पहने जान पड़ता था, कोलिया को गोद में लिये उसे छाती से लगाता और चूमता हुआ सड़क पर चला आ रहा था। लड़का मगन था और हँसता खिलखिलाता हवाबाज के कान खींच रहा था। उसे किसी तरह की चोट लगी नहीं जान पड़ती थी। और स्पष्टतः उसे हवाबाज की गोद में मजा आ रहा था।

'साथी हवाबाज, साथी हवाबाज तुम पागल हो क्या?' उनके पीछे-पीछे दौड़ते हुए माँ चिल्लायी। लेकिन वह बढ़ता ही गया। साफ ही था कि उसने एक भी शब्द नहीं सुना।

'कोलिया, मेरा नन्हा कोलिया,' वह बुदबुदाता रहा जैसे नींद में हो, 'अबे शैतान तू यहाँ कैसे आ गया?'

लड़का उसे कुछ बतला रहा था।

'वाह रे मजाल!' माँ ने हवाबाज़ की बाँह पकड़कर उसे रोका। उसे गश आने ही वाला था।

वह चिल्ला-सी उठी, 'मेरे लड़के को तुम कहाँ ले जा रहे हो? वाह रे वाह, हद हो गयी! उसे फौरन छोड़ दो! नहीं तो मुझे फौजी स्वयंसेवक को बुलाना पड़ेगा!'

हवाबाज ने अचंभे के साथ उसकी ओर ताका।

उसने औरत से पूछा, 'आप क्या चाहती हैं?'

भीड़ इकट्ठा होने लगी।

'तुम मेरे लड़के को कहाँ लिये जा रहे हो? वाह रे वाह, हद हो गयी!'

'तुम्हारा लड़का? यह तो मेरा लड़का है', और मानों अपने को आश्वस्त करने के लिए हवाबाज़ ने अचरज के साथ लड़के को देखा, 'तुम किसके लड़के हो कोलिया?'

लड़के ने जवाब दिया, 'तुम्हारा, पिताजी !' और माँ की तरफ हाथ बढ़ाते हुए उसने कहा, 'और यह अम्माँ ।'

कोलिया ने समझाया, 'मेरी असली अम्माँ कब्र में है। जर्मन जब आये तो उन्होंने उसे गोली मार दी और तब काकी लीपा ने मेरी आँखें अपने हाथों से ढँक ली थीं, लेकिन पीछे मैंने भी फिर देखा......'

'बस कोलिया, बस !' पीड़ा के साथ उसने एक लम्बी साँस ली और औरत की ओर मुड़ते हुए पूछा—तो तुमने इसे गोद ले लिया है। क्या इस बात को बहुत दिन हो गये ?'

वह खड़ी थी वहाँ, उसकी आँखें अधमुँदी थीं और वह अपने ओंठ काट रही थी मानों किसी तेज पीड़ा को दबाने की कोशिश कर रही हो। गले से लगा हुआ उसका हाथ अब भी काँप रहा था।

हवाबाज ने कहा—'सुनो, अपने को काबू में करो। अब हमें करना क्या है ? अच्छा होता कि हम दोनों सारी बातों पर गौर कर लेते... तुम कहाँ जा रही थीं ?'

'घर।'

'अपने मकान !'

'और नहीं क्या, अपने घर ही तो।' और उसने कातर होकर लड़के की ओर देखा और सिर हिलाया।

'अच्छा चलो। सचमुच मालूम नहीं मैं कैसा दीखता हूँ और आ फँसा यहाँ इस उलझन में, लेकिन खैर कोई बात नहीं।'

भीड़ ने धीरे-धीरे उनके लिए रास्ता कर दिया।

'कोई बात नहीं...इस ओर ..कोलिया, तुम्हारी रूमाल कहाँ है ? नाक पोंछ लो...दायें को...लेकिन तुम कानून के खिलाफ कोई काम नहीं कर सकतीं। तुम्हें हर्गिज न करना चाहिए। हर्गिज ऐसा पागलपन न करना चाहिए।'

उसने कुछ कहा नहीं। वह उसके पीछे-पीछे चली जा रही थी। उसके चेहरे पर अपराधी की-सी मुद्रा थी मानों वह कोई ऐसा जुर्म करते पकड़ी गयी हो जिसके लिए उसको बहुत सख्त सजा मिलेगी।

उन्हें कुछ नहीं मालूम कि वह किस तरह मकान पर पहुँच गये।

छोटा-सा कमरा था। ज्यादा चीजें उसमें न थीं, सिर्फ एक सोफा, एक छोटी मेज और एक कोने में सूटकेस पर रखा हुआ एक तेल का स्टोव।

बहुत से पुराने खिलौने खिड़की में इधर-उधर बिखरे पड़े थे। हवाबाज ने अपने बेटे को फर्श पर उतार दिया।

'अच्छा अगर आप बुरा न मानें तो मैं अपना परिचय दे दूँ। मैं मेजर ब्राजनेव हूँ।'

'मेरा नाम रोगाल्चुक है। तुमसे मिलकर मैं बहुत खुश हुई हूँ। मुझे उम्मीद है कि हमारे बीच कोई गलतफहमी न होगी।'

'किस तरह की गलतफहमी?' कठोरता से देखते हुए उसने अचरज के साथ पूछा। उसको वह कुछ अरुचिकर-सी प्रतीत हुई।

वह औसत से कम लम्बी और जरा दुबली औरत थी। उसका चेहरा काफी अच्छा था गोकि उसके मुँह के आसपास की भारी रेखाओं ने उसे खराब कर दिया था। उसके आश्चर्यचकित चेहरे पर बेहद उदासी और दुःख की मुहर थी।

उसने सर के चारों ओर अपने लंबे सुनहले बालों की वेणी लपेट रक्खी थी। उसकी बाहें पतली और हल्का नीला रंग लिये हुए थीं। निर्जीव।

हवाबाज ने कहा, 'आओ, बैठो। आओ हम लोग बातचीत कर लें। मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं।'

'कामरेड ब्राजनेव, अच्छा होता कि पहले तुम नहा धोकर कपड़े वगैरह बदल डालते, क्यों? कहो तो एक प्याला चाय...'

औरत की आवाज से मेजर को लगा कि वह उसे रोकना चाहती है और उससे किसी चीज की दरख्वास्त करना, भीख माँगना चाहती है।

'नहीं, आओ हमलोग पहले बातचीत खत्म कर लें।'

कहानी शुरू करने के पहले वह कमरे में से चुपके से निकलकर

एक पड़ोसी के यहाँ चली गयी और दालान की आवाज़ों से माजनेव ने अन्दाज़ा लगाया कि केतली चढ़ा दी गयी है।

रोगाल्चुक ने कहा, 'मैं लेनिनग्राद में रहा करती थी। मेरा पति जनवरी में कहना चाहिए ठीक मेरे सामने ही मारा गया। और मैं अकेली हो गयी। मेरे ऊपर यह चोट इतनी बड़ी थी कि मैंने समझा अब और न जी सकूँगी। मेरे पास एक ऐसे जीव का रहना अनिवार्य था जिसकी जिन्दगी, जिसका स्वास्थ्य...जिसका सुख मुझ पर निर्भर करता हो। मैंने एक अनाथ को गोद लेने का निश्चय किया। यों तो इन अनाथों की अब कमी नहीं। लेकिन मुझे फौरन ऐसा कोई न मिला। मुझे ऐसे किसी की खोज थी जो मेरे पति से मिलता-जुलता हो। यह सच है कि बच्चे वक्त के साथ बदलते जाते हैं लेकिन मुझे कम से कम एकाध महीने के लिए इस बात की जरूरत पड़ी कि मैं अपने मृत पति के सौम्यरूप को किसी बच्चे के मुख-मण्डल में आरोपित करूँ और साथ ही मैं यह भी चाहती थी कि उस लड़के का नाम वही हो जो मेरे पति का था। कोलिया को पहले-पहल देखने पर ही मैं झट जान गयी कि यही मेरा लड़का है जिसकी मैं खोज कर रही थी, सदा के लिए मेरा।'

मेजर ने कहा, 'लेकिन वह अनाथ तो है नहीं। ऐसा समझना गलत है।'

'हाँ पिताजी मैं अनाथ हूँ,' कोलिया बीच में बोल पड़ा, 'काकी लीपा को भी जर्मनों ने मार डाला।'

अपनी जिन्दगी की कहानी गौर से सुनता वहीं बैठा था वह, ऐसा नन्हा-सा, पीला, चेहरे पर पतली नीली शिराओं की रेखाएँ, जो चमड़ा के अन्दर से साफ झलक रही थीं।

'अनाथालय में मुझे बतलाया गया था कि कोलिया की माँ मर चुकी और उसका बाप मोर्चे पर मारा गया और उसके सारे निकटतम संबन्धी भी या तो मारे गये या अस्पताल में घायल पड़े थे। मैंने झटपट सारी कानूनी कार्रवाइयाँ खत्म कीं और उसे गोद ले लिया।'

मेजर ने कहा, 'उस वक्त मैं नहीं मारा गया था। वह मेरे नाम का एक दूसरा आदमी था।'

रोगाल्चुक ने कमरे में चारों तरफ घबरायी हुई नजर दौड़ायी जैसे कुछ खोज रही हो।

लड़के ने पूछा, 'क्या खोज रही हो अम्माँ?'

'मेरा हैंडबेग कहाँ है, भैया?'

'अम्माँ, फिर तुम्हें कुछ नहीं सूझ रहा है। है तो वह, कुरसी पर। वह रहा कुरसी पर।'

मेजर ने अपनी उँगलियों की पोर से मेज पर खटखट करते हुए चोरी-चोरी अपने बेटे को देखा।

उसे बहुत बुरा मालूम हो रहा था कि उसका लड़का इस अजनबी औरत को 'अम्माँ' कहकर पुकार रहा है, लेकिन उसने अपने में इतनी ताकत नहीं महसूस की कि इसके लिए उसे डाँटे।

रोगाल्चुक ने हैंडबैग में से अपना पासपोर्ट निकाला और मेजर के सामने रख दिया।

'मुझे दृढ़ विश्वास था कि मोर्चे पर काम आये हुए एक लाल फौज के कमांडर के लड़के को गोद लेने का पूरा अधिकार है। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि मेरी शिक्षा-दीक्षा और मेरी जीविका लड़के को पालने-पोसने के लिए काफी है... मेरा पति भी लाल फौज का कमांडर था।'

उसकी आवाज धीमी लेकिन मोहक थी और उसे सुनते हुए ब्राजनेव को उस दूसरी स्त्री की याद हो आयी—जिसकी बात-बात में हाजिरजवाबी का रंग था, जो ऐसी ही दुबली-पतली लेकिन इससे कहीं ज्यादा ताकतवर थी—जिसे अब वह कभी न देखेगा, उसकी पत्नी, जिसके साथ उसका सुख, उसकी आशाएँ, उसकी समूची जिन्दगी ही बँधी हुई थी।

उसे लगा कि अपनी पत्नी के मर जाने से स्वयं उसके अपने व्यक्तित्व का एक अंश नष्ट हो गया है, जैसे उसका कवच टूट गया हो और

उसने अपनी अमरता खो दी हो। अब उसका कोई भविष्य नहीं है, मानों उसके साथ साथ वह अपने विशाल, असीम जान पड़ने वाले भविष्य के एक अंश से वंचित कर दिया गया है। एक पड़ोसी ट्रे में रखकर दो प्याले चाय और एक छोटी रकाबी में शीरा ले आया। आजनेव ने बेखबरी की-सी हालत में एक प्याला उठाया और दो चम्मच शीरा डाल चुकने पर उसे खयाल आया कि वह गलती कर रहा है। कमरे में शांति का साम्राज्य था। रोगाल्चुक को जो कुछ कहना था, वह कह चुकी थी।

'पापा, पापा, यह तुमने क्या किया? और सो भी इतने बड़े होकर'—और कोलिया ने इस बात पर बहुत खुश होते हुए ताली बजायी कि उसने अपने पिता को एक ऐसा काम करते पकड़ लिया था, जो उसे न करना चाहिए था, 'और अब अम्माँ तुम्हें डाँटेंगी तो देखना! तुम यह नहीं जानते कि शीरे को रोटी पर लगाना चाहिए?'

उसका पिता निरीह भाव से मुसकरा दिया।

'अरे मैंने उसमें अपना पैर थोड़े ही न डाल दिया है? मालूम होता है मुझे इन बातों की आदत अब नहीं रही।...भई माफ करो, अब फिर ऐसी गलती न होगी। थोड़ा-सा अपनी चाय में डाल लो, कोलिया।'

शिक्षक की सी आवाज में लड़के ने कहा, 'ऐसा न करना चाहिए; पहले मुझे अपना दलिया खाना है, उसके बाद चाय लूँगा।'

रोगाल्चुक ने भावावेश से काँपती हुई आवाज में कहा, 'स्पष्ट है तुमने मेरी बात नहीं सुनी। अच्छा सुनो: कोलिया उतना ही मेरा बेटा है जितना कि तुम्हारा। कानून की नजरों में वह मेरा बेटा है। मैंने उसे गोद लिया है।'

'तुम्हारे गोद लेने का क्या मतलब है? मुझे कहना होगा...।'

'निकोलाई आजनेव वह जरूर है लेकिन उसका नाम मेरे पासपोर्ट पर दर्ज है।'

मेजर खड़ा हो गया और कमरे में टहलने लगा। उसने कहा, 'क्या अजीब मुसीबत है। आखिर हम करें क्या ? और हमें किसी निर्णय पर फौरन पहुँचना है। और हमें यह निर्णय बुद्धिमानी से करना चाहिए। सबसे पहले तो जिस लाड़प्यार से तुमने मेरे लड़के की देखभाल की उसके लिए मैं तुम्हें हार्दिक धन्यवाद देना चाहता हूँ। तुम मेरी कृतज्ञता का अंदाज नहीं लगा सकतीं और उसे अपना बनाने के लिए तुम जिस तरह लड़ रही हो उसने मेरी कृतज्ञता को और भी बढ़ा दिया है। अगर मैंने उसे एक आश्रयहीन, अनाथ की शक्ल में पाया होता तो कह नहीं सकता मैं क्या कर बैठता। सचमुच वह कैसी मुसीबत होती।...... अच्छा लड़ाई बाद मेरे वापस लौटने पर हम क्या करेंगे ?'

रोगाल्युक ने दृढ़ता से जवाब दिया, 'अभी से उसके बारे में सोचकर क्या होगा। वक्त आने पर सवाल हम इस तरह हल करेंगे कि लड़का फायदे में रहे, नुकसान में नहीं, और करना ही क्या है।'

लड़का आज उसे जैसा प्यारा लग रहा था, वैसा पहले कभी न लगा था। वह इतना परीशान लग रहा था कुर्ती काटकर बनायी हुई अपनी उस थेगड़ी-लगी कमीज में। वह समझ गया कि उसकी किस्मत का फैसला किया जा रहा है और उसे शायद डर था कि ये बड़े लोग ठीक से फैसला न करेंगे।

मेजर ने एक लम्बी साँस ली।

'तुम्हारी आमदनी का क्या हाल है—काफी है दो के लिए ?'

'मुझे कोई खास शिकायत तो नहीं।'

रोगाल्युक की मुद्रा जरा गम्भीर हो गयी, उसका चेहरा दीप्त हो उठा।

'और कपड़ों का—कुछ मुशकिल तो होगी आजकल ?'

'जरूरी चीजें तो उसके पास हैं ही। अलबत्ता शान शौकत के अब दिन नहीं रहे। और फिर वह कोई बिगड़ा हुआ लड़का तो है नहीं, बहुत संजीदा तबीअत का है।'

'अपनी तनख्वाह से तो खैर मैं तुम्हें कुछ जरूर दूँगा। लेकिन उससे भी ज्यादा जरूरी है कि तुम फौज और बेड़े के स्टोर में भर्ती हो जाओ। हाँ तो यही ठीक रहा। पेंसिल है न, होगी तो? मेरे मैदानी डाकखाने का नम्बर लिख लो।'

रोगाल्चुक ने पता लिख लिया।

'क्यों, अब हाथ मुँह धो डालो। लो इस तसले में पानी है', उसने कहा।

'शुक्रिया। मैं तुम्हारा वक्त तो नहीं ज़ाया कर रहा हूँ, क्यों?'

'नहीं। आज मुझे काम पर नहीं जाना है।'

'अम्माँ ने आज मुझे सिनेमा ले चलने कहा था। पापा, तुम भी चलो न', कोलिया ने कहा।

'नहीं बेटा, मैं न जा सकूँगा। सिनेमा तक मैं तुम्हारे साथ जरूर चलूँगा, लेकिन देखने का मेरे पास वक्त नहीं। मुझे फौरन जाना है।'

रोगाल्चुक कमरे के बाहर चली गयी जिसमें मेजर को कोई उलझन न महसूस हो। मेजर ने कमर तक कपड़े उतारे और हाथ मुँह धोया। फिर उसने मेज पर पड़े हुए रोगाल्चुक के पासपोर्ट को उठाया और उसे उलट-पलटकर गौर से देखने लगा। वह उसे पढ़ ही रहा था कि वह कमरे में दाखिल हुई।

'तो तुम ज़िनाइदा ऐंतोनोवना हो' उसने किंचित शरमाते हुए कहा— मैं, अच्छा देखो...मेरा नाम वासिली वासिलियोविच है। मेरी उम्र छत्तिस है। अच्छा हो कि हम एक दूसरे को जान लें। तुम्हारा क्या खयाल है?'

'मैं भी यही सोचती हूँ', उसने मुसकराते हुए कहा।

मेजर ने ब्रुश से वर्दी को साफ किया और रूमाल निकाल कर अपनी वर्दी में टँके तमगों पर पड़ी धूल को पोंछा।

'अच्छा, अब चलना चाहिए।' उसने कहा।

वे लड़के की उँगली थामे साथ साथ बाहर निकले।

पास पड़ोस के सभी लड़के मेजर को गौर से देख रहे थे—लंबा,

ताम्रवर्ण, सीने पर दो तमगे टँके हुए। वह रुककर मुँहकी बायें उस ओर ताक रहे थे। कोलिया दोनों के बीच चल रहा था, फूला-फूला, मगन।

मोटर के अड्डे पर मेजर ने बेटे को उठा लिया और चूमा, उसके मुँह को, गले को और पतली-पतली बाँहों को।

'ज़िनाइदा एँतोनोवना का कहना मानना और उन्हें प्यार करना', उसने कहा।

'किसे?' लड़के ने पूछा।

'अरे, माँ को और किसे...'

'इन्हें...'

'क्या कहते हैं, इन्हें प्यार न करूँगा! आप इन्हें प्यार करते हैं?'

जिनाइदा एँतोनोवना पीली पड़ गयी और अनजाने ही उसने अपने को जैसे सिकोड़-सा लिया।

वह बुदबुदायी, 'कोलिया, मेरा कोलिया, डैडी को कह कि तुझे चिट्ठी लिखा करें।'

'पापा, तुम हमें चिट्ठी तो लिखते रहा करोगे, न?'

'हाँ हाँ, जरूर। और तुम भी मुझे लिखना, कोलिया। लेकिन भूलना मत, तुम्हें नेक फरमाबरदार लड़का बनना है!'

'अम्माँ तुम्हें चिट्ठी लिखेंगी और मैं तुम्हें तसवीर बनाकर भेजूँगा।'

'बहुत खूब, अच्छा, शुक्रिया...बाकी बातें अभी यहीं तक रहने दो। विदा, ज़िनाइदा एँतोनोवना' और उसने पहली बार सीधे-सादे खुले दिल से रोगाल्चुक की आँखों में आँखें डालकर देखा।

'तुम अम्माँ को चूमते क्यों नहीं? तुमने मुझे चूमा लेकिन अम्माँ को नहीं। ऐसा क्यों, पापा?'

आजनेव ने रोगाल्चुक को अपनी बाँहों में भरा और उसके माथे को हल्के से चूम लिया।

'तुम्हारा बहुत आभारी हूँ, प्यारी जिनाइदा, मेरा हार्दिक धन्यवाद लो।'

वह कूद कर एक मोटर पर चढ़ गया और गोकि उसमें काफी जगहें खाली थीं वह पाँवदान पर खड़ा-खड़ा बहुत देर तक उस अनजान स्त्री की दुबली-पतली आकृति को देखता रहा और देखता रहा उसके पास खड़े उस दुबले-पतले लड़के को।

ग्राज़िया देलेद्दा

जन्म ९ अक्तूबर १८७५

मृत्यु १५ अगस्त १९३६

जन्म नुओरो, सार्डिनिया, इटली में हुआ। अल्प वयस में ही लिखने की ओर उसका झुकाव दिखने लगा था। उस समय उसने सार्डिनिया के लोगों के जो चित्र खींचे थे, उनसे उसके शिक्षकगण बहुत प्रभावित थे और इटली के पत्रों में अपनी रचनाएँ छपाने के लिए उसको प्रोत्साहित करते रहते थे। पन्द्रह बरस की उमर में ग्राज़िया ने अपना पहला उपन्यास 'फ़िओर दि सारदेन्या' लिखा जो कि तत्काल रोम में प्रकाशित हो गया। जब उसकी दूसरी कहानी 'एलियस पोरतोलू' १९०० में छपी तो शीघ्र ही उसका अनुवाद कई यूरोपीय भाषाओं में हो गया। इसी समय वह लेखिका के रूप में स्थायी तौर पर रोम में रहने लगी।

उसने तीस से ऊपर उपन्यास और अनेक कहानियाँ लिखी हैं। 'ऐशेज़ आफ़्टर द डिवोर्स' और 'नॉस्टैलजिया' उसकी दो कृतियाँ हैं जिनका अंग्रेजी में अनुवाद हुआ है। La fuga in Egitto शीर्षक उपन्यास पर उन्हें सन् २६ में नोबेल पुरस्कार मिला, 'उनकी उदात्त आदर्शवादी रचनाओं के लिए,

जिनमें उन्होंने इतने सजीव रूप में अपनी मातृभूमि के जीवन को अंकित किया है और इतनी सहानुभूति और गम्भीरता से सामान्य मानव समस्याओं को समझने का यत्न किया है।'

माँ

एक चौड़ी नदी के बीच एक छोटा-सा टापू उभरा हुआ था ; और उस टापू के बीच एक नन्हीं-सी झील, झील क्या, एक हरिताभ चाँदी के रंग की तलैया थी । वह चारों तरफ चिनार और विलो, जंगली नबूल की झाड़ियों और लंबी, नरम, मखमली और विलक्षण बैंजनी रंग के सूरजमुखी से जड़ी हुई घासों से घिरी हुई थी ।

समस्त प्रकृति, इस छोटी-सी तलैया में, एक चित्र में की तरह प्रतिबिंबित, और और भी सुन्दर, अपरूप दीख पड़ती थी ।

दिन के वक्त पतझड़ के दिन के आसमान की बदलते हुए रंग की झाँइयों और चपल बादलोंवाली रंग-स्थली ; और रात को, बड़ा-सा, सुर्ख चाँद और जगमगाते तारे, झील के गहरे आइने में से झाँकते हुए चिनार के काँपते हुए भूत, उस जगह में एक अजीब आकर्षण का वातावरण पैदा कर देते थे ।

एक शाम को, शिकारी ने, जिसने अपनी नाव वीराने टापू के भुरभुरे साहिल से बाँध दी थी, और अछूती बालू पर चोर कदम के निशानों का रास्ता बनाता गया था, उस बड़े सुर्ख चाँद को चिनारों के बीच से निकलते हुए देखा, और फिर, उससे भी अधिक सुन्दर रूप में उसने उसे छोटी तलैया के पानी में देखा । वह एक पल के लिए रुका, उसकी आँखें उस चमकदार पानी की तसवीर पर गड़ी हुई थीं, एक अज्ञात संसार और सुदूर रहस्यमय आकाश से मुग्ध, जो ऐसा जान पड़ता था, मानों स्वयं पृथ्वी के हृदय में से निकल रहा हो ।

एक बूढ़ी मादा खरगोश ने, जो किनारे पर बबूलों में रहती थी उस काले आदमी को, अपने भयंकर शत्रु को देखा ; और वह भागी, हलकी और लम्बी और खामोश, उसके कान सख्त और खड़े हुए मानों वे उसकी रक्षा को तत्पर छुरियाँ हों।

आदमी अपने सुपने में बिलमता रहा ; खरगोश ने अपने सपने खो दिये, लेकिन चमड़ी बचा ली। जब वह जंगल के अन्तराल में पहुँच गयी, तो एक घनी झाड़ी के अन्दर दुबककर बैठ रही, और बड़ी देर तक प्रतीक्षा करती रही, कान लगाये और अपनी जरा-सी काँपती हुई नाक से हवा को सूँघते हुए। और उसका दिल बहुत जोर से धड़क रहा था; इधर महीनों से उसका दिल इतने जोर से न धड़का था।

सचमुच, हाल की बाढ़ के बाद से, जब टापू के सारे खरगोश, मछुवों द्वारा पकड़े या मारे जाकर, या हरहराती हुई नदी में बहकर, गायब हो चुके थे, बूढ़ी मादा खरगोश सोचती थी कि उस जगह की वही अकेली मालकिन है, और अपने जीवन के शेष दिनों को वहीं एकान्त और शान्ति में बिताने के सपने उसने देखे थे। वह बूढ़ी थी और थी जीवन से थकी हुई और एकदम अकेली। उसके बच्चों ने उसे छोड़ दिया था; और नरों को अब उसकी चाह न थी। टापू के एक सुनसान कोने में वह बहुत आसानी से, शान्ति-पूर्वक, बिना किसी खौफ-खतरे के रह सकती है।

वसन्त के दिनों में, जब बाढ़ आयी हुई थी, वह उन पेड़ के तनों में रही थी, जो उस छोटी-सी तलैया के ऊपर ऊँचे किनारों तक बहकर आ गये थे। किसी को टापू के उस दलदली रेगिस्तान को पार करने की हिम्मत नहीं पड़ी थी और बाद को भी, जब बालू सख्त हो गयी और तलैया के किनारों पर घास उग आयी, तब भी न तो शिकारी और न मछुवे टापू पर गये।

शान्ति और निर्जन एकान्त...सिर्फ बुलबुलें, चिनार के लम्बे दरख्तों में बहते पानी का स्वागत करती हुई पत्तियों के खड़-खड़ रव के टेक पर गा रही थीं। और पत्तियों ने, चन्द्र की मौन ज्योत्स्ना में नहाये हुए कहा:

'विदा, पानी; खड़े रहने से दौड़ना अच्छा है।'
और पानी ने समुद्र की ओर दौड़ते हुए कहा :
'विदा; सदा, सब काल दौड़ते रहने से खड़ा रहना अच्छा है।'

और बूढ़ी मादा खरगोश ने सुना। वह वास्तव में प्रसन्न थी; उसने अपने को पेड़ों से ज्यादा मजबूत और पानी से अधिक द्रुतगामी महसूस किया, क्योंकि उसे सन्तोष था कि वह अपनी इच्छानुसार दौड़, या खड़ी रह सकती है।

महीने बीते; बुलबुलें चुप हो गयीं और चिनार की पत्तियों का गिरना शुरू हो गया। उस बूढ़ी मादा खरगोश ने जीवन में और कभी भी इतना शान्त और सुरक्षित न अनुभव किया था और अब, यकायक, वह भयानक, काला पिशाच फिर से आ गया था। और वह भला आ क्यों गया?

वह झाड़ियों के अन्दर दुबकी पड़ी रही और उसकी आँखें निश्चल अपनी कुछ लाल पलकों के अन्दर उस दूरी पर चन्द्र से आलोकित बालू का फैलाव देख सकती थीं, जो झाड़ियों से घिरा था, एक प्रकार का खुला मैदान जहाँ वह भी अपने यौवन के सुखी दिनों में उछली-कूदी थी और अपनी परछाईं का पीछा किया था या उन रातों को जब चाँद खूब तेज चमकता होता, अपने प्रेमी की प्रतीक्षा की थी।

बालू पर एक परछाईं डोलती थी, फिर दूसरी। बूढ़ी मादा खरगोश ने सोचा कि वह निश्चय ही सपना देख रही होगी। लेकिन परछाइयाँ लौट आयीं, रुकीं और फिर अपना तलिस्मी खिलवाड़ जारी कर दिया। इस विषय में कोई सन्देह न था; वे दो खरगोश थे। और तब उस बूढ़े जीव ने समझा कि क्यों उसका काला शत्रु, शिकारी, रात को एक बार फिर टापू पर आया हुआ था।

तब एक भीषण रोष, जितना भीषण कि एक खरगोश का हो सकता है, उसके हृदय में नये सिरे से दहकने लगा। बजाय इसके कि वह अपने को तसल्ली दे कि टापू पर एकदम अकेले रहने में उसने गलती की थी, उसने मनशुझाव किया कि उसके सह-प्राणियों ने बिना किसी अधिकार के ही उसके टापू पर कब्जा कर लिया है।

उम्र और एकांतिकता ने उसे गुस्सेवर और स्वार्थी बना दिया था। वह उन खरगोशों के आ जाने पर अपने काले शत्रु के आ जाने की अपेक्षा, कहीं ज्यादा रुष्ट थी; जब वह अपनी छुपने की जगह से बाहर आयी, बलुई मैदान की तरफ बढ़ी और जाना कि दोनों खरगोश प्रेमी हैं तो उसका गुस्सा और भी प्रबल और प्रचण्ड हो गया, जैसा कि कभी न हुआ था।

इससे उन दोनों खरगोशों के साथ-साथ खेलते, उछलते और दौड़ते रहने में कोई खलल नहीं पड़ा। मादा मोटी थी; उसके लगभग पारदर्शी कान अन्दर से गुलाबी और बाहर से पीले-भूरे थे। वह एक शोख, नन्हीं-सी जीव थी; वह नर के चारों तरफ दौड़ती और उसे न देखने का बहाना करती रही, फिर बालू पर चित लेट रही; और जब उसका प्रेमी पास आया, तो उचककर उठ बैठी और भाग गयी। नर दूसरी ओर, आसक्ति और मोह के मारे जीर्ण हो रहा था। उसका ध्यान उसे छोड़ और कहीं न था, उसने उसका पीछा किया और निर्ममता के साथ उस पर अपना बोझ लाद दिया। वे खुश थे—सारे खुश प्रेमिकों की भाँति मुदित और चिन्ता-रहित।

बूढ़ी मादा खरगोश उनको देखते न थकी; और जब वे मोदक दंपति, अपने लाड़-प्यार और अपनी अठखेलियों से ऊबकर मैदान से चले भी गये, तब भी वह वहाँ सिमटी हुई आँख लगाये रही, उसके कान, हवा में, दो सूखी पत्तियों की तरह खड़े और काँपते रहे।

दिन और रात पीछे छूट गये, चाँद ढल गया, और शामें एक बार फिर अँधेरी होने लगीं।

बूढ़ी मादा खरगोश लौटकर फिर तलैया के किनारों पर न गयी, उसे शिकारी का भय था। वह झाड़ी की अँधेरी से अँधेरी गहराइयों में छुपी रही, और सिर्फ कभी-कभी रात के वक्त दोनों प्रेमियों को संग आनन्द के साथ क्रीड़ा करते देखने के लिए खुले मैदान तक आने की जुरत करती रही।

तब उसने एक दिन एक गोली की आवाज सुनी, फिर दूसरी, फिर

और धुंधली-सी, एक सुदूर गूँज की तरह अस्पष्ट ।

और उस रात, (यद्यपि वह सच ही प्रेमिकों की रात थी, नरम और गरम ; साथ में था चिनार के नंगे दरख्तों के पीछे डूबता बाँका चाँद) वे दोनों प्रेमी फिर न दिखलायी पड़े ।

उस काले शत्रु ने अवश्य उन्हें पकड़ लिया होगा । वह बूढ़ी मादा खरगोश, अपने क्रूर, विजयोन्मत्त हर्ष से इतनी अभिभूत हो गयी कि वह वहीं उस बालू पर इधर-उधर उछलने-कूदने लगी, जिस पर अब तक उन बेचारे प्रेमियों के पैर के निशान थे ।

लेकिन आदमी के पैरों की ध्वनि ने उसे भागने को मजबूर किया । हाँफती हुई और अन्धी होकर वह झाड़ी के बीच से सर्र से निकली और नदी के दूसरे किनारे पर करीब-करीब पहुँच गयी, जहाँ पर वह सुबह तक छुपी पड़ी रही : एक ऐसी जगह में जहाँ वह पहले कभी न गयी थी ।

भोर के वक्त वह कुनमुनायी । जंगल कुहासे में ढका हुआ था ; झाड़ी से बर्फीले पानी की बड़ी-बड़ी बूँदें चू रही थीं । वह खरगोश देखने के लिए बाहर गयी ; वह एक प्रकार के छोटे-से खोखले के अन्दर गयी, और वहाँ उसने कुछ ऐसी चीज देखी, जिसने उसे द्रवित और रुँआसा कर दिया, यद्यपि वह इतनी अनुदार थी । उसने एक नन्हें-नन्हें, खरगोश के बच्चों का घोंसला पाया । वे दो थे, नन्हें-से मांसल बच्चे, आरपार दिखनेवाले स्वच्छ कान और बड़ी, निश्चल, चमकती हुई आँखें । वे निश्चय ही उन दो खरगोशों के बाल-बच्चे होंगे, जिन्हें शिकारी ने मार डाला था ।

एक बच्चा अपने भाई के सिर और कान को चाट रहा था ; जब उसकी नजर उस बूढ़ी खरगोश पर पड़ी, उसने उसे गौर से देखा, अपनी नाक बाहर को निकाली और फिर अपनी जुरत पर दहशत-सी खाकर उसे फिर अन्दर सिकोड़ लिया ।

बूढ़ी खरगोश अपनी राह गयी ; लेकिन कुछ वक्त बाद वह फिर

वापस आयी, और उसने दोनों गरीब खरगोश के बच्चों को साथ खेलते और एक दूसरे को चाटते देखा।

वह एक उदास, ठण्डा दिन था ; लगभग शाम के बारिश होने लगी, और बूढ़ी खरगोश फिर अपने पुराने तलैया के ऊँचे कगारों पर, पेड़ के तनोंवाले घोंसले को लौट गयी। बारिश होती रही, और होती रही, लेकिन बूढ़ी खरगोश को और कोई ज्यादा उदासी नहीं महसूस हुई। इसके विपरीत, बारिश के मतलब अच्छे मौसम के खात्मे के होते थे, निदान शान्ति और सुरक्षितता के। जल्दी ही बालू फिर धँसने लग जायगी, और फिर कोई शिकारी गीले, सपाट जंगल को पार करने की हिम्मत नहीं कर सकता।

और उन बेचारे खरगोश के बच्चों का क्या होगा ? उनके इस छोटे-से खोखले में उन पर क्या बीतेगी ? क्या उस एकाकी बूढ़ी मादा को स्वयं अपने छोटे बच्चों का, उनके घोंसले की गर्मी का, और मातृत्व की उमंगों का स्मरण हो आया ? यह कहना मुश्किल है ; लेकिन भोर के वक्त उसने अपनी छुपने की जगह छोड़ी और उन खरगोश के बच्चों को फिर देखने गयी। वे बेचारे नन्हें प्राणी सो रहे थे, एक पर दूसरा ; लेकिन नींद में भी वे अवश्य ही अपनी मा की प्रतीक्षा करते रहे होंगे, क्योंकि जब वह बूढ़ी मादा उन तक आयी, तो उन्होंने अपनी नाक बढ़ायी और अपने जरा-जरा-से कान हिलाये।

और बूढ़ी मादा ने उन्हें अपनी बड़ी आर्द्र आँखों से देखा ; और उसने भी अपनी नाक बढ़ा दी, मानों वह घोंसले की गन्ध को सूँघ रही हो।

बारिश फिर होने लगी। आठ दिन और आठ रात, कुहासे और मेह का एक भूरा पर्दा टापू को घेरे और ढँके रहा। तलैया, काली चमकती हुई स्याही से भरी मालूम होने लगी, और पानी चढ़ता रहा कि आखिरकार उसने बूढ़ी मादा के आश्रय को छू-सा लिया। उसने लौटकर, उन खरगोश के बच्चों को फिर देखने की कोशिश की थी ; लेकिन उसके आश्रय के पास की बालू बहुत स्थानों पर अन्दर धँस गयी!

थी और पानी से बिलकुल दलदली हो रही थी। उस छोटी तराई तक पहुँचना बिलकुल नामुमकिन था। पानी बरसता रहा और बरसता ही रहा; और दूरी पर, उस इलाके से गुजरती और सब कुछ ध्वस्त करती हुई एक वैर-पूर्ण क्रुद्ध ध्वनि हो रही थी, चढ़ाई करनेवालों की एक विरोधी सेना की तरह।

बूढ़ी मादा खरगोश उस आवाज़ को भली तरह जानती थी; वह विजय करती हुई नदी की घनी आवाज थी। उसे अपनी माँद छोड़ने की हिम्मत न हुई, गोकि भूख उसे सता रही थी और उसके पास खाने के लिए कुछ सूखी पत्तियों को छोड़कर और कुछ न था। एक दिन उसे बिना खाने के ही रह जाना पड़ा क्योंकि पानी बिलकुल पेड़ के तनों तक पहुँच गया, और जरा भी हिलना-डुलना खतरनाक था।

भूरा औ' घुप्प काला औ' निस्तब्ध पानी चढ़ा औ' और चढ़ा। धरती औ' आकाश ओ' वायुमंडल सब ठंडे और गँदले पानी का एक ढेर-सा हो गया। लेकिन आठवें दिन की शाम पानी रुका और अचानक बादल फट गये। खाकी कुहासे को चीर कर यहाँ-वहाँ हरा-पीला-सा आसमान निकल आया, और बादलों की एक दरार और एक सुरंग की गहराइयों में से, चाँद का रजत स्वर्ण चमकने लगा।

पानी नीचे हटा; मानों अपनी जीत से अघाकर और अपने साथ लूट में पत्तियाँ औ' शाखें औ' बालू औ' मुर्दा जानवर बटोरकर वापस फिर रहा हो।

दूसरे दिन सूरज ने इस उजाड़ जगह पर अपनी रोशनी फेंकी और गरीब, भींगी और भुखमरी मादा खरगोश ने अपनी छुपने की जगह छोड़ी और अपने को गर्म किया और चारों ओर निहारा।

तलैया गायब हो गयी थी; एक छोटा-सा गँदला नाला उस ऊँचे कगार के नीचे बहा जा रहा था जो कि एक बाँध की तरह खड़ा रहा था; लेकिन पानी फिर भी अपनी लूट और अपने शिकारों को बहा ही ले गया।

और एकाएक, सूनी टहनियों और सूखी पत्तियों और एक टूटे हार

के दानों की तरह असंख्य छोटे बुलबुलों के बीच, मादा खरगोश ने उन दो नन्हें खरगोश के बच्चों को देखा, मरे हुए; लंबे दुबले-पतले; उनकी आँखें फैली हुई और कान तने हुए, वे पानी पर दौड़ रहे थे और दौड़ते रहे, दो भोले नादान बच्चों की तरह जो मौत के बाद भी एक दूसरे को प्यार करते थे।

अब बूढ़ी मादा खरगोश टापू पर सच ही बहुत अकेली थी।

फेडर सोलोगब

फेडर सोलोगब का जन्म १८६३ में सेंट पीटर्सबर्ग शहर में हुआ था। उसका पिता दर्जी था। सोलोगब की शिक्षा-दीक्षा सेंट पीटर्सबर्ग के टीचर्स इंस्टीट्यूट में हुई थी। पचीस साल की मास्टरी के बाद उसने सन् १९०७ में उस कार्य से अवकाश ग्रहण किया।

सन् १८९७ में उसका प्रथम कविता-संग्रह प्रकाशित हुआ। तभी उसकी कुछ कहानियाँ भी प्रकाशित हुईं। गद्य और पद्य दोनों ही क्षेत्रों में वह सिम्बोलिस्ट (प्रतीकवादी) साहित्यकारों में सब से बड़ा माना जाता है। उसका सब से अच्छा उपन्यास 'द लिटिल डेमन' है जो सन् १९०७ में प्रकाशित हुआ था।

सोलोगब का देहान्त १९२७ में हुआ।

तमारा

१

ईस्टर करीब आ रहा था। एस्पर कांस्टैन्टिनोविच सकसलोफ थका हुआ और परीशान था। इस बात की शुरुआत शायद तब से हुई जब गोरोडिशेव के यहाँ उससे पूछा गया—अपना त्यौहार कहाँ बिता रहे हैं ?

सकसलोफ ने किसी वजह से जवाब देने में देर की।

घर की मालकिन ने जो एक हट्टी-कट्टी, अदूरदर्शी और जल्दबाज़ महिला थीं, कहा—जरा हमारे पास आओ।

सकसलोफ चिढ़ा हुआ था। क्या उस लड़की से तो नहीं, जो अपनी मा के कहने पर, उसकी ओर जल्दी से देखती और फौरन् ही उस नौजवान असिसटेंट प्रोफेसर से बात करती हुई निगाहें फेर लेती थी ?

सयानी लड़कियों की माओं की निगाह में सकसलोफ वरणीय था, और इस बात से उसे बड़ी खीझ होती थी। वह अपने को एक वृद्ध कुमार समझता था, और था सिर्फ सैंतीस का। उसने नाराज होकर संक्षिप्त उत्तर दिया : धन्यवाद। मैं यह रात हमेशा मकान पर ही काटता हूँ।

लड़की ने उसकी तरफ देखा, मुस्करायी और कहा—किसके साथ ?

सकसलोफ ने अपनी आवाज में थोड़ी हैरत लिये हुए जवाब दिया : अकेले।

मदाम गोरोडिशेव ने एक कड़वी मुस्कराहट के साथ कहा—कैसा इन्सान से नफरत करनेवाला !

लकसलोफ को किसी की मदाखलत नागवार थी। मौके होते थे जब उसे ताज्जुब होता था कैसे वह एक बार शादी करते-करते बचा था। अब वह अपने छोटे-से मकान के हिस्से का, जो गम्भीर शैली में सजाया गया था, और अपने बुड्ढे, शान्त नौकर फेडट का, और उसकी उतनी ही बुड्ढी पत्नी, क्रिस्चिन का, जो कि उसका खाना पकाती थी, आदी हो गया था और उसे इस बात का पक्का विश्वास था कि उसने इसलिए विवाह नहीं किया कि उसकी इच्छा अपने प्रथम प्रेम के प्रति ईमानदार बने रहने की थी। सच पूछो तो उसका हृदय उदासीनता के कारण शुष्क पड़ गया था, जो उदासीनता उसके सूने निरुद्देश्य जीवन का परिणाम थी। उसकी आमदनी उसकी थी, उसके मा-बाप कब के मर चुके थे, और नजदीकी रिश्तेदारों में से उसका कोई न था ; वह निश्चिन्त शान्त जीवन बसर करता था। किसी विभाग में लगा हुआ था और सामयिक साहित्य और कला का अच्छा ज्ञान रखता था, और जिन्दगी की अच्छी चीजों में खय्यामी आनन्द लेता था, जब कि स्वयं जिन्दगी उसे खोखली और बेमानी मालूम पड़ती थी। अगर उसे कभी-कभी कुछ रुपहले सपने न आते होते, तो वह कब का, और बहुत-से लोगों की तरह बिलकुल शुष्क पड़ गया होता।

२

उसका पहला और अकेला प्यार जो फलने के पहले ही खत्म हो गया था, उसे शाम को कभी-कभी उदास मीठे सपने दिखलाता था। पाँच बरस पहले उसकी भेंट उस लड़की से हुई थी, जिसने उस पर इतना स्थायी प्रभाव डाला था। चंपई रंग, कोमल गात, पतली कमर, नीली आँखें, भूरे बाल, वह उसे एक स्वर्गिक जीव मालूम पड़ी थी, वह जो हवा और कुहरे की उपज थी मानो शहर के शोर-गुल में, थोड़े समय के लिए भाग्य

द्वारा धोखे से डाल दी गयी हो। उसके अंगों का संचालन धीमा था; और उसकी साफ नरम आवाज, पत्थरों पर धीरे-धीरे बहते हुए पानी के मरमर स्वर की तरह, बहुत सुरीली मालूम पड़ती थी।

सकसलोफ—अनायास या जान-बूझकर, कौन जाने—उसे हमेशा एक सफेद पोशाक में ही देखता था। सफेद की धारणा उसके सम्बन्ध में उसके दिमाग में बँध गयी थी। यहाँ तक कि उसका नाम, तमारा भी उसे हमेशा पहाड़ी चोटी के बर्फ की तरह सफेद मालूम पड़ता। उसने तमारा के माता-पिता के यहाँ आना-जाना शुरू किया। कितनी ही बार उसने उससे उन शब्दों को कहने का इरादा किया था, जो कि एक मनुष्य के भाग्य को दूसरे मनुष्य के भाग्य के साथ बाँध देते हैं; लेकिन वह उसे हमेशा बचा जाती थी; डर और तड़पन उसका आँखों में झलकते थे। उसे डर काहे का था? सकसलोफ उसके चेहरे में बालिकोचित प्रेम का चिह्न देखता था; उसके आने पर उसकी आँखें चमकने लग जाती थीं और एक हलका-सा गुलाबीपन उसके चेहरे पर छा जाता था।

लेकिन एक शाम उसने उसकी बातें सुनीं। वह शाम उसे कभी न भूलेगी। शुरू वसन्त के दिन थे। नदियों को फूटे और पेड़ों को एक कोमल हरा लबादा पहने ज्यादा दिन न हुए थे। शहर के एक मकान में, तमारा और सकसलोफ, नीवा नदी को झाँकती हुई खुली खिड़की के सामने बैठे थे। बिना इस बात की परवाह किये कि वह क्या कहे और कैसे कहे, वह उसके डरावने शब्दों के जवाब में मीठा बोल रहा था। वह पीली पड़ गयी, अन्यमनस्क-सी मुस्करायी और उठ खड़ी हुई। उसका कोमल हाथ कुरसी की नक्काशीदार पुश्त पर काँप रहा था।

'कल'—तमारा ने धीमे से कहा और बाहर चली गयी।

सकसलोफ, एक तनावदार इन्तजार में बैठा हुआ बहुत देर तक उस दरवाजे की तरफ घूरता रहा, जिसने तमारा को छिपा लिया था। उसका सिर घूम रहा था। उसकी नजर एक सफेद लाइलक † की टहनी

---

† गुलमेंहदी की जात का फूल।

पर पड़ी ; उसने उसे लिया और बिना अपने मेजबानों को सलाम किये चला गया।

रात को वह सो न सका। मुस्कराता हुआ और सफेद लाइलक की टहनी से खेलता हुआ खिड़की के पास खड़ा वह अँधेरी सड़क को घूरता रहा, जो सुबह होते-होते रौशन हो चलती थी। जब रौशन हुई तो उसने देखा कि सारा कमरा उसी फूल की पँखुड़ियों से भरा है। यह बात उसे कुछ बहुत भोली और मजे की मालूम पड़ी। उसने नहाया जिससे उसने महसूस किया कि उसने अपनी स्वाभाविक स्थिति पा ली है और तमारा के यहाँ गया।

उसे बताया गया कि तमारा बीमार है, कहीं ठण्डक खा गयी। और सकसलोफ ने फिर उसे कभी नहीं देखा। दो हफ्ते में वह मर गयी। वह उसके क्रिया-कर्म में नहीं गया। उसकी मृत्यु ने भी उसे लगभग अटल पाया। अभी से, वह यह न कह सकता था कि आया वह उसे प्यार करता था या यह सब सिर्फ एक चलता हुआ आकर्षण था।

शाम को वह कभी-कभी उसका ख्वाब देखता ; फिर उसका चित्र धुँधला पड़ने लगा। सकसलोफ के पास तमारा की कोई तसवीर न थी। यह तो जब बहुत बरस बीत चुके थे, पिछले वसन्त, कि उसे एक रेस्तराँ की खिड़की में रखे सफेद लाइलक की एक टहनी से, जो वहाँ के कीमती खाने के बीच बुरी तरह बेलाग थी, तमारा की स्मृति हरी हो आयी और फिर उस दिन से, उसे शाम के वक्त तमारा के बारे में सोचने की इच्छा होती। कभी-कभी जब वह ऊँघ जाता तो वह सपना देखता कि वह आयी है और उसके सामने बैठ गयी है और उसकी ओर एक स्थिर दुलारभरी आँखों से ताक रही है, मानो कुछ चाहती हो।

तमारा की चाहभरी निगाहों की अनुभूति से उसे कभी-कभी दुःख होता और चोट पहुँचती।

अब जब उसने गोरोडिशेव परिवार से बिदा ली तो उसने विचित्र संशय के साथ सोचा :

'वह मुझे ईस्टर की शुभाकांक्षाएँ देने आयेगी।'

डर और सूनापन उसे इतना सता रहे थे कि उसने सोचा—मैं शादी क्यों न कर लूँ? तब मुझे पवित्र, धार्मिक रातों को अकेला न रहना पड़ेगा।

वालेरिया मिखाइलोवना—वह गोरोडिशेव की लड़की उसके खयाल में आयी। वह खूबसूरत तो न थी, लेकिन कपड़े कायदे से पहनती। सकसलोफ को लगा कि वह उसे चाहती है और यदि वह प्रस्ताव करे, तो इनकार न करेगी।

शहर में भीड़ और शोर ने उसका ध्यान तोड़ा; गोरोडिशेव की लड़की के विषय में उसके विचार सदा की तरह निराशा से रँग गये। उस पर से, क्या वह किसी के लिए भी, तमारा की स्मृति के प्रति झूठा बन सकता है? सारी दुनिया उसे इतनी ओछी और बेरंगी मालूम पड़ी कि उसे चाह हुई कि तमारा—और सिर्फ तमारा—आये और उसे ईस्टर की शुभाकांक्षाएँ दे।

'लेकिन' उसने सोचा—वह मुझ पर फिर वही चाहभरी आँख गड़ायेगी। वह क्या चाहती है, पवित्र, कोमल तमारा? क्या उसके कोमल ओंठ मेरे ओंठों को चूमेंगे?

३

तमारा के तड़पानेवाले विचारों को लिये, सकसलोफ, लोगों के चेहरे घूरता हुआ सड़कों पर घूमता रहा। औरतों और मर्दों के खुश्क चेहरों से उसे नफरत हुई। उसने खयाल किया कि ऐसा वहाँ कोई भी नहीं जिसे वह प्यार या खुशी से ईस्टर की शुभाकांक्षाओं के विनिमय के काबिल समझे। पहले दिन चुम्बनों की भरमार होगी—मोटे ओंठ, उलझी हुई दाढ़ियाँ, शराब की बू।

अगर किसी को चूमना हो, तो बच्चे को। बच्चों के चेहरे सकसलोफ को प्यारे मालूम पड़ने लगे।

वह बहुत देर तक चलता रहा, थक गया और कोलाहलपूर्ण सड़क

से हटकर एक गिरजे के अहाते में चला गया। एक पीले-से बच्चे ने जो कि एक सीट पर बैठा हुआ था, संदेह के साथ सकसलोफ को देखा, और सामने की ओर टकटकी लगाये निश्चल बैठा रहा। उसकी नीली आँखें, तमारा की आँखों की तरह उदास और लाड़भरी थीं। वह इतना छोटा था कि उसके पैर झूल न सकते थे, बल्कि सीट के सामने सीधे रखे हुए थे। सकसलोफ उसके पास बैठ गया और सहानुभूतिपूर्ण जिज्ञासा से उसने उसे देखा। इस छोटे से एकाकी बच्चे में ऐसा कुछ था जो मधुर स्मृतियों को जगाता था। देखने में वह साधारण-सा बच्चा था, फटे चीथड़े पहने था। एक सफेद फर की टोपी उसके नन्हें-से खूबसूरत सर पर थी और गंदे, फटे हुए जूते पैरों में।

बहुत देर तक वह सीट पर बैठा रहा, फिर उठा और बड़े करुण ढंग से रोने लगा। वह दौड़कर दरवाजे के बाहर, सड़क पर आ गया, रुका, उल्टी दिशा में चल पड़ा, और फिर रुक गया। साफ जाहिर था कि वह नहीं जानता किधर जाय। वह धीरे-धीरे अपने ही में रोने लगा, बड़े बड़े आँसू गाल पर से नीचे गिर रहे थे, एक भीड़ इकट्ठा हो गयी। एक पुलिस का आदमी आ गया। बच्चे से उसके रहने की जगह पूछी गयी।

'ग्लुइखोव हाउस' वह बहुत छोटे बच्चों की तरह तुतलाया।

पुलिस के आदमी ने पूछा—किस सड़क पर?

लेकिन बच्चा सड़क न जानता था, और उसने सिर्फ दुहराया—ग्लुइखोव हाउस!

पुलिसमैन ने, जो कि एक जवान, मस्त आदमी था, पल भर विचारा और तय किया कि ऐसा कोई मकान नजदीक पास पड़ोस में नहीं है।

'तुम किसके साथ रहते हो?' एक उदास दीख पड़नेवाले मजदूर ने पूछा—तुम्हारे पिता हैं?

अश्रु-भरे नेत्रों से भीड़ की ओर देखते हुए, लड़के ने जवाब दिया—मेरे पिता नहीं हैं।

मजदूर ने सिर हिलाते हुए संजीदगी से कहा—पिता नहीं हैं ! राम, राम ! मा है ?

लड़के ने जवाब दिया—हाँ, मेरी मा है ।

'उसका नाम क्या है ?'

'माँ !' लड़के ने जवाब दिया, फिर जरा देर सोचकर जोड़ा—काली मा ।

'काली ? क्या यही उसका नाम है ?' उस उदास मजदूर ने पूछा ।

लड़के ने समझाया—पहले मेरी एक श्वेत मा थी, और अब एक काली मा है ।

पुलिस के आदमी ने निश्चय-पूर्वक कहा—अच्छा भई लड़के, तुम्हारी बात का हम कभी सिर-पैर नहीं पा सकते । ज्यादा अच्छा हो कि मैं तुम्हें पुलिस कोतवाली लेता चलूँ । वह टेलीफोन पर पता लगा सकेंगे कि तुम कहाँ रहते हो ।

वह एक दरवाजे तक गया, और घंटी बजायी । उसी दम एक नौकर पुलिसमैन को देखकर, हाथ में एक झाड़ू लिये निकल आया । पुलिसमैन ने उसे बच्चे को कोतवाली ले जाने को कहा, लेकिन बच्चे ने कुछ देर सोचा और जोर से चिल्लाया—मुझे जाने दो, मैं खुद ही रास्ता ढूँढ़ लूँगा ।

क्या वह नौकर की झाड़ू से डर गया था, या वाकई उसे कोई बात याद हो आयी ? कुछ भी हो, वह इतना तेज भाग गया कि सकसलोफ की आँख से करीब-करीब ओझल हो गया । लेकिन जल्दी ही उसने अपनी चाल धीमी कर दी । इस ओर से उस ओर अपना मकान ढूँढ़ निकालने की बेकार कोशिश करते हुए वह सड़क पर दौड़ता रहा । सकसलोफ उसका पीछा चुपके चुपके करता रहा । वह बच्चों से बात करना न जानता था ।

आखिरकार बच्चा थक गया । वह एक लैम्प पोस्ट के सहारे खड़ा हो गया । आँसू उसकी आँखों में चमक रहे थे ।

'अच्छा, प्यारे बच्चे,' सकसलोफ ने शुरू किया—तुम अपना मकान नहीं ढूँढ़ पा रहे हो ?

लड़के ने उसकी तरफ अपनी उदास, कोमल आँखों से देखा, और सकसलोफ को फौरन महसूस हुआ कि वह कौन-सी चीज थी जो उसे उसका पीछा इतनी लगन और दृढ़ता से करने के लिए मजबूर कर रही थी।

उस छोटे घुमक्कड़ आदमी की दृष्टि और चाल-ढाल में तमारा से बहुत मिलती-जुलती कोई चीज थी।

'तुम्हारा नाम क्या है, प्रिय बच्चे?' सकसलोफ ने बड़ी नम्रता से पूछा।

लड़के ने जवाब दिया : लीशा।

'लीशा, क्या तुम अपनी मा के संग रहते हो?'

'हाँ, मा के साथ—लेकिन वह एक काली मा है, पहले मेरे एक श्वेत मा थी।'

सकसलोफ ने सोचा कि काली मा से उसका मतलब गिरजे की संन्यासिन से ही हो सकता है।

'तुम खो कैसे गये?'

'मैं मा के साथ चलता रहा, और हम चलते रहे, चलते रहे। उसने मुझे बैठने और इन्तजार करने को कहा, और फिर वह चली गयी। और मैं डर गया।'

'तुम्हारी मा कौन है?'

'मेरी मा? वह काली और गुस्सेवर है।'

'वह करती क्या है?'

लड़के ने थोड़ी देर सोचा।

और कहा—वह कहवा पीती है।

'इसके अलावा वह और क्या करती है?'

'किरायेदारों से झगड़ती है।' लीशा ने थोड़ी देर रुककर जवाब दिया।

'और तुम्हारी श्वेत मा कहाँ है?'

'उसे लोग उठा ले गये। उसे मुर्दा रखने की संदूक में रखा और उठा ले गये। और पिताजी को भी उठा ले गये।'

लड़के ने दूर किसी ओर इशारा किया और फूट पड़ा। सकसलोफ ने सोचा—मैं इसके लिए क्या कर सकता हूँ ?

तब यकायक लड़का फिर दौड़ने लगा। सड़क के कुछ मोड़ों का चक्कर काट लेने के बाद, उसने चाल धीमी कर दी। सकसलोफ ने उसे फिर से, दूसरी बार पकड़ा। लड़के के चेहरे पर डर और आनन्द का एक अजब मिला-जुला भाव था।

उसने सकसलोफ को एक बड़ी पाँचमंजिला भद्दी इमारत दिखलाते हुए कहा—यह रहा ग्लुइखोव हाउस।

उस वक्त ग्लुइखोव हाउस के दरवाजे पर एक काले बालोंवाली, काली आँखोंवाली औरत दीख पड़ी जो कि काला लिबास पहने हुए थी और उसके सिर पर काला रूमाल था जिसमें सफेद चित्तियाँ थीं। लड़का डर के मारे सिकुड़ गया।

'मा !' वह फुसफुसाया।

उसकी सौतेली मा उसकी ओर स्तंभित-सी देख रही थी।

वह चीख पड़ी—अरे बदमाश, तू यहाँ कैसे आ गया ? मैंने तुझे सीट पर ही रहने को कहा था न ?

उस काली औरत ने उस लड़के को मार दिया होता, लेकिन एक संजीदा, रोबदार आदमी को देखकर, जो उन्हीं को देख रहा था, उसने अपनी आवाज धीमी कर दी।

'क्या तुम आधे घंटे को भी कहीं अकेले नहीं छोड़े जा सकते ? बदमाश, मैं तुझे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते मर गयी !'

उसने अपने बड़े हाथों में बच्चे के छोटे हाथों को झपटकर खींच लिया और उसे दरवाजे के अन्दर घसीट ले गयी।

सकसलोफ ने उस सड़क को जेहन में रख लिया, और घर चला आया।

४

सकसलोफ फेडट का गम्भीर फैसला सुनना चाहता था। घर पहुँचकर उसने उसे लीशा के बारे में सुनाया।

'उसने उसे जान-बूझकर छोड़ दिया था।' फेडट ने घोषणा की—कैसी बदमाश औरत है जो लड़के को घर से इतनी दूर ले गयी !

'उसने ऐसा क्यों किया ?' सकसलोफ ने पूछा।

'कुछ कहा नहीं जा सकता। गधी औरत—बेशक उसने यही सोचा कि लड़का गलियों में मारा-मारा फिरेगा, और आखिर में कोई न कोई उसे उठा ही लेगा। तुम एक सौतेली मा से और क्या उम्मीद कर सकते हो ? बच्चा उसके किस काम का ?'

'लेकिन उसे पुलिस भी तो पकड़ सकती थी ?' सकसलोफ ने संदिग्ध स्वर में कहा।

'शायद; लेकिन हो सकता है वह शहर बिलकुल ही छोड़ रही हो और उस सूरत में वे भला उसका पता कैसे पाते ?'

सकसलोफ मुस्कराया। उसने सोचा—सच ! फेडट को मजिस्ट्रेट होना चाहिए था।

बाद रात, लैम्प के पास किताब लिये बैठे बैठे वह सो गया। उसने अपने सपनों में तमारा को देखा, कोमल और श्वेत। वह आयी और उसके पास बैठ गयी। उसकी शकल आश्चर्यजनक रूप में लीशा से मिलती-जुलती थी। वह उसकी ओर एकटक देख रही थी, लगातार और दृढ़ता के साथ, मानो उसे किसी चीज की आशा हो। सकसलोफ के लिए उसकी चमकती, मनुहार करती आँखों को देखना और यह न समझना कि वह क्या चाहती है, जुल्म हो गया। वह फौरन उठ खड़ा हुआ और उस कुरसी तक उछलकर गया जहाँ तमारा बैठी मालूम पड़ती थी। उसके सामने खड़े होकर उसने प्रकट याचना की।

'मुझे बताओ। तुम क्या चाहती हो ?'

लेकिन वह वहाँ रह न गयी थी।

सकसलोफ ने अफसोस के साथ सोचा, सिर्फ एक सपना था।

५

उसके दूसरे दिन एकेडमी की नुमाइश से निकलते हुए सकसलोफ की मुठभेड़ गोरोडिशेव से हुई।

उसने लीशा के विषय में लड़की को बतलाया ।

'बेचारा लड़का !' वालेरिया मिखाइलोवना ने कोमलता से कहा—उसकी सौतेली मा उससे छुटकारा पाना चाहती है ।'

सकसलोफ ने इस बात से चिढ़कर कि फेडट और वह लड़की दोनों ही इतनी मामूली घटना का इतना विषादमय दृष्टिकोण लें, जवाब दिया—यह बात इतनी निश्चित नहीं है ।

'यह बात तो बिलकुल साफ है । लड़के का पिता नहीं है और वह अपनी सौतेली मा के साथ रहता है । वह इसे बला समझती है, अगर वह शराफत से इससे पीछा नहीं छुड़ा सकती तो बेमुरौवती से ठुकरा देगी ।'

'तुम्हारा दृष्टिकोण व्यर्थ ही इतना कटु है ।' सकसलोफ ने मुस्कराहट के साथ कहा ।

'तुम उसे गोद क्यों नहीं ले लेते ?' वालेरिया मिखाइलोवना ने प्रस्ताव किया ।

सकसलोफ ने अचम्भे के साथ पूछा—मैं ?

वह कहे गयी—तुम अकेले रहते हो । तुम्हारे कोई अपना नहीं है । ईस्टर के दिन एक अच्छा काम कर डालो । कुछ भी हो, तुम्हें एक आदमी तो हो जायगा जिससे तुम शुभाकांक्षाएँ आदान प्रदान कर सको ।

'लेकिन मैं एक बच्चा लेकर क्या करूँगा, वालेरिया मिखाइलोवना ?'

'उसके लिए एक दाई ले आओ । भाग्य ने तुम्हारे पास बच्चा भेजा दीखता है ।'

सकसलोफ ने उस लड़की के सुर्ख, उत्तेजित चेहरे को आश्चर्य और एक अज्ञात कोमलता के साथ देखा ।

जब उस शाम को तमारा फिर सपनों में उसे दीख पड़ी, तो उसे ऐसा लगा कि वह जानता है कि वह क्या चाहती है । और कमरे की निस्तब्ध शांति में ये शब्द कोमलता से गूँजते जान पड़े :

'जैसा उसने कहा है, वैसा ही करो !'

सकसलोफ प्रसन्न होता हुआ उठ बैठा, और उसने अपनी नींद से

मखमूर आँखों पर हाथ फेरा। उसे मेज पर सुफेद लाइलक की एक टहनी नजर आयी। यह आयी कहाँ से ? क्या तमारा इसे बतौर अपनी मंशा की निशानी छोड़ गयी ?

और एकाएक उसे सूझा कि गोरीहिरीव लड़की से शादी करके और लीशा को गोद लेकर, वह तमारा की ख्वाहिश पूरी करेगा। और खुशी के साथ उसने लाइलक की ताजी सुगंधि को पिया।

उसे याद आया कि उसी ने वह फूल उस दिन खरीदा था, लेकिन उसी दम उसने सोचा : इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैंने खुद इसे खरीदा। इस बात में ही सगुन है कि मैंने खरीदना चाहा और फिर भूल गया कि मैंने इसे खरीदा था।

६

सुबह वह लीशा को ढूँढ़ने निकल पड़ा। लड़का उसे दरवाजे पर मिला, और उसने उसे अपनी रहने की जगह दिखलायी। लीशा की मा कहवा पी रही थी और अपने लाल नाकवाले किरायेदार से झगड़ रही थी। लीशा के बारे में सकसलोफ को जो मालूम हुआ वह यह है :

उसकी मा, जब कि वह तीन बरस का था, मर गयी थी। उसके बाप ने इस काली औरत से शादी की थी और वह भी साल के अन्दर ही अन्दर मर गया था। उस काली औरत, ईरीना आइवनोवना के खुद अपना एक साल का बच्चा था। वह फिर शादी करने जा रही थी। शादी कुछ ही दिनों में होनेवाली थी, और उसके बाद ही वे लोग फौरन गांव की ओर चले जानेवाले थे। लीशा उसके लिए अजनबी और उसके रास्ते का रोड़ा था।

'उसको मुझे दे दो।' सकसलोफ ने प्रस्ताव किया।

'खुशी से' ईरीना आईवनोवना ने आह भरे आनन्द के साथ कहा। फिर कुछ रुककर, जोड़ा—सिर्फ यह कि तुम्हें उसके कपड़ों के लिए दाम देना होगा।

और इस प्रकार लीशा सकसलोफ के घर आ गया। गोरोडिशेव लड़की ने सकसलोफ की मदद काम ढूँढ़ने में और मकान में लीशा के रहने से संबंध रखनेवाली विशेष बातों का इंतजाम करके की। इस कार्य्य के लिए उसे सकसलोफ के घर जाना पड़ता था। इस प्रकार कार्य्य में लिप्त, वह सकसलोफ के लिए एकदम दूसरी ही वस्तु मालूम पड़ने लगी। उसके हृदय का द्वार उसके (सकसलोफ के) लिए खुल-सा गया। उसकी आँखों में चमक और नरमी आ गयी। उसके समस्त शरीर में वही कोमलता पूर्ण रूप से बिंध गयी जो तमारा से निकल रही थी।

७

लीशा की अपनी श्वेत मा की कहानियों ने फेथट और उसकी पत्नी के हृदय को स्पर्श किया। 'पैशन सैटरडे' † के दिन, उसे सुलाते वक्त उन्होंने उसकी खाट के कोने पर सुफेद शकर का एक अंडा लटका दिया। क्रिस्चियन ने कहा—यह तुम्हारी श्वेत मा के यहाँ से आया है लेकिन, मुन्ने ! तुम इसे जब तक हमारे प्रभु का उदय न हो और घंटियाँ न बजती हों, मत छूना।

लीशा आज्ञाकारिता के साथ लेट गया। बहुत देर तक वह उस सुन्दर अण्डे की ओर निहारता रहा, फिर सो गया।

और सकसलोफ इस शाम को अकेला घर पर बैठा रहा। आधी रात के लगभग नींद के एक बेकाबू झोंके ने उसकी आँखें बंद कर दीं, और वह खुश था, क्योंकि जल्दी ही वह तमारा को देख सकेगा। और वह आयी, श्वेत वस्त्र पहने, ज्योति बिखेरती, अपने साथ सुदूर गिरजे की घंटियों की आवाज लिये। एक मृदु मुसकान के साथ वह उसके ऊपर झुकी और—अकथनीय सुख !—सकसलोफ ने अपने ओठों पर एक कोमल

---

† बड़े दिन का शनिवार विशेष।

स्पर्श का अनुभव किया। एक कोमल आवाज ने धीमे से कहा—प्रभु का उदय हो गया !

बिना आँखें खोले, सकसलोफ ने अपनी बाँहें फैला दीं और एक सुकुमार, कृश शरीर का आलिंगन किया। यह लीशा था जो उसे ईस्टर का अभिनंदन देने उसके घुटनों पर चढ़ आया था।

गिरजे की घण्टियों से बच्चा जग पड़ा था। वह सफेद अण्डा हथियाकर सकसलोफ के पास दौड़ आया था।

सकसलोफ जग पड़ा था। लीशा हँसा और उसे अपना सफेद अण्डा दिखलाने लगा।

अपनी तोतली बोली में उसने कहा—श्वेत मा ने इसे भेजा है। मैं इसे तुम्हें दूँगा और तुम इसे चची वालेरिया को जरूर दे देना।

'बहुत अच्छा भैया, जैसा तुम कहते हो, वही करूँगा।' सकसलोफ ने जवाब दिया।

उसने लीशा को बिस्तर पर लिटा दिया और फिर लीशा का वह सफेद अण्डा लेकर वालेरिया मिखाइलोवना के पास गया, वह अण्डा जो श्वेत मा का भेजा हुआ उपहार था। लेकिन उस वक्त सकसलोफ को लगा मानो वह तमारा का ही भेजा हुआ उपहार हो।

वैलेंताइन कतायेव

जन्म १८९७। उसकी सबसे अच्छी आरंभिक कृति 'द एमबेज़लर्स' है जो १९२६ में प्रकाशित हुई। इसमें गबन करने वाले दो सोवियट अफसरों की कहानी है। गोगोल के चिचिकोव की तरह ये दोनों अफसर बहुत सा रुपया लेकर एक जगह से दूसरी जगह भागते फिरते हैं। आखिर को वे पकड़े जाते हैं और उन पर मुकदमा चलता है। कथानक में घटनाओं की बहुलता है जिनसे 'नेप' काल की नयी अर्थनीति पर प्रकाश पड़ता है। 'लोनली व्हाइट सेल' नामका उपन्यास सन् सैंतिस में प्रकाशित हुआ। इसके नायक दो लड़के हैं (जिनमें एक दस साल का मछुए लड़का है) और विद्रोही जहाज 'पोटेमकिन' का एक नाविक। सन् १९०५ की असफल रूसी क्रान्ति की कहानी है। पुलिस इस नाविक को ढूँढ़ रहे हैं मगर दोनों लड़कों की सहायता से वह छिपा रहता है और फिर भाग कर रूमेनिया चला जाता है। 'स्पीड अप टाइम!' १९३२ में छपा। इसमें कार्यरत सोवियत रूस का चित्र है। इसमें स्तैखनोवाइट चौबीसों घंटे काम करके अपने अन्य साथियों को समाजवादी होड़ में पिछाड़ देने की

कोशिश करते दिखलाये गये हैं। उसके उपन्यास 'ए सन आफ द वर्किंग पीपुल' में भी यही बात है। यह उपन्यास सन् ३७ में छपा। कतायेफ इस पीढ़ी के बेहतरीन सोवियट लेखकों में है। उसने इवान बुनिन और तालस्ताय से बहुत कुछ सीखा है।

उनका झंडा !

टापू के बीचोबीच कुछ मकानों की सिलेटी छतें दीख रही थीं। उनके ऊपर से सर उठाये खड़ा था वह सँकरा, तिकोना गिर्जा जिसका सीधा-सा काला सलीब भूरे आसमान की चादर पर साफ दीख रहा था।

जान पड़ता था उन कटे हुए किनारों में जान ही नहीं। चारों ओर सौ मील तक समुद्र भी एक ऊसर-सा फैला हुआ था। लेकिन बात ऐसी न थी।

कभी कभी एक जंगी या सामान ले जाने वाले जहाज की धुँधली रूपरेखा समुद्र में दूर क्षितिज पर दीख जाती थी। और तभी ग्रैनाइट की एक चट्टान, हल्के से, बगैर आवाज किये एक तरफ को हट जाती—जैसा सपनों और परी कहानियों में होता है—और एक गुफ़ा दीख पड़ती, जिसके मुँह में से तीन दूरमार तोपें आसानी के साथ निकलकर समुद्रतल के ऊपर सतह पर आ जातीं और सरकती हुई अपनी जगह पर पहुँच कर रुक जातीं। उनकी तीन बहुत ही लम्बी थूथनें दुश्मन के जहाज की चाल का पीछा अपने आप घूम कर किया करतीं, मानों उन्हें चुम्बक खींच रहा हो। लोहे की मोटी चादरें और व्यूहनुमा घेरे हरे तेल की मोटी परत से चमचम करते !

बहुत अन्दर पहाड़ी में बनाये गये इन दुर्गों में किले की फौज और उसकी रसद तथा जंगी सामान था। प्लाई-वुड का पटरा बीच में देकर आम 'मेस' से अलग जो एक कोठरी बना ली गयी थी, वहीं किले के कमाण्डर और कमिसार[1] के रहने की जगह थी। वे दीवाल में

1 फौज का राजनीतिक सलाहकार।

बिठाये हुए मट्टी के चबूतरे पर बैठे हुए थे, जिस पर वे दिन भर काम करते थे और रात को सो जाते थे। उनके बीच में एक छोटी-सी मेज थी जिस पर बिजली का लंप जल रहा था। हवादान का बिम्ब उससे आनेवाली रोशनी को बिजली के कौंधे की तरह छितरा रहा था। एक खुरक हवा का झोंका गोदाम का ब्यौरा देने वाले कागज़ों को लगा और चौकोर खानेदार एक चार्ट पर रखी हुई पेंसिल लुढ़कने लगी। यह चार्ट समुद्र का था। कमाण्डर को अभी-अभी पता चला था कि दुश्मन का एक विध्वंसक जहाज खाने नम्बर आठ में देखा गया है। कमांडर ने सिर हिलाया।

तोपों ने नारंगी रंग की, चकाचौंध पैदा करनेवाली लपटें उगलीं। एक के बाद एक जल्दी-जल्दी छोड़ी गयी तीन बौछारों ने पानी और चट्टान को हिला दिया, और एक प्रायः बहरा कर देनेवाली गरज ने अन्तरिक्ष को चीर दिया। संगमरमर के ऊपर लुढ़कते हुए गोलों की ही आवाज के साथ तोप के गोले एक के बाद एक अपने रास्ते पर चले जा रहे थे। कुछ मिनट बाद पानी पर लौटती हुई गूँज से मालूम हुआ कि वे फूट गये।

कमांडर और कमिसार ने एक दूसरे को खामोशी के साथ देखा। बिना और कुछ कहे ही सारी बात साफ थी। टापू घिरा हुआ था, खबर लाने और ले जानेवाले रास्ते कट चुके थे; एक महीने से अधिक हो गया था, ये मुट्ठी भर जाँबाज लगातार होनेवाले समुद्री और हवाई हमलों के खिलाफ उस घिरे हुए किले को बचा रहे थे; पहाड़ियों पर बमगोले गुस्से के साथ हर दम बरसते रहते थे; टारपीडोमार और हमला करने वाली किश्तियाँ हरदम वहीं चक्कर काटा करती थीं; दुश्मन टापू पर जबर्दस्त हमला करके उसे ले लेने का पक्का इरादा कर चुका था।

रसद और जंगी सामान के गोदाम में और घटती हुई। कोठरियाँ खाली हो गयीं। लगातार घंटों कमांडर और कमिसार स्टाक के बहीखाते लिये बैठे रहते। उन्होंने ज्यों-त्यों, हर मुमकिन तरीके से इन्तजाम करने की कोशिश की; सप्लाई कम कर दी। उस अंतिम पर्ची को, जिसमें

सारी बातों का फैसला होना था, न आने देने के लिए उन्होंने जो बन पड़ा सब कुछ किया लेकिन अंत क़रीब आता ही गया। और अब वह आ पहुँचा था।

आखिरकार कमिसार ने पूछा, 'तब ?'

कमांडर ने कहा, 'सब चुक गया, अब यह आखिरी है।'

'तब फिर—लिखो।'

कमांडर ने बग़ैर किसी जल्दबाजी के जहाज के रोजनामचे की कापी खोली, घड़ी देखी और अपनी साफ हस्तलिपि में लिखा :

'आज सारी तोपें पौफटे से चल रही हैं, पौने छ बजे शाम को हमने अपनी आखिरी बौछार छोड़ी। हमारे पास अब गोले नहीं। खाना—एक दिन का राशन।'

उसने जहाज के रोजनामचे की कापी—रस्सी से बंधी हुई मुहरदार एक मोटी बही—बंद की; थोड़ी देर उसे हाथ में यों लिये रहा, जैसे तौल रहा हो, और फिर उसे वापिस आलमारी में रख दिया।

'तो यह रही सारी चीज, कमिसार' उसने गंभीरता के साथ कहा।

दरवाजे पर एक दस्तक हुई।

'चले आओ।'

ड्यूटी पर तैनात अफसर अन्दर दाखिल हुआ। उसके कपड़ों से पानी की बूंदें चू रही थीं। उसने अलमुनियम का बेलन सा मेज पर रख दिया।

'पेन्डेन्ट ?'

'हां, कामरेड कमांडर।'

'कैसे गिराया ?'

'एक जर्मन लड़ाके जहाज ने गिराया।'

कमांडर ने उसे खोला, उसके अन्दर दो उँगलियाँ डालीं और गोल मुड़े हुए कागज के एक छोटे से टुकड़े को निकाला। उसने उसे पढ़ा और उसके चेहरे को गुस्से की मरोड़ ने बादल की तरह ढंक लिया। कागज के टुकड़े पर साफ मोटे अक्षरों में नीली सियाही से लिखा हुआ था—

'सोवियत किले और तोपखाने के कमांडर ! तुम चारों तरफ से घिर गये हो, अब तुम्हारे पास गोला बारूद और खाने पीने का सामान भी नहीं है। बेकार खूनखराबी से बचाने के लिए मैं कहता हूँ कि तुम आत्म-समर्पण के लिए तैयार हो जाओ। शर्तें :—किले की सारी फौज मय किले के कमांडर और अफसर के, किले की तोपों को अच्छी तरह काम की हालत में छोड़कर बगैर उन्हें तोड़े-फोड़े, गिर्जे के पास वाले 'स्कायर' में बगैर हथियार के जाये—और वहाँ आत्म-समर्पण करे। मध्य यूरोपीय टाइम से छ बजे सुबह गिर्जे पर सफेद झण्डा फहराता हो। इसके लिए मैं तुम्हें जाँबख्शी का वादा करता हूँ। न मानोगे तो मौत। आत्म-समर्पण करो।

रियर-ऐडमिरल फॉन एवरशार्प,

जर्मन आक्रमणकारी बेड़े का कमांडर—'

कमांडर ने आत्म-समर्पण की शर्तों को कमिसार के हाथों में दे दिया। कमिसार ने उसे शुरू से आखिर तक पढ़ा और ड्यूटी पर तैनात अफसर से कहा।

'बहुत अच्छा, तुम जा सकते हो।'

ड्यूटी पर तैनात अफसर कमरे से बाहर चला गया।

'अच्छा तो वे गिर्जे पर झण्डा देखना चाहते हैं' एक बार फिर अकेले हो जाने पर कमांडर ने सोच-विचार में डूबे हुए कहा।

'हाँ', कमिसार ने कहा।

'तो वे उसे जरूर देखेंगे', कमांडर ने अपना लबादा पहनते हुए कहा, 'एक बहुत बड़ा झण्डा गिरजाघर पर। क्या कहते हो, कमिसार वे उसे देखेंगे न ? हमारा फर्ज है कि वे उसे जरूर—जरूर देखें। हम जितना बड़े से बड़ा बना सकें उतना बड़ा वह हो। क्या हमें इसके लिए वक्त मिलेगा ?'

अपना हैट खोजते हुए कमिसार ने कहा, 'हमारे पास काफी वक्त है। इस काम के लिए हमारे पास पूरी रात है। हम उन्हें इन्तजार की तकलीफ न होने देंगे। झण्डा वक्त पर तैयार मिलेगा। हमारे दिलेर

नौजवान ही उसे तैयार करेंगे। यह सचमुच एक विराट् चीज होगी, इसका मैं तुमसे वादा करता हूँ।'

कमांडर और कमिसार दोनों ने एक दूसरे को गले लगाया और चूमा, ठीक ओठों पर। यह एक जोरदार आलिंगन था, एक मर्द का आलिंगन जिसने उनके ओठों पर, मौसम की मार खाये हुए तल्ख़ चमड़े के मोटे स्वाद को चढ़ा दिया। उन्होंने एक दूसरे को जीवन में पहली बार चूमा, पुरानी रूसी रस्म के अनुसार। वे जल्दी में थे, वे जानते थे कि एक दूसरे से बिदा लेने का वक्त उन्हें फिर न मिलेगा।

रात भर किले की फौज झण्डा सीने में लगी रही, एक बहुत बड़ा झण्डा, रसोई घर के फर्श से भी बड़ा। इसे तीस मल्लाहों की मोटी सूइयों और मल्लाहों के मोटे तागे से सिया गया।

पौ फटने के कुछ पहले झण्डा तैयार हो गया था। तब मल्लाह जिन्दगी में आखिरी बार सजे, उन्होंने नये नये कपड़े पहने और एक के बाद एक गले से अपनी आटोमेटिक रायफलें लटकाये और जेबों में ठूँस-ठूँस कर गोलियाँ भरे, कतार बाँधे सीढ़ी से ऊपर, सतह पर आये।

पौ फटने पर अर्दली-अफ़सर ने फॉन एवरशार्प के कमरे पर दस्तक दी। फॉन एवरशार्प सो नहीं रहा था। वह अपनी वर्दी में बिस्तर पर पड़ा हुआ था। अपनी ड्रेसिंग-टेबिल के शीशे में उसने अपने को देखा और आँख के नीचे के गढ़ों को ओ-डी-क्लोन से साफ किया। तब कहीं जाकर उसने अर्दली अफसर को कमरे के अन्दर आने की इजाजत दी। अर्दली-अफसर बहुत आवेश में था, बहुत कोशिश करके उसने अपने को काबू में किया और फौजी सलाम के लिए हाथ उठाया।

फ़ॉन एवरशार्प ने अपनी कटार की हाथीदाँत की घुमावदार मूँठ से खेलते हुए, खुश्क आवाज में पूछा—'क्या गिर्जेघर पर झंडा है?'

'जी हुजूर, वे आत्म-समर्पण कर रहे हैं।'

'बहुत अच्छा' फॉन एवरशार्प ने कहा, 'तुम मेरे पास बाँकी खबर लाये हो। बहुत खूब। सब आदमियों को डेक पर बुलाओ।'

एक मिनट बाद वह टाँगें खूब छितराये हुए पुल पर खड़ा था।

सुबह हो ही रही थी ; उदास, तूफानी पतझर की सुबह। अपनी दूरबीन से फॉन एवरशार्प दूर क्षितिज पर ग्रैनाइट के उस छोटे से टापू को देख रहा था। वह एक भयानक, भूरे समुद्र के बीचोबीच था, पानी की जोरदार लहरें, कटे हुए किनारों से पागल की तरह बार-बार आ-आकर टकराती थीं। लगता था जैसे समुद्र को ग्रैनाइट से काट कर ही बनाया गया हो।

मछुओं के उस गाँव की पृष्ठभूमि में सर उठाये खड़ा था वह सँकरा, तिकोना गिर्जा घर जिसका सीधा काला सलीब धुँधले आसमान की चादर पर और साफ दीख पड़ता था। गिर्जेघर की चोटी पर से एक बहुत बड़ा झंडा लहरा रहा था। फूटती हुई सुबह की धुँधली रोशनी में वह अँधेरा-अँधेरा-सा जान पड़ता था, करीब-करीब एकदम सियाह।

फॉन एवरशार्प ने कहा, 'बेचारे ! जान पड़ता है इतना बड़ा सफेद झण्डा सीने के लिए उन्हें अपने कपड़ों की आखिरी चिन्दी तक से हाथ धोना पड़ा है। जो हो मजबूरी है। आत्मसमर्पण की अपनी दिक्कतें होती हैं।'

उसने हुक्म दिया।

हमला करनेवाली और टॉरपीडोमार किश्तियों का बेड़ा तेजी से टापू की ओर चला, पास आने के साथ-साथ टापू बड़ा होता गया। अब दूरबीनों के बगैर भी गिर्जेघर के पासवाले 'स्क्वायर' में खड़े मुट्ठी भर मल्लाहों को देखा जा सकता था।

उसी वक्त सूरज निकला—लाल अंगारा। आसमान और पानी के बीच वह हवा में लटका रहा ; उसका ऊपरी हिस्सा एक धुँधले बादल की परत में छिपा हुआ था और निचला, समुद्र की ऊबड़-खाबड़ सतह पर टिका हुआ था। टापू अँधेरे में डूबा हुआ जान पड़ता था। गिर्जेघर का झंडा लाल हो गया—तपाये लोहे के रंग का।

फॉन एवरशार्प ने कहा, 'अजीब दिल्लगी है, कितना सुहावना दृश्य है ! सूरज ने सफेद झंडे को रँग कर लाल कर दिया है। लेकिन हम इसे जल्दी ही फिर सफेद कर देंगे।'

हमला करनेवाली किश्तियाँ किनारे पर पहुँच गयीं। सीने तक फेनदार पानी में अपनी ऑटोमेटिक रायफलों को सर पर ताने हुए किले पर दौड़ कर पहुँच जाने के लिए जर्मन एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूद रहे थे, फिसलते, गिरते, फिर खड़खड़ाकर खड़े होते हुए अब वे पहाड़ी पर पहुँच गये थे और अब वे खुले हुए भीतरी दरवाजे के रास्ते से तोप खाने की तरफ जा रहे थे।

फॉन एवरशार्प जहाँ खड़ा था, वहीं खड़ा रहा, पुल की छड़ों को पकड़े। वह अपनी आँखें किनारे पर से हटा न पाता था, मानों वहीं वे चिपक गयी हों।

टापू पर कब्जा होते देखकर वह आपे में न था। आवेश में उसके चेहरे की पेशियाँ काँप रही थीं।

'आगे बढ़ो! मेरे बहादुरों आगे बढ़ो!'

अचानक जमीन के नीचे एक बहुत जबर्दस्त धड़ाके ने टापू को हिला दिया। खून में सने हुए कपड़े और इन्सानी शरीर भीतरी दरवाजे में से ऊपर को फिंके। पहाड़ियाँ एक दूसरे से टकराकर दो टुकड़े हो गयीं। उनके अंजर-पंजर ढीले हो गये। टापू के गर्भ में से निकलकर वे सतह पर आयीं और वहाँ, सतह पर से बड़ी-बड़ी दरारों में, जहाँ बारूद से उड़ी हुई तोपें पड़ी थीं, जा गिरीं—जले और मरे हुए धातु का ढेर।

भूडोल के से कंप ने टापू को हिला दिया।

फॉन एवरशार्प चिल्लाया, 'वे तोपें बारूद से उड़ा रहे हैं, उन्होंने आत्म समर्पण की शर्तों को तोड़ दिया है।'

उसी वक्त सूरज बादलों की परत में चला गया। बादलों ने उसे निगल लिया। वह लाल अंधेरा जो टापू और समुद्र पर छाया हुआ था, गायब हो गया। आसपास की हर चीज का रंग यकसाँ ग्रैनाइट का सा हो गया। हर चीज का—गिर्जेघर के झंडे को छोड़कर। फॉन एवर-शार्प को लगा कि उसका दिमाग खराब हो रहा है। भौतिक विज्ञान के सारे नियमों को रौंद कर, गिर्जेघर की मीनार पर का वह बड़ा

झण्डा अभी लाल का लाल ही था। आसमान की भूरी पृष्ठभूमि में उसका रंग और भी गहरा जान पड़ता था। उससे आँख को चोट लगती थी। अब फॉन एवरशार्प की समझ में सब कुछ आ गया। झंडा कभी भी सफेद नहीं था। वह हमेशा लाल था। वह और कुछ हो भी न सकता था। फॉन एवरशार्प भूल गया था कि वह किनसे लड़ रहा है। यह कोई आँख का भ्रम न था। सूरज ने फॉन एवरशार्प को उल्लू नहीं बनाया था। उसने अपने आप का उल्लू बनाया था।

फॉन एवरशार्प ने जल्दी से एक नया हुक्म दिया। बममारों और लड़ाकू जहाजों का एक बेड़ा ऊपर आसमान की तरफ उड़ा। टॉरपीडो-मार किश्तियाँ, विध्वंसक जहाज और हमला करने वाली किश्तियाँ हर तरफ से टापू की ओर दौड़ीं। गीली पहाड़ियों पर नयी टुकड़ियाँ उतरीं। गुललाला की तरह दीख पड़ने वाले छतरी-सैनिक उतरे। बम के धड़ाकों से हवा दहल गयी।

और इस प्रलय की आग में, गिर्जेघर के नीचे ग़ार में तीस सोवियत मल्लाह, पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन, हवा की चारों दिशाओं में अपनी आटोमेटिक रायफलों और मशीनगनों का निशाना साध रहे थे। इस भयानक आखिरी घंटे में एक आदमी भी जिन्दगी के बारे में न सोच रहा था। वह सवाल तो तय हो चुका था। वे जानते थे कि मौत उनका इन्तजार कर रही है। लेकिन मरते दम वे दुश्मन के ज्यादा से ज्यादा आदमियों को मारने का दृढ़ संकल्प किये हुए थे। यही उनका लड़ाई का कर्त्तव्य था, और उन्होंने उसे आखिरी दम तक पूरा किया। उनमें और मुकाबले में डटी हुई फौजों की ताकत में बड़ा फर्क था।

दमदम गोलियों से गिर्जेघर की दीवाल की उड़ी हुई ईंटों और पलस्तर की बौछार के नीचे, बारूद से मटमैले चेहरे लिये हुए, खून और पसीने में तर, वर्दी के अस्तर से फाड़ी हुई रुई से घावों का मुंह बंद करते हुए वे तीस सोवियत मल्लाह आखिरी दम तक लड़ते लड़ते एक के बाद एक खेत रहे। उनके ऊपर एक बहुत बड़ा झण्डा लहरा रहा था, जिसे मल्लाहों की मोटी सुइयों और मोटे तागे से, लाल कपड़ों के उन

सभी अजीब अजीब टुकड़ों को लेकर सिया गया था जो मल्लाहों को अपने बक्सों में मिले। वह बनाया गया था संजोये हुए रेशमी रुमालों, लाल ओढ़नियों, लाल ऊनी स्कार्फों, तम्बाकू रखने की थैलियों, सिंदूरी थैलों और जर्सियों से; 'गृहयुद्ध के इतिहास' के पहले भाग से फाड़ी हुई उसके लोहू के रक्त की लाल छींट की पुश्त और विलायती मकोय के रंग के चमकीले लाल रेशम पर काढ़ी गयी लेनिन और स्तालिन की दो तसवीरें—जिन्हें क्यूबिशेव की नौजवान औरतों ने भेंट किया था—सबों ने मिलकर अग्निशिखा-से इस झंडे को तैयार किया था।

भागते हुए बादलों के बीच, बहुत ऊँचे, वह लहरा रहा था, हिल रहा था, लौ की तरह चल रहा था, मानो कोई न दीख पड़ने वाला झंडाबरदार उसे रणक्षेत्रों के धुएँ के बीच से निर्भीकता के साथ लिये हुए आगे को सतत बढ़ा चला जा रहा हो—जीत की ओर!

अन्स्र्ट टोलर

जन्म, जर्मनी, १८९३
मृत्यु, अमेरिका, १९३९

प्रथम महायुद्ध में भाग लिया, और युद्ध-विरोधी हो गया।

बवेरिया के मजदूर आन्दोलन और सन् १८ की मजदूर क्रान्ति में महत्वपूर्ण भाग लिया और संघर्ष का नेतृत्व किया। कुछ दिन के लिए स्थापित बवेरियन प्रजातंत्र का उपाध्यक्ष चुना गया। फिर प्रजातंत्र छिन्न-भिन्न हो जाने पर पकड़ा गया और उसे पाँच साल की सजा हुई। उसे फाँसी का दंड नहीं मिला इसे संयोग ही कहना चाहिए, क्योंकि उसके लगभग सभी सहकर्मियों को गोली से उड़ाया गया था। एक हड़ताल के सिलसिले में उसे एक बार पहले भी जेल जाना पड़ा था।

जर्मनी में हिटलर का राज कायम होने पर अन्स्र्ट टोलर की कृतियों की सरेबाजार होली जलायी गयी, उनके छापने और पढ़ने पर रोक लगा दी गयी, और उसे जर्मनी से निर्वासित कर दिया गया। अपने जीवन के अन्तिम वर्ष उसने न्यूयार्क, अमेरिका के एक होटल में बिताये। वहीं पर सन् १९३९ में एक रोज वह अपने कमरे में लटकता पाया गया। प्रचारित

हुआ कि टोलर ने आत्महत्या कर ली ; मगर अब लोगों का यह विश्वास हो गया है कि नात्सी एजेण्टों ने—जिनकी अमरीका में बहुत भरमार थी—उसे मारकर इस प्रकार टांग दिया होगा, कि ऐसा लगे कि उसने आत्महत्या की है। टोलर के कवि साथी एरिक म्यूसम के संग बिलकुल यही चीज़ जेल के अन्दर की गयी थी और टोलर ने इसका हवाला दिया है।

अपने बारे में टोलर ने अपने एक मजदूर साथी को सन् २२ में लिखा था :

'मेरा जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। जब मैंने समझा कि हमारी सामाजिक व्यवस्था के मूल में एक वर्ग का दूसरे वर्ग के प्रति अन्याय है, तब मैं मजदूरों की ओर हो गया।'

उसकी कृतियों में उसका 'सात नाटक' नामक एक संग्रह है जिसमें 'मासेज़ ऐण्ड मैन' 'मशीन रेकर्स', 'हॉपला' आदि नाटक शामिल हैं। उसके अलावा 'पास्टर-हॉल' और 'नो मोर पीस' नाटक हैं। 'नो मोर पीस' उसका अन्तिम नाटक है। उसकी आत्मकथा 'आइ वाज़ ए जर्मन' और उसके पत्र 'लेटर्स फ्रॉम प्रिज़न' ये दोनों कृतियाँ उसके जीवन और व्यक्तित्व पर प्रकाश फेंकती हैं। 'लेटर्स फ्रॉम प्रिज़न' में ही उसकी कविताएँ 'सॉंग्स फ्रॉम प्रिज़न' और 'स्वॉलो-बुक' हैं। 'ब्रोकेनब्राउ' अलग से छपी है।

यंत्रणागृह

स्टटगार्ट की खुफ़िया पुलिस के अफसर ने उस मरते हुए नौजवान से पूछा—क्या तुम्हारी ऐसी कोई इच्छा है जिसे तुम इस आखरी वक्त पूरी करना चाहो ?

नौजवान सूनी आँखों से उन बन्द खिड़कियों को एकटक देखता रहा जो आसमान को नीले चौकोर टुकड़ों में काट देती थीं। आँगन में शाहबलूत का पेड़ अपने कँटीले फलों से लदा खड़ा था। उसने अपने से कहा—वह देखो वहाँ कैसे मीठे शाहबलूत लगे हैं, वो तुम्हारे खाने के लिए हैं; और जब वो पक चुकते हैं तो मुँह में आप आ गिरते हैं। मैं उन्हें भरपेट खा सकता था—मैंने अपने को क्यों पकड़ा जाने दिया ?

'कुछ समझे मैं तुमसे क्या कह रहा हूँ ?' अफसर ने दोहराया, 'क्या तुम्हारी कोई आखरी इच्छा है ?'

नौजवान ने अपने से कहा—हाँ एक चीज़ है जो मैं चाहता था, या दूसरी तरह कहो तो नहीं चाहता था। मैं नहीं चाहता था कि फिर से कैद हो जाऊँ, मैं नहीं चाहता था कि तुम मुझे मारो, लतिआओ और मेरे मुँह पर थूको। अगर मेरे पास ऐसी कोई इच्छाएँ होतीं तो क्या मैं खिड़की में से कूद गया होता ? मैं समझता हूँ तुम्हारा यह खयाल है कि मैंने यह सब महज मजाक के लिए किया है। है न ?

'शायद तुम अपनी माँ को देखना चाहो, मरने के पहले ?'

हाँ, यही तो कहते हैं उस काली चीज को मगर वह अगर उसका

नाम न लेता तो उसका कुछ बिगड़ जाता ? मुझे अब यह बतलाने की जरूरत नहीं कि मुझे मरना है : और उस चीज का नाम मेरे मुँह पर लेना बहुत बेहूदा बात है।......मगर वह मरेगा नहीं, वह तो घर जायगा।

'हाँ मैं अपनी माँ को देखना चाहूँगा। कितना अच्छा आदमी है कि उसे इस बात का खयाल है ; उसकी नीयत यही है शायद......'

उसने भावशून्य आँखों से अफसर को देखा और सिर हिलाकर अपनी मौन स्वीकृति दी।

'मैंने उन्हें बुलाने के लिए आदमी दौड़ा दिया है, थोड़ी देर में आ भी जाती हैं वे।......अरे हाँ एक सवाल है जिसका अब तक हमें कोई जवाब नहीं मिला : वह कौन था जिसने तुम्हें वे पत्र दिये ?'

अफसर ने इन्तज़ार किया।

बहुत खूब, नौजवान ने सोचा। उस सवाल से उसके मुँह का स्वाद न जाने कैसा हो गया। उसे अचानक ऊब और खीझ मालूम हुई।

एक बार उन्होंने उसके मुँह में इसलिए ठेंपी ठूँस दी थी कि वह चिल्ला न सके और आज वे चाहते हैं कि वह चिल्लाये और अपने उन साथियों का नाम उगल दे जिनके पीछे वे हफ्तों से कुत्तों की तरह लगे थे। कितनी घिनावनी बात है यह, कितनी घिनावनी।

'मैं आपको कुछ नहीं बतला सकता।'

'अपनी माँ का खयाल करो।'

नौजवान ने छत की ओर देखा।

वह और चार घण्टे जिन्दा रहा। चार घण्टे में तो बहुत से सवाल किये जा सकते हैं। अगर तीन मिनट में एक पूछा जाय तो भी हुए अस्सी। अफसर अफसरी में कुशल था, अपना काम समझता था, इसके पहले वह बहुतों से सवाल कर चुका था, मरते हुए लोगों से भी। तुम्हें जानना चाहिए काम करने का ढंग, और बस। किसी से गला फाड़कर चिल्लाओ, किसी से धीमे धीमे कान में बात करो, कुछ को धमकी दो, कुछ को सब्ज़बाग़ दिखलाओ।

अफसर ने कहा—यह तुम्हारे ही भले के लिए है।

लेकिन नौजवान ने फिर कोई सवाल न सुना, न धीमे न जोर से। वह शान्ति के साथ इस दुनिया से अपना टिकट कटा चुका था।

दूसरे दिन अखबार में यह विज्ञप्ति छपी :

'जैसे ही खुफिया पुलिस के अफसर स्टटगार्ट के मजदूर ..को इस अभियोग में पकड़नेवाले थे कि वह मजदूरों को भड़कानेवाले पर्चे बाँटता था, वैसे ही वह अपने मकान की तीसरी मंजिल की खिड़की से नीचे आ रहा। उसे आँगन में पड़ा पाया गया। उसकी पेड़ू की हड्डी चूर-चूर हो गयी थी।

'कुछ दिन बाद वह जेनरल अस्पताल की हवालाती कोठरी में मर गया।'

अन्तिम घड़ी

मशीनगनों ने कड़कना शुरू कर दिया है। तोपचियों की टुकड़ी तैयार हो रही है। और एक पल में हम लड़ाई के बीच होंगे...

[एक सोवियट सैनिक अपने एक साथी को खत लिखते हुए बताता है कि वह किस चीज के लिए लड़ रहा है।]

मॉस्को (मेल से)

साथी ! हमें अभी हुक्म पढ़कर सुनाया गया है। पौ फटते, हमें छापा मारना है। पौ फटने को सात घंटे हैं।

रात। ऊपर तारों का दूर से टिमटिमाना। और निस्तब्धता। तोपों का गरजना बन्द हो गया है। मेरे पड़ोसी की जरा आँख लग गयी है। कहीं पर कोने से एक भिन्‌भिन्‌-सी आवाज मुशकिल से सुन पड़ती है। फौजी दूत कुछ बुदबुदा रहा है...

एक अजीब-सी निस्तब्धता के कुछेक पल हैं जिन्हें भूला ही नहीं जा सकता।

किसी दिन मैं यह रात याद करूँगा, ३० अक्तूबर १९४१ की यह रात। डॉन के मैदान के ऊपर तैरता हुआ यह चाँद याद करूँगा। और याद करूँगा कि तारे किस तरह सिहर रहे थे गोया वे ठिठुर गये हों। याद करूँगा किस तरह मेरा पड़ोसी नींद में, परेशान करवटें बदल रहा था। और पहाड़ियों को, खाइयों और तोपें गाड़ने के मुकामों को एक निस्तब्धता ढँके हुए थी—तूफान से काँपती हुई निस्तब्धता। लड़ाई के ठीक पहले की तारीकी। मैं अपनी खाई में पड़ा हुआ था ; फ्लैश-

लाइट को अपने गीले बरानकोट से ढँककर तुमको खत लिख रहा था और सोच रहा था...और उत्तरी आर्कटिक महासागर से लेकर काले सागर तक लाखों दूसरे लड़ाके मेरी ही तरह लेटे हुए थे, रात में, नम जमीन पर। वे पौ फटने और छापा मारने का इन्तजार कर रहे थे और सोच रहे थे जीवन और मौत के बारे में, अपने भविष्य के बारे में।

साथी! आदमी जीना बहुत चाहता है। मैं जीना चाहता हूँ, साँस लेना चाहता हूँ, घूम सकना चाहता हूँ, अपने सर के ऊपर आसमान देखना चाहता हूँ। लेकिन ज्यों-त्यों किसी भी तरह की जिन्दगी में नहीं जीना चाहता। सिर्फ जिन्दा रहने में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है—सिर्फ अस्तित्व बनाये रखने में।

कल रात हमारी खाई में 'उस पार' से घिसटकर एक आदमी आया। फासिस्टों से बचकर। फूली टाँगों और छिली चमड़ीवाली लहू-लुहान कुहनियों के बल घिसटकर वह आया था। जब उसने हमको देखा, अपने आदमियों को, तो वह रोने लगा। वह लोगों से बार-बार हाथ मिलाता था। वह सबको गले लगा लेना चाहता था। उसका चेहरा हिलता था; उसके होंठ काँपते थे। हमने उसको रोटी और मक्खन और तमाखू दी। जब वह खा चुका तो शांत होने पर उसने हमें जर्मनों के सम्बन्ध में बताया; उसने बलात्कार और यंत्रणाओं और डाकेजनी की बातें बतायीं। उसकी बातों को सुनकर खून उबलता था और दिल की धड़कन तेज हो जाती थी।

मैंने उस आदमी की पीठ देखी। मैं फिर और कुछ न देख सका। मेरी आँखें उसकी पीठ से चिपक गयी थीं। वह किसी भी कहानी से ज्यादा डरावनी थी।

फासिस्टों की हुकूमत में वह सिर्फ डेढ़ महीना रहा था, मगर उसकी पीठ दोहर गयी थी, जैसे उसकी रीढ़ टूट गयी हो; जैसे वह सारे डेढ़ महीने कमर झुकाकर, मुड़ते और बल खाते हुए चला हो; और उसकी पीठ होनेवाले प्रहारों के डर से लगातार काँपती रही हो। यह ऐसे आदमी की पीठ थी जिसका आत्म-गौरव चूर कर दिया गया है। यह

एक गुलाम की पीठ थी। मन करता था, चिल्ला उठूँ, 'तनकर खड़े हो जाओ। कंधों को पीछे की तरफ फेंको साथी, तुम अपनों ही के बीच हो।'

मेरे सामने आरसी की तरह साफ हो गया कि फासिस्टों के खजाने में मेरे लिए क्या है : टूटी हुई रीढ़ की जिन्दगी, गुलामी की जिन्दगी।

साथी! पौ फटने को पाँच घण्टे हैं। पाँच घण्टे में मैं लड़ने चला जाऊँगा। मैं सामने दीख पड़नेवाली इस भूरी पहाड़ी के लिए फासिस्टों से न लड़ूँगा। नहीं, मैं लड़ूँगा ज्यादा बड़ी चीजों के लिए। इस निश्चय के लिए कि अपने भविष्य का मालिक मैं हूँ या हिटलर।

अब तक मैं और तुम, हर कोई, अपने भविष्य का मालिक आप रहा है। हम अपनी मर्जी के मुताबिक काम चुनते, अपनी मर्जी के मुताबिक पेशा चुनते, जिस औरत से प्रेम करते उससे शादी करते। हम सब हौसले के साथ आगे की ओर भविष्य को निहार रहे थे। सारा देश हमारी मातृभूमि था। हर मकान में साथी थे। हर पेशे की इज्जत थी, काम बहादुरी और शान की बात थी। हर शख्स जानता था कि कोयले का हर टन जो वह खान से खोदता है, उसे इज्जत, शोहरत और इनाम से मालामाल करता है। गेहूँ का हर मन जो वह काटता है, उसकी, उसके कुनबे की, दौलत बढ़ाता है।

लेकिन अब फासिस्ट के घुस आने का खतरा है। वह फासिस्ट तुम्हारे भविष्य का मालिक बन जायगा। वह तुम्हारे वर्तमान को रौंद देगा और भविष्य को चुरा ले जायगा। वह तुम्हारी जिन्दगी, तुम्हारे घर, तुम्हारे कुनबे पर हुकूमत करेगा। वह तुम्हें तुम्हारे घर से बाहर कर देगा और तुम टूटी कमर लिये हुए बारिश और कीचड़ में खदेड़ दिये जाओगे। हाँ मुमकिन है वह तुम्हें जीने दे; उसे लद्दू जानवरों की जरूरत है। वह तुम्हें गुलाम बना देगा—ऐसा गुलाम जिसकी पीठ दोहर गयी है। तुम गेहूँ के मन के मन गट्ठर काटकर लाओगे, लेकिन वह उसे ले जायगा और तुम्हें भूखा छोड़ देगा। तुम खान से टन के टन कोयले खोदकर लाओगे लेकिन वह उसे ले जायगा और

तुम्हें गाली देगा : 'ऐ रूसी सूअर, तुम काम अच्छा नहीं करते।' उसके लिए तुम हमेशा 'रूसी आइवन' बने रहोगे यानी नीचे स्तर का एक चौपाया। वह तुम्हें अपने पिता की जबान भूल जाने को मजबूर करेगा, वह जबान जिसमें तुमने अपने सपनों को झुलाया है, वह जबान जिसमें तुमने अपनी प्रेयसी को अपना प्रेम बताया था; और जब तुम एक विदेशी भाषा बोलने में लड़खड़ाओगे, तो वह तुम्हारी खिल्ली उड़ायेगा।

वह तुम्हारी अभिलाषाओं को रौंदेगा और तुम्हारी उम्मीदों पर थूकेगा। तुमने अभिलाषा और उम्मीद की है कि तुम्हारा बेटा बड़ा होने पर विद्वान् बनेगा, इंजीनियर बनेगा, योग्य व्यक्ति बनेगा। लेकिन फासिस्टों के पास रूसी वैज्ञानिकों का कोई इस्तेमाल नहीं है; स्वयं अपने वैज्ञानिकों को उन्होंने काल-कोठरियों में ठूँस रक्खा है। उनको तो बस नासमझ लद्दू जानवरों की जरूरत है। और तुम्हारा बेटा फासिस्ट जूए में बैल की तरह बाँध दिया जायेगा और उसका बचपन, उसकी जवानी, और उसका भविष्य सब धूल में मिल जायगा। तुमने अपनी प्यारी-सी बच्ची को लाड़ किया है, पाला-पोसा है। कितनी बार तुमने और तुम्हारी पत्नी ने मारिंका के छोटेसे सफेद पालने पर झुककर जीवन में उसके सुख पाने का मीठा सपना देखा है। लेकिन फासिस्टों को स्वच्छ, तन्दुरुस्त रूसी लड़कियों की जरूरत नहीं है। तुम्हारे नाज और खुशी की मूरत मारिंका—खूबसूरत बच्ची—भूरी कमीजवाले फासिस्ट गिरोहों के मजे के लिए किसी चकले में ढकेल दी जायगी।

तुम्हें अपनी पत्नी पर नाज है। उसे हमारे गाँव में हर कोई पसंद करता है। तुम्हारी ओकसाना! हम सब ने तुमसे ईर्ष्या की है उसके लिए। लेकिन गुलामी में औरतों के पनपने का कोई मौका नहीं होता। वे उम्र से पहले बूढ़ी हो जाती हैं। तुम्हारी ओकसाना देखते-देखते एक बूढ़ी औरत हो जायगी। जिसकी पीठ दोहर गयी है ऐसी एक बूढ़ी औरत।

तुम अपने माँ-बाप की इज्जत करते हो क्योंकि वे ही तो तुम्हें दुनियाँ में लाये और उन्हीं ने तो तुम्हें बड़ा किया? हमारे देश ने तुम्हारी मदद की जिसमें तुम उनका बुढ़ापा सुखी, शान्त और इज्जतदार बना सको। लेकिन फासिस्टों के पास बूढ़े रूसियों का कोई उपयोग नहीं है: बूढ़े काम नहीं कर सकते और इसलिये उन्हें भूखों मरना होगा क्योंकि फासिस्ट तुम्हारे माँ-बाप को तुम्हारे काटे हुए अनाज की एक रोटी न देंगे।

मुमकिन है, तुम यह सब बर्दाश्त कर सकोगे। मुमकिन है कि तुम मरोगे नहीं, कुछ हो जाओगे, समझौता कर सकोगे, एक अंधी भूखी और बेमजा जिन्दगी को घसीटकर आगे ले जा सकोगे।

मैं ऐसी जिन्दगी को लात मारता हूँ। नहीं, मैं उस तरह नहीं जीना चाहता। ऐसी जिन्दगी से मौत बेहतर है! मेरी गर्दन में जुआ पड़ने के बजाय मेरे गले में संगीन का भोंका जाना मुझे मंजूर है। नहीं एक वीर की मौत मरना अच्छा है गुलाम की तरह जीने से!

साथी! पौ फटने को सिर्फ तीन घण्टे और हैं। मेरा भविष्य मेरे हाथ में है। मेरा भविष्य मेरी संगीन की तेज नोंक पर है... मेरा भविष्य, मेरे कुनबे का भविष्य, मेरे देश का भविष्य, मेरे राष्ट्र का भविष्य।

साथी! आज हमने तीसरी कम्पनी के ऐंटन शुवीरीन को गोली मार दी। रेजिमेण्ट शुवीरीन को घेरकर खड़ा हुआ था। आसमान जैसे त्योरियाँ बदल रहा था, और पीली पत्तियाँ काँपती हुई कीचड़ में गिर रही थीं। हमारी सफें निश्चल थीं। एक व्यक्ति न डोलता था।

उसके हाथ पीछे को थे और वह हमारे सामने खड़ा था। दयनीय डरपोक गद्दार, भगोड़ा ऐंटन शुवीरीन। उसकी आँखें हमसे न मिलती थीं और दायें-बायें कतराती थीं। वह हमसे डरता था, अपने साथियों से। आखिरकार हमीं तो थे जिनके साथ उसने गद्दारी की थी।

क्या वह फासिस्टों की जीत चाहता था? हरगिज नहीं। किसी भी रूसी की तरह वह चाहता था कि फासिस्ट न जीतें। लेकिन उसकी

आत्मा गुलाम की थी और दिल धोखेबाज का। निश्चय ही, उसने भी जिन्दगी और मौत के बारे में, अपने भविष्य के बारे में सोचा था और तय किया था : मेरी अपनी चमड़ी ही मेरा भविष्य है।

उसने समझा वह काफी चतुराई की बात कर रहा है : अगर हमारे आदमी जीतते हैं—क्या कहने। मेरी चमड़ी सुरक्षित रहेगी। अगर फासिस्ट जीतते हैं—तब भी ठीक ही है। गुलाम रहूँगा लेकिन अपनी चमड़ी तो बचा लूँगा!

वह युद्ध से भाग जाना चाहता था, वक्त गुजारना चाहता था। गोया युद्ध से कोई छुप भी सकता है! वह चाहता था कि उसके साथी उसके लिए लड़ें और मरें। वह उँगलियाँ चटखाकर युद्ध काट देना चाहता था।

लेकिन ऐंटन शुवीरीन, अपने लेखे-जोखे में तुमने गलती की! अगर तुम बच-बचकर बाहर ही बाहर रहना चाहते हो, तो तुम्हारे लिए कोई न लड़ेगा। यहाँ पर हर कोई अपने और अपने देश के लिए लड़ रहा है। अपने कुनबे के लिए, और अपने देश के लिए। अपने भविष्य के लिए और अपने देश के भविष्य लिए। तुम हमको अलग नहीं कर सकते; सुना तुमने? तुम हमको हमारी मातृ-भूमि से अलग नहीं कर सकते। अपने सारे रक्त, हृदय, शरीर से हम उसके साथ बँधे हैं। उसका भविष्य हमारा भविष्य है। उसका ध्वंस हमारा ध्वंस है, उसकी जीत हमारी जीत है।

और जब हम जीत चुकेंगे, हम हर किसी से पूछेंगे : 'तुमने हमारी जीत में क्या सहयोग दिया?' हम कुछ न भूलेंगे। हम किसी को माफ न करेंगे! वहाँ देखो, उस झाड़ी में वह है। बदजात ऐंटन, वह आदमी जिसने अपनी मातृ-भूमि का साथ उसके सबसे गाढ़े दिन में छोड़ा। वह अपनी चमड़ी एक कुत्ते की जिन्दगी पाने के लिए बचाना चाहता था और उसे कुत्ते की मौत मिली।

हम दृढ़ता से डग बढ़ाते हैं। हम उधर बगैर देखे हुए डग बढ़ाते हैं। अफसोस न महसूस करते हुए। बिहान होते हम लड़ने जायँगे।

संगीनों से छापा मारने । हम लड़ेंगे, अपनी जिन्दगी पर बगैर जरा-सी मुरौवत किये । मुमकिन है हम मर जायँ। लेकिन कोई हमारे बारे में यह न कह सकेगा कि हमने पीठ दिखायी, कि अपनी मातृभूमि से ज्यादा हमें अपनी चमड़ी प्यारी थी ।

साथी ! पौ फटने को अब दो घण्टे हैं । मैं रात के अँधेरे को चीरता हुआ ऐसे आदमी की निगाहों से देख रहा हूँ जो लड़ाई और अपनी संभाव्य मृत्यु की नजदीकी के कारण बहुत दूर तक देख पाता है। बहुतेरी रातों, दिनों, महीनों के उस पार मैं आगे देखता हूँ और दुःख के पहाड़ों के पार जीत देखता हूँ । हम जीतेंगे । लहू की नदियों, तक-लीफों और यन्त्रणाओं के बाद, युद्ध की भीषणता और ग़लाज़त के बाद हमें जीत मिलेगी । दुश्मन पर अन्तिम और मुकम्मिल जीत । हमने उसके लिए तकलीफ सही है और हम जीतेंगे ।

लड़ाई के पहले के सालों को याद करो । हमारी पीढ़ी के सर पर हमेशा से लड़ाई की यह तलवार झूमती रही है । हम जीते थे, काम करते थे , अपनी पत्नियों को छाती से लगाते थे, अपने बच्चों को पालकर बड़ा करते थे लेकिन एक पल को सुध न खोते थे । उधर हमारी सरहद के पार एक खूँखार दरिन्दा तैयार हो रहा था । वह अपने दाँतों को निकाल रहा था और उन्हें तेज कर रहा था । युद्ध हमारा हर वक्त का पड़ोसी था । उस साँप की फूँक ने हमारी जिन्दगियों, हमारी मेहनत, हमारे प्यार में जहर दौड़ा दिया था । हम चैन से न सोते थे । हम इन्तजार कर रहे थे ।

उस दरिन्दे ने हम पर हमला किया । वह हमारे मुल्क में है । बड़ी ही कठोर और भीषण लड़ाई हो रही है । लड़ाई, जिसका अन्त मृत्यु में ही हो सकता है । किसी किस्म के समझौते अब नामुमकिन हैं । अब कुछ सुनने को नहीं । है सिर्फ गला घोंटना, नष्ट करना और हमेशा के लिए हिटलरी दरिन्दों का सफाया करना । और जब आखिरी फासिस्ट अपनी कब्र में जा रहेगा और जर्मन हॉवित्ज़र तोपें आखिरी बार भूँक चुकेंगी, तभी इस भीषण डरावने सपने का खात्मा होगा ।

एक निस्तब्धता, विजय की एक विराट् अटूट निस्तब्धता तब आयेगी। और साथी, हम तब सिर्फ जंगल की खुश पत्तियों की सरसराहट ही न सुनेंगे, बल्कि सुनेंगे तमाम दुनिया, सारी मानवता की सुख और चैन से ली गयी साँस।

हम आजाद किये गये शहरों और गाँवों में दाखिल होंगे और एक जीत से उल्लसित शांति हमारा स्वागत करेगी—खुशी से छलकते हुए हृदयों की शान्ति। और फिर, नये सिरे से बनी हुई फैक्टरियों और मिलों से धुँआ उठेगा। जिन्दगी में फिर उबाल आयेगा—बहुत खूब जिन्दगी होगी, साथी! वास्तव में एक महान और कीमती जिन्दगी होगी वह एक आजाद दुनिया में जिसमें हर कौम में भाई-चारा होगा। ऐसी जिन्दगी के लिए मरना कोई बहुत बड़ी कीमत नहीं है। यह मौत नहीं है। यह अमरत्व है।

साथी, विहान हुआ...डरते-से, भूरे साये धरती पर फैल गये हैं। जीवन मुझे कभी इतना सुन्दर न जान पड़ा था जितना इस घड़ी। देखो डॉन का मैदान कैसा फूल रहा है, खड़िये के रंग के टीले सूरज की किरणों में कैसे रुपहले हो रहे हैं!

हाँ, जीने का मतलब होता जरूर है। इसलिए कि विजय मिली देखूँ। इसलिए कि अपने बड़े कोट की तहों में अपनी नन्हीं बच्ची का घुँघराले बालोंवाला सर छुपा लूँ। मुझे जिन्दगी से बड़ा मोह है और इसीलिए अब मैं लड़ने जा रहा हूँ। मैं जिन्दगी के लिए लड़ने जा रहा हूँ। एक अच्छी जिन्दगी के लिए, साथी; गुलाम के अस्तित्व के लिए नहीं। अपने बच्चों के सुख के लिए, अपनी मातृभूमि के सुख के लिए, अपने सुख के लिए। मैं जिन्दगी को प्यार करता हूँ, पर मौत से नहीं डरता। दिलेरी से जीना और दिलेरी से मरना, जिन्दगी का यही मतलब मैं जानता हूँ।

विहान......

मशीनगनों ने कड़कना शुरू कर दिया है। तोपचियों की टुकड़ी तैयार हो रही है और एक पल में हम भी लड़ाई में होंगे।

साथी ! मेरे अपने डॉन के मैदान पर सूरज निकल रहा है। लड़ाई का सूरज। इसकी किरणों के नीचे, साथी, मैं उल्लास के साथ शपथ खाता हूँ : मेरे पैर न लड़खड़ायेंगे। घायल होने पर अपनी सफों को छोड़ूँगा नहीं। दुश्मनों से घिर जाने पर आत्मसमर्पण न करूँगा। मेरे मन में कोई डर, कोई उलझन, दुश्मन के लिए कोई दया नहीं है। है सिर्फ एक घृणा, एक हिंस्र घृणा। कलेजे को आग लग गयी है। यह मरते दम तक की हमारी लड़ाई है।

और लो, मैं चला।

'न्यू मासेज' से लिया गया।

कौंस्तांतिन सिमोनोफ़

कौंसतांतिन सिमोनोफ आधुनिक सोवियत साहित्य-कारों में अग्रणी है। युद्ध के पहले उसका नाम नहीं सुना गया था। कहना चाहिए कि सोवियत रूस के हिटलर-विरोधी संग्राम ने ही उसे उत्पन्न किया। इलिया एरेनबुर्ग को छोड़कर शायद अन्य किसी सोवियत साहित्यकार ने युद्ध के दौरान में, अपने देश को जागरित करने में सिमोनोफ से अधिक कार्य नहीं किया। उसने बहुत लिखा और बहुत अच्छा लिखा। छोटे-छोटे युद्ध-रिपोर्ताजों के अलावा जिनके कई संग्रह निकले हैं जिनमें 'फ्रॉम द ब्लैक सी टु द बारेन्ट्स' मुख्य है, सिमोनोफ की मुख्य रूप से प्रसिद्ध कृतियाँ हैं,—मास्को, स्तालिनग्राद फाइट्स ऑन, (ये मास्को और स्तालिनग्राद की भीषण लड़ाई के अनूठे चित्रमय रिपोर्ताज हैं), 'वेट फॉर मी' शीर्षक कविता जिसे सोवियत सैनिकों में बड़ी ख्याति और जन-प्रियता मिली, और 'द रशन पीपुल' शीर्षक बड़ा नाटक जो सोवियत के अनेक युद्ध मोर्चों पर असंख्य बार अभिनीत हुआ और जिसे सोवियत के युद्ध-संबंधी चार सर्वश्रेष्ठ नाटकों में से एक समझा जाता है।

बहुत खोजने पर भी सिमोनोफ की जन्मतिथि नहीं

मिल सकी। मगर यह बात निश्चय के साथ कही जा सकती है कि अभी उसकी उम्र अधिक नहीं।

कुछ ही दिन हुए उसका नवीनतम नाटक 'द रशनन क्वेस्चन' 'सोवियत लिटरेचर' में प्रकाशित हुआ है। इस नाटक में उसने सोवियत-विरोधी प्रचार करनेवाले साम्राज्यवादी प्रेस मालिकों का भंडाफोड़ किया है। इस नाटक को अमरीकन रंगमंच पर अभूतपूर्व सफलता मिली है।

उसका एकलौता बेटा

यह पड़ाव के बहुत पीछे की बात है। हवा के भीषण झोंके जमीन पर पड़ी बर्फ और ओलों को उड़ा रहे थे। पुल उड़ाने के बाद छापामार किनारे की ओर उस छोटी सी निर्जन खोह को जा रहे थे जहाँ उनको ले जाने के लिए उन्हें एक मोटर तैयार मिलने वाली थी। पहली ही बार बर्फ पिघलने के बाद चोटियों पर बर्फ जम गयी थी और उन पर चढ़ने के लिए हाथों और घुटनों के सहारे चलना पड़ता था। भेड़ियों के गिरोह की सी दृढ़ता से जर्मन उस बर्फ में उनका पीछा कर रहे थे। वे बीच-बीच में पीछे रह जाते और पहाड़ियों में फँस कर न जान पाते कि शिकार किस ओर गया लेकिन फिर वे उनके चिह्न पा जाते।

सब कुछ बड़ी शान से होता चलता अगर शुरू ही में लेफ्टिनेन्ट यरमलोफ ऑटोमैटिक राइफिल की एक लक्ष्यहीन बौछार से घायल न हो गया होता—यह हद दर्जे की बदकिस्मती अचानक ऐसे लोगों पर आ गिरती है जो दर्जनों बार, मुसकराते हुए मौत से बाल-बाल बचे होते हैं। यरमलोफ के दोनों पैर घुटनों के ऊपर से टूट गये थे। वह गिर पड़ा, कोहनियों के सहारे जरा उठा और उसने पानी माँगा। एक फ्लास्क में से कुछ बूँदें उसके मुँह में डाली गयीं। उसने अपनी टूटी टाँगों को और अपने शरीर के नीचे भरकर आसपास के बर्फ को रँगती हुई खून की काली नदी को देखा और कहा—'मुझे छोड़ दो।' वे सब जानते थे कि वह बात ठीक कह रहा है, लेकिन उसे छोड़ना उनकी ताकत से परे था। यरमलोफ की आँख बचाते हुए कप्तान सर्गेयेफ ने उसे

उठाने और ले चलने का हुक्म दिया। वे पन्द्रह थे। पाँच पाँच आदमी मिलकर बारी-बारी से यरमलोफ को ले चले। चढ़ाई आने पर वे उसे बर्फ पर लिटा देते और फिर जब कुछ आदमी सरककर ऊपर पहुँचते तो नीचे वाले लोग उसे बाहों में उठाकर ऊपर वाले लोगों के हाथ में दे देते। सारी मनोयोगपूर्ण कोशिशों के बावजूद उन्हें ज्यादा कामयाबी नहीं मिल रही थी।

उनकी चाल अब पहले से कहीं धीमी हो गयी थी और जर्मन उनके बहुत नजदीक आ पहुँचे थे। पीछे आने वाले आदमी रास्ते के पथरीले ढूहों की आड़ लेकर अपनी हल्की मशीनगनों की बौछार से उनको रोके हुए थे। दो घंटे बाद उनकी हालत खतरनाक हो गयी। वे इतने धीमे चल रहे थे कि जर्मन संभवतः घूम कर आने पर भी उनके बराबर तक आ पहुँचे थे।

बर्फ की एक दरार को पार करते वक्त यरमलोफ को एक पल के लिए होश आया। उसने कप्तान को आवाज दी।

उसने कहा ' यहाँ पास आओ!"

सर्गेयेफ कान उसके जलते ओठों के पास ले गया।

'तुम्हें यह सब करने का हक नहीं है।' यरमलोफ ने कहा। गोकि उसके शब्द मुश्किल से सुन पड़ते थे फिर भी उसका स्वर यकायक दृढ़ और रोषपूर्ण हो गया: 'तुम्हें यह सब करने का हक नहीं है। तुम सत्यानाश कर दोगे। यह सरासर देशद्रोह है।'

उसने बोलना बंद कर दिया और आँखें मूँद लीं। वह बात नहीं करना चाहता था।

सर्गेयेफ समझ गया कि 'देशद्रोह' शब्द का इस्तेमाल जान बूझ कर किया गया है जिसमें उसे मजबूर होकर यरमलोफ की ख्वाहिश पूरी करनी पड़े। और यरमलोफ की ख्वाहिश ठीक तो थी ही—भयानक, लेकिन ठीक। सर्गेयेफ उससे अलग होकर साथ-साथ चुपचाप चलने लगा। दरार पार कर चुकने पर एक छोटी-सी पहाड़ी की ढाल पर जहाँ चट्टानें इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं, उसने उसे उतारने का हुक्म

दिया। एक तम्बू को बिछाकर उन्होंने उसे बर्फ पर उतार दिया। सर्गेयेफ ने दूसरों को आगे बढ़ने का हुक्म दिया। उसने अपनी पेटी में से फ्लास्क को खोला, फौजी झोले में से बंद खाने का एक डिब्बा लिया और चाकू से उसे खोला। उसने डिब्बे और फ्लास्क को यरमलोफ के पास, जहाँ उसका बायाँ हाथ पहुँच जाता था, रख दिया; उसके बाद उसने यरमलोफ का रिवाल्वर रखने का चमड़े का केस खोला, रिवाल्वर निकाला और उसे तंबू पर इस तरह रख दिया कि उसका लकड़ी का कुन्दा यरमलोफ की उँगलियों को छू रहा था।

यरमलोफ ने उसे झुकी हुई लेकिन अपलक आँखों से निहारा, पर कहा कुछ नहीं। दो बड़े पत्थर आपस में मिलकर जो कोण बनाते थे, उससे पीठके बल टिककर वह यों लेटा हुआ था जैसे आराम-कुर्सी में हो।

उससे आँख मिलाना अब सर्गेयेफ के लिए मुमकिन था। मरते हुए आदमी की इच्छानुसार उसने सब कुछ, जो भी जरूरी था वह सब कुछ कर दिया था।

सर्गेयेफ ने कहा—तो बस बिदा।

यरमलोफ ने उसके हाथों को अपने हाथों में लिया और बिना बोले अप्रत्याशित दृढ़ता से पकड़कर उसे हिलाया।

सर्गेयेफ बिना एक बार पीछे मुड़कर देखे, आगे बढ़ता गया। एक सेकण्ड बाद उसकी सफेद कमीज एक चट्टान की आड़ में चली गयी और यरमलोफ ने सोचा कि यह आखिरी आदमी है जिसे वह जीते जी देखेगा—और यों तो जर्मन भी हैं।

उसे दर्द के कारण भीषण तकलीफ हो रही थी। वह जल्द से जल्द उसे खत्म कर देना चाहता था, लेकिन जर्मनों का खयाल आते ही आत्महत्या के विचार उसके दिमाग़ से भाग जाते। उसने रिवाल्वर उठा कर उसका लीवर ठीक किया और हवा में फैर किया। वह नहीं चाहता था कि उसके साथियों को संशय के कारण तकलीफ उठानी पड़े, अच्छा है वे यह समझ लें कि सब खत्म हो गया, यही अन्त है।

लेकिन वह अब भी लड़ता जायगा। उसे बहुत खुशी जिस बात की थी वह यह कि उसने इतनी आसानी से रिवाल्वर के कड़े लीवर को उठा लिया था। हाँ तो अब भी उसके हाथों में ताकत है—क्या कहना! उसने फिर रिवाल्वर उठाया और घास के टुकड़े का जो बर्फ के ऊपर से झाँक रहा था, निशाना लेना चाहा। उसने आसानी से निशाना ले लिया, उसका हाथ काँपा नहीं। उसने रिवाल्वर नीचा कर लिया।

बर्फ गिर रही थी। बर्फ से लदे पीले बादल आसमान पर छाये हुए थे। ध्रुव पर का सूरज डूबा न था लेकिन धुँधलका हमेशा से ज्यादा अँधेरा था। एक चतुर स्काउट के सहज ज्ञान के बल पर उसे विश्वास हो गया कि पीछा करते हुए जर्मन देर सबेर उसके पास से गुजरेंगे जरूर। अब सवाल था कि किस दूरी से वे उसे देखेंगे। करीब तीस गज पर वह मार सकेगा। उसने चिंतित होकर आसमान को देखा, बशर्ते बर्फ का तूफान चलता ही रहे।

वह अकेला था, एकदम अकेला, कोई उसकी मदद करनेवाला न था, न तो उसके साथी, न उसका सबसे पुराना दोस्त—उसका पिता। आँख मूँदकर उसने अपने पिता को याद किया, जैसा कि उसने उन्हें आखिरी बार, फौजी हेडक्वार्टर के Dug out † में देखा था। सिगरेट के सिरे को चबाते हुए वह तोपखाने के अपने कागजों को गौर से देख रहा था और बिना सर उठाये हुए नाराजगी के से स्वर में उसने कहा था कि स्काउट अपना काम ठीक से नहीं कर रहे हैं, पिछले महीने उन्होंने सिर्फ चार तोपखानों का पता लगाया था। लेकिन बावजूद इस नाराजगी के स्वर के यरमलोफ जानता था कि उसने अपना काम ठीक से किया है और उसका पिता उससे संतुष्ट है। झूठमूठ ही वह बड़बड़ा रहा था—बेटे के प्रति अपने प्यार को छुपाने का यही उसका ढंग था।

और फिर उसका दिमाग अपने पिता के साथ उसकी मैत्री की सामान्य घटनाओं की तारतम्यहीन, भागती हुई स्मृतियों से भर उठा।

---

† बमबारी से बचने की जगह।

कैसे उसके पिता ने उसे डाँटने का नाट्य किया था, जरा भी अफसोस न किया था जब बचपन में उसे घोड़े ने फेंक दिया था; कैसे वे दोनों व्यायामशाला में तलवार से लड़ा करते थे; कैसे एक बार वह अपने पिता को कोने में ढकेल ले गया था और कितना प्रसन्न हुआ था बुड्ढा और कैसे मूछों में मुसकान छिपाये पहली बार अपनी पत्नी से खाने के वक्त उसने कहा था कि दो आदमियों के लिए वह शराब के दो गिलास मेज पर रक्खे। उसे याद आया कि उसका पिता हमेशा उसकी तरफ सख्ती से पेश आता था, कभी उसे रत्ती भर प्यार न दिखलाता था। लोकाचार के नाते अलेक्सी के सिवाय कभी अल्योशा कहकर न पुकारता था, कैसे वह उसे हमेशा लोगों के सामने डाँटता था। शायद ही कभी उसकी तारीफ करता था, और सो भी उसके मुँह पर नहीं। और फिर भी अनुभूति की उस तीव्रता के साथ जो कुछ ही घंटे का मेहमान आदमी महसूस करता है, उसने अपने पिता के साथ अपनी उस लंबी, शान्त यहाँ तक कि कुछ अनासक्त मैत्री के पीछे छुपे रहनेवाले गहरे प्रेम, कोमलता और गर्व को अनुभव किया। वह निस्संदेह अपनी मा को प्यार करता था, निस्संदेह। लेकिन इस पल उसके प्यार से भरे हाथ, उसकी थकी मुसकान या रोती आँखों के नीचे की उसकी खुशनुमा झुर्रियाँ उसे नहीं याद आ रही थीं। इस पल उसे लगा कि वे सारी चीजें बहुत दूर चली गयी हैं और उनका कोई संबंध उन चीजों से नहीं है जिन्हें वह इस वक्त झेल रहा था। लेकिन इस वक्त उसके पिता की टूटी-फूटी स्मृतियाँ उसके लिए बहुत महत्त्व रखती थीं, उनका सीधा संबंध हाथ के करीब रिवाल्वर रखे हुए उसके इस तरह यहाँ पड़े रहने से था, और गोकि अपने पैर में होनेवाले भयानक दर्द को खत्म कर देने की इच्छा वह मुश्किल से दबा पा रहा था, फिर भी, इस सब के होते हुए भी वह इन्तजार करेगा और करता जायगा।

जो कुछ वह कर रहा था, उसको करने का निश्चय स्पष्टतः उसने सिर्फ इसलिए नहीं किया था कि यह ग्यारहवाँ मर्तबा था जब वह

छापेमार के काम पर जा रहा था और अचानक मौत अब उसके लिए मामूली सी चीज हो गयी थी, बल्कि इसलिए कि चार साल की उम्र से ही वह अपने पिता के साथ बारक-बारक यूनिट-यूनिट घूमा था, इसलिए कि घोड़े पर से गिरने के कारण उसके पिता ने उसके लिए आँसू न गिराये थे, इसलिए कि उसका पिता उससे इतना ज्यादा खुश हुआ था जब तलवार चलाते समय वह उस रोज़ उसे कोने में ढकेल ले गया था, और इसलिए कि जो मौत वह मरने जा रहा था, उसका पिता निस्संदेह उसके अलावा और किसी तरह की मौत की कल्पना उसके लिए न कर सकता था।

उसने आँखें खोलीं और चारों ओर देखा। बर्फ पहले ही की तरह खूब गिर रही थी। उसके पाँव एक सफेद ढूह के अन्दर बिल्कुल छिप गये थे और तंबू पर के काले धब्बे अब नहीं दिखायी पड़ते थे। एक पल के लिए उसे लगा जैसे वह फिर एक नन्हाँ-सा बच्चा हो गया है, बिस्तर में पड़ा है और यह बर्फ नहीं सफेद कंबल है और उसकी माँ अभी आयेगी, कंधों तक उसे खींचकर उसके चारों ओर लपेट देगी। खून की कमी से ही उसे यह कमजोरी की नींद-सी आने लगी थी। इस मूर्छा की हालत पर उसे किसी न किसी तरह जीत तो पानी ही थी। दाँत भींच कर, अनिवार्य दर्द के लिए अपने को तैयार कर, उसने अपनी सारी ताकत इकट्ठी की और यकायक पाँव को झटका दिया: वह भयानक दर्द जो थोड़ी देर के लिए मंद पड़ गया था, फिर सारे शरीर में कौंध गया। वह दर्द एक लोमहर्षक चीज थी मानों किसी ने एक सूई उसे आरपार कर दी हो। लेकिन जिस चीज की उसने कामना की थी, वह उसे मिल गयी थी। दर्द ने उसे झकझोर कर उसकी मूर्छा को दूर कर दिया था।

वह चौकन्ना हुआ। उसने अपनी दाहिनी तरफ, पहाड़ी की जिस ढाल पर वह था उसके सामने की ढाल की तरफ से, कुछ सरसराहट सुनी। 'बड़ी अच्छी बात है कि इतनी जल्दी ही वे आ पहुँचे', उसने सोचा और अपने बायें हाथ से, टीन का डब्बा उलट कर उसने अपनी दाहिनी कोहनी

टीन के डब्बे पर टिकायी—इस तरह ऊँचा भी था और हाथ हिलने का डर भी इसमें न था।

सरसराहट और साफ सुन पड़ने लगी। जर्मन, उतावली के साथ बड़ी उतावली के साथ बढ़ रहे थे। खूब! लेकिन वह अकेला क्यों था, एकदम अकेला? मगर कहीं ऑटोमैटिक राइफलों से लैस उसके दो आदमी यहाँ पर होते......

'अभी एक मिनट में सब खेल तमाशा खत्म हो जायगा और कोई न जानेगा, पिताजी भी नहीं, कि यह सब कैसे हुआ', उसने सोचा, वह चिल्लाना चाहता था, 'पिताजी, क्या मेरी आवाज आपको सुन पड़ती है?'

उसने अपनी कोहनी और आराम से टीन के डब्बे पर टिकायी और एक बार फिर यह जानने के लिए निशाना लिया कि क्या वह उस घास के टुकड़े को जो बर्फ में मुश्किल से दिखायी पड़ता था, अब भी मार सकता है।

रास्ता दाहिनी तरफ, उससे कुछ हटकर जाता था और पहला जर्मन उससे पन्द्रह गज की दूरी पर गुजरा, और उसने उसकी ओर ताका तक नहीं। दूसरा, जो कि घुड़सवारों के अपने कोट के ऊपर एक सफेद कपड़े का गंदा अँगरखा पहने हुए था, झुका और एकाएक बायीं ओर ताकते ही मुँह से एक चीख निकाली। यरमलोफ ने टीन के डब्बे को कसकर दबाये हुए, जब तक कि उसकी कोहनी दुखने नहीं लगी, फैर किया। बंदूक के झटके से उसकी कमजोर बाँह डब्बे पर से खिसक गयी। बड़ी मुश्किल से उसने अपनी कोहनी को फिर डब्बे पर टिकाया और दूसरे जर्मन का जो कि चीख और शरीर के गिरने की आवाज सुनकर उसकी ओर मुड़ा था निशाना लिया। जर्मन की ऑटोमैटिक राइफल उसके कमीज के फीते में उलझ गयी थी और जब तक उसने उसे अपनी गर्दन से निकाल नहीं लिया यरमलोफ रुका रहा, उसने आखिरी पल में ही, जब कि जर्मन अपनी ऑटोमैटिक राइफल को बाँह पर टिकाकर घोड़ा दबाना ही चाहता था, फैर किया। राइफल जर्मन के हाथों से

छूटकर गिर पड़ी; वह दो एक कदम तक लड़खड़ाया; फिर एकदम मुँह के बल बर्फ में गिर पड़ा और तब उसके हाथ यरमलोफ के पाँवों को छू से रहे थे।

ढाल की दूसरी तरफ से एक साथ बहुत सी परछाइयाँ दीख पड़ीं। हाँ—बिलकुल परछाइयाँ। और चूँकि उसके लिए अब वे आदमी नहीं बल्कि एक संपूर्णता में घुल मिल जाने वाले सिर्फ काले धब्बे रह गये थे, इससे यरमलोफ ने जान लिया कि उसकी चेतना लुप्त हो रही है और अगर वह उनके हाथों में जिन्दा नहीं पड़ना चाहता तो उसे फौरन आखिरी गोली दागनी चाहिए। इस आखिरी सेकेंड में उसे यकायक अपनी माँ का ख्याल आया जिसने कितनी ही बार प्यार से उसके मुँह और बालों को चूमा था, और उसने रिवाल्वर कनपटी पर नहीं लगाया, बल्कि अपनी खुली हुई जाकट के अन्दर, फौजी कमीज के बायें जेब से प्रायः दो इंच नीचे, दबाया। उसने अपनी उँगलियों को इतने ताकत से कसा कि उसका दाहना हाथ छटपटाहट के अपने आखिरी क्षण में जब बर्फ पर गिरा तो उस वक्त भी वह रिवाल्वर को मुट्ठी में दाबे हुए था।

२

कर्नल यरमलोफ सबेरा होते होते फौज के हेडक्वार्टर पर वापिस आया। बसंत के मौसिम में गिरने वाली बर्फ के कारण उसे आखिरी बारह मील पैदल ही तय करने पड़े थे। और इस वक्त वह अपने नीले बूट उतारकर अपने कैंप के बिस्तरे पर फैला हुआ सिगरेट का मजा ले रहा था। बर्फीली तूफान, जो कि इन महीनों में नहीं हुआ करता, पिछले दो दिनों से चल रहा था। हवा के झोंकों ने भुइँघरे की सारी गर्मी को निकाल बाहर किया था और लोहे के गोल चूल्हे में लकड़ियाँ डालने के लिए कर्नल नंगे पैरों बीच-बीच में उठता रहता था। अगली चौकियों की हालत के बारे में वह अपने बड़े अफसरों को रिपोर्ट दे चुका था। कमिसार का बिस्तर खाली था, वह अब तक डिविजनल हेडक्वार्टर से

न लौटा था और भुइँघरे में एक अजीब खामोशी का राज था, जो कि सिर्फ लकड़ियों के चटखने और बाहर की हवा की हू हू से भंग होती थी।

पहले, शान्ति के दिनों में, जिसे अकेलापन समझा जाता था—अपने प्यारे लोगों, बीबी-बच्चों का वियोग, घर से अलग कटकर पड़े रहना—अब लड़ाई के जमाने में बहुत दिनों से ऐसा नहीं समझा जाता। वे अनगिनत लोग जो उससे, तोपचियों के अध्यक्ष से, मिलने दिन रात, हर घड़ी आते रहते थे, उसका कमिसार—जो कि मस्त और समझदार नारोस्लाववासी था—जिसके साथ एक ही छत के नीचे वह ग्यारह महीने से था, उसकी टुकड़ियों के कमांडर जिनमें से एक-एक को वह आवाज से पहचानता था और जिन्हें हर रात वह टेलिफोन पर बुलाता था—इन सबों ने, जो उसे तमाम दिन में साँस लेने की फुर्सत न देते थे और उसकी जिन्दगी का हिस्सा बन गये थे, उसके अंदर अकेलेपन के एहसास को कभी का मार दिया था। लेकिन आज जब बर्फानी तूफान के कारण निगरानी की चौकी पर से जरा भी दिखायी न पड़ता था और जब तक कि तूफान खत्म न हो जाय तब तक हर चीज को ज्यों का त्यों पड़ा रहना ही था, जब यकायक एक या मुमकिन है दो घंटे के लिए टेलिफोन पर बातचीत करने या यहाँ हेडक्वार्टर पर सलाह-मशविरा करने तक की जरूरत खत्म हो चुकी थी, तब न जाने क्यों उसे नींद नहीं आयी और एक ऐसा अकेलापन उसके ऊपर अचानक छा गया जो उसने जीवन में कभी महसूस न किया था।

उसने अपनी पत्नी की शकल आँखों के सामने लाने की कोशिश की। लेकिन वह उस पल कहीं इतनी दूर, साइबेरिया में थी कि उसके मन की आँखों के सामने सिर्फ लिफाफों की एक अनंत कतार का भागता हुआ सा दृश्य आया। इन लिफाफों में से कुछ, जिन पर उसकी हस्तलिपि में पता लिखा होता था, संभवतः अब भी वहीं साइबेरिया में लेटरबक्स में पड़े हों; कुछ डाकगाड़ी में, रास्ते में हों, कुछ यहीं बहुत पास डाकखाने में अजनबी हाथों द्वारा अभी इसी वक्त चुने और अलग

किये जा रहे हों। सब चल रहे थे, उसकी तरफ आ रहे थे लेकिन फिर भी वे सिर्फ खत थे और खत चाहे कितने ही अच्छे क्यों न हों आखिर हैं सिर्फ खत ही।

लेकिन उसका लड़का उसके पास था। और मुमकिन है इसीलिए कि वह यहाँ पर उसके नजदीक था, कर्नल को इस बुरी तरह अकेलापन महसूस हुआ। वह अपने लड़के से बहुत कम मिलता था। एक बार अपने पुराने दोस्तों के हाथ उसने यह दरख्वास्त भिजवायी कि उसका लड़का उसी की टुकड़ी में डाल दिया जाय और इसीलिए कि एक बार उसने अपने नियम के विरुद्ध ऐसी एक दरख्वास्त दे दी थी, उसके बाद से काम की जरूरतों को छोड़कर वह फिर कभी अपने लड़के से न मिलता था। और काम की जरूरतें कम होती थीं, बहुत कम। आखिरी बार वह उससे एक महीना पहले मिला था, जब यहीं पर, यहीं इसी भुइँधरे में उसके लड़के ने दुश्मन के पड़ाव के बहुत पीछे काम करने वाले तोपचियों के दल के जाँच पड़तालियों की कार्रवाई की रिपोर्ट दी थी। कर्नल को उस वक्त खुशी हुई थी कि उसके लड़के का चेहरा इतना दृढ़ और मर्दाना था, और वह इतना शान्त, अल्पभाषी और व्यवहार में स्वयं उसके प्रति, अपने पिता के प्रति, इतना ज्यादा शिष्टाचार-परायण था। पहली बार उसने महसूस किया कि उसकी प्रिय, कुशल और स्नेहशीला पत्नी ने, जिससे वह इस विषय पर इतना ज्यादा बहस किया करता था, और चाहे जो हो उसके एकलौते बेटे को बिगाड़ा नहीं था और बीस बरस की उम्र में उसने अपने लड़के को वैसा ही, ठीक वैसा ही पाया जैसा कि वह उसे देखना चाहता था और ठीक वैसा ही जैसा कि अपनी याद के मुताबिक वह स्वयं उस उम्र में था। उसे इस बात की खुशी हुई कि उसके लड़के ने उसके साथ चाय पीने के निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया था और तैयारी की मुद्रा में खड़े होते हुए, जाने की आज्ञा माँगी थी। उसने उसे आज्ञा तो दे दी थी; लेकिन भुइँधरे के दरवाजे तक उसके पहुँचते-ही उसने उसे यकायक पुकारा था—'अलेक्सी'।

और जब उसका बेटा घूमा तो उसने उसे आँख मारी, दिल्लगी के

साथ, दोस्ताने में, उसी तरह जैसे कि बचपन में वह उसे आँख मारता था जब वह कोई शैतानी करते पकड़ा जाता था, जिससे उसकी आगे आनेवाली सिफतों का अन्दाजा लगता था। उसके लड़के ने जवाब में आँख मारी थी और होठों पर मुस्कान लिये हुए दोहराया था—'मैं जाऊँ कर्नल!' और कर्नल ने भी मुसकराते हुए उसे जाने की इजाजत फिर दी थी। ऐसी थी उनकी आखिरी मुलाकात।

असलियत यह थी कि वह उसे बहुत प्यार करता था और उसके लिए उसके मन में वैसी ही हूक उठती थी जैसी उन्हीं पिताओं के मन में उठती है। जिनका एकलौता बेटा होता है और जो कि उनकी आशाओं, उनके गर्व और उनके इस विश्वास का प्रतीक होता है कि उनका लड़का अन्ततः एक सच्चा मर्द बनेगा—उन्हीं-सा या उनसे भी अच्छा।

और इसीलिए कि उसके प्रति अपने लाड़प्यार के कारण वह शर्मिन्दा था, कर्नल अपने लड़के को 'अलेक्सी' छोड़कर और कुछ न पुकारता था, गो कि अन्दर-अन्दर वह उसे 'अलयोशा' या 'अलयोश्का' नाम से ही जानता। उसे कभी-कभी लगता कि उसका लड़का अपने प्रति उसकी ममता को भाँप लेता है, और वह भी ठीक उसी वक्त जब वह उसके साथ खास तौर पर सख्त बर्ताव कर रहा होता है।

भुइँधरे में फिर सर्दी समा गयी थी। कर्नल अँगीठी के पास बैठकर उसमें लकड़ियाँ फेंकने लगा। लोहे की वह अँगीठी जवानी की स्मृतियाँ उभारने लगी—वे दिन जब वह बुद्योनी के नीचे एक घुड़सवार दस्ते का कमांडर था। कुछ दिन से वह अपने काम का अभ्यस्त हो गया था और बाज मौके पर अपने नीचेवालों में उन लोगों पर हँसता और उनका मजाक उड़ाता जिन्हें खवामखवाह उन चीजों में टाँग अड़ाने का मर्ज था जहाँ उनकी जरूरत न होती। लेकिन कभी-कभी जैसे कि इस वक्त, उसे लगता कि उसे युद्धोल्लास, दुश्मन से गुँथने की तत्काल अनुभूति से वंचित कर दिया गया है, उसके दिमाग के सामने घोड़ों की जोड़ियों से खींची जाती हुई, जमीन को रौंदती हुई, घूमकर मौके

की जगह पर आती हुई हल्की तोपों जो कि नजदीक से गोलियों की बौछार कर रही थीं, भारी रूखे स्वर में दिये गये आदेशों, तोपचियों के पसीने से तर चेहरों, जमीन पर कटे रूख की तरह गिरते हुए, दुश्मन की वर्दी में लैस आदमियों की भागती हुई स्मृतियाँ दौड़ गयीं। अब वह इन सबों से वंचित था। युद्ध के सारे दौरान में उसे सिर्फ कल और परसों अतीत की याद दिलानेवाली यह अनुभूति हुई थी। फौजी दस्ते ने हमला किया था और निगरानी की खास चौकी आगे बढ़कर एक ऐसी ऊँची और ऊबड़खाबड़ पहाड़ी पर कायम की गयी थी जहाँ से आसपास का मैदान दूर तक दीखता था। इस मौके पर ड्यूटी ने उसे न सिर्फ वहाँ रहने की इजाजत दी थी ; बल्कि उसका वहाँ रहना लाजमी कर दिया था। और इसलिए पूरे तीन दिन तक उसने कई तोपची टुकड़ियों की लड़ाई का संचालन स्वयं किया था। ये फौज की भारी तोपों की टुकड़ियाँ थीं और दुश्मन की किलेबन्दियों, तोपखानों और चौकियों पर दूर से ही गोलाबारी करती थीं। लेकिन पहाड़ी पर इतनी दूर तक दिखायी पड़ता था कि अपनी फौजी दूरबीन से वह जर्मनों की भागती हुई शकलों, गिरते हुए घोड़ों और आसमान तक धमाके के साथ उड़ते हुए लकड़ी के कुन्दों को पहचान लेता था, चाहे धुँधली तरह ही सही।

लेकिन कल और परसों उसे पहली ही बार मौका मिला था। और मुमकिन है कि जल्दी फिर न मिले। इस विषय में उसका लड़का उससे ज्यादा भाग्यवान् था।

कर्नल किसी के सामने भी, यहाँ तक कि कमिसार के सामने भी इस बात को जिसे वह हद से आगे बढ़ा हुआ समझता था, मान न सकता था और न अपने को दोष देने को ही उसका मन करता था। एक पिता की हैसियत से उसके लिए, छापेमार की जो जिन्दगी उसके एकलौते बेटे ने चुनी थी वह एक बड़ी खतरनाक जिन्दगी थी। उसके बेटे ने उसकी स्वीकृति नहीं माँगी थी और उसने ठीक ही किया था। वह उससे कह ही क्या सकता था ? जरूर उसने स्वीकृति दे दी होती। बल्कि अगर उसके लड़के ने फौजी

दफ्तर पर उसके नीचे जगह पाने की माँग की होती तो वह सिर्फ नाराज न होता बल्कि इसे रोकने के लिए उससे जो बन पड़ता भरसक वह सब करता। नहीं, उसे फौजी दफ्तर के काम से आमतौर पर नफरत न थी—वह निकम्मी बात होती—लेकिन उसके लड़के को वही रास्ता तय करना था जो उसने खुद तय किया था और मजाल नहीं कि वह इस रास्ते में कोई भी मंजिल छोड़ जाय। और अपने कर्तव्य को पूरा करने में जिन्दा रहना उसके बेटे पर और सिर्फ उस पर ही निर्भर करता था—उसको इससे कोई मतलब न था, उसी तरह जैसे उसके बेटे को राह की उन भागती हुई घड़ियों में दख्लन्दाजी करने का कोई हक न था जिनके बीच से वह, उसका पिता, गुजरता था जब छापेमार पार्टियाँ कई-कई दिन तक दुश्मन के पड़ाव के पीछे भटका करती थीं और उनके बारे में कुछ खबर तक न मिलती थी जैसे कि इस वक्त। असलियत में ईमानदारी और सचाई की बात यह है कि आज उसके न सोने की वजह आखिरकार उसका बेटा ही था। पिछले कई दिनों से स्काउटिंग पार्टी की कोई खबर नहीं मिली थी। बर्फानी तूफान जोरों के साथ चल रहा था और कोई नहीं कह सकता था कि वह कब खत्म होगा? कर्नल ने आखिरी लकड़ी डाली और बिस्तर पर बैठ कर नींद आने की झूठी उम्मीद में अपनी पेटी उतारने लगा। उसी वक्त दरवाजे पर दस्तक हुई।

'आ जाओ।'

स्काउटिंग टुकड़ी का कमाण्डर कप्तान सर्गेयेफ भुइँघरे में दाखिल हुआ। स्पष्ट था कि वह अभी लौटा था, अभी वह अपनी घास के रंग की जाकेट पहने था, उसकी आटोमैटिक रायफल कंधों पर थी और अपनी वीरता के सूचक बिल्ले उसने वहीं लगा रखे थे।

'क्या है?'

'एक मिनट' अपनी आटोमैटिक राइफल को आवाज के साथ फर्श पर रखते हुए और कमिसार के बिस्तर पर बैठते हुए सर्गेयेफ ने जवाब दिया।

सर्गेयेफ कठोर गंभीर प्रकृति का आदमी था। उसके चेहरे को देखते ही जान पड़ता था कि वह बुरी तरह थका हुआ है और अभी ही वापस आया है, और चूँकि पिछली बार जाँच-पड़ताल के लिए निकलने पर उसे कोई खास काम तोपची टुकड़ी ने नहीं दिया था इसलिए इस वक्त उसका आना अप्रत्याशित और आशाजनक था।

'क्या है?' कर्नल ने दुहराया और उसने एक सिगरेट जलाते हुए अपने बिस्तर के बराबर-बराबर खिसककर सर्गेयेफ के ठीक सामने बैठना चाहा।

'एक मिनट।' सर्गेयेफ ने दोहराया और किसी कारण से अपनी आटोमैटिक राइफल को धीरे से ठेल कर अलग कर दिया, गोया वह उसके बात शुरू करने में कोई रुकावट हो।

कर्नल ने पूछा, 'क्या उसे चोट लग गयी है?'

सर्गेयेफ ने फुसफुसाकर जवाब दिया, 'नहीं, आन्द्रे पित्रोविच!'

'नहीं' के उच्चारण में कोई खास बात न थी, बल्कि इस बात से कि लड़ाई के इन सारे महीनों में पहली बार उसने इतनी हमदर्दी के साथ उसको संबोधित किया था, नाम और पिता के नाम के साथ, मानो वह कोई बीमार हो, कर्नल समझ गया कि बस अब उसे विवरण जानना ही बाकी है।

सर्गेयेफ के चले जाने पर कर्नल बिस्तर पर चित लेटकर छत को देखने लगा और उसका दिमाग कुछ सोचने की कोशिश करने लगा। लेकिन उसका दिमाग खाली था। एक शब्द उसके सरमें चक्कर काट रहा था, सिर्फ एक 'अलयोशा' 'अलयोशा' 'अलयोशा'—वह शब्द जो अपने बेटे के जीते जी वह कभी न बोला था। 'अलयोशा', उसने दोहराया 'अलयोशा', फिर खामोश हो गया, उसने आँखें बन्द कर लीं, फिर खोलीं और अनवरत इसी एक शब्द को दोहराता रहा। और फिर भी उसका दिमाग खाली था, उसके पास बाकी था सिर्फ दुःख जिसके लिए, ऐसा उसे लगा, लड़ाई के इन लंबे महीनों में उसने अपने को कई बार तैयार करना चाहा था, और सफल नहीं हुआ था। फिर भी

अपने में किसी तरह जान डालने के लिए वह सर्गेयेफ के साथ अपनी बातचीत को ध्यान में लाने की कोशिश करने लगा। क्यों उसने उससे वह बेमानी और निकम्मा सवाल पूछा था, क्या मेरे लिए कोई चिट्ठी है? साफ है कि नहीं थी। अगर होती तो सर्गेयेफ ने उसे दी न होती? लेकिन आखिर थी क्यों नहीं? दो शब्द ही होते।

और यकायक इस चिट्ठी के बारे में और इस बात के बारे में कि कोई चिट्ठी न थी सोचते हुए उसने सविस्तार समूची घटना की तस्वीर अपनी आँखों के आगे बना ली; बर्फ पर बचाव के लिए बनाया गया तम्बू, उसके लड़के के लँगड़े पैर, रिवाल्वर का कुंदा जिसके बारे में सर्गेयेफ ने बताया था, और वह आखिरी गोली जिसकी आवाज जाते हुए उसने सुनी थी। नहीं, चिट्ठी की कोई जरूरत न थी। खुद उसने भी न लिखी होती। फिर उसने अपने दिमाग के सामने अपने लड़के के आखिरी रास्ते को देखा—वे चोटियाँ जिन पर उस गतिहीन शरीर को तम्बू पर लाया गया था, वे चट्टानें जिन पर उसे अकेला छोड़ दिया गया था, एकदम अकेला, या नहीं—अपने हथियार रिवाल्वर के साथ, जीवन में सैनिक का आखिरी दोस्त। उसने उसके सर्द शरीर की ओर पास पहुँचते जर्मनों को देखा। जर्मन......आध घंटे पहले कप्तान सर्गेयेफ ने जान-बूझकर, मानों उसके दुःख को कम करने के लिए, विस्तार के साथ उन जाँच-पड़ताली दौरों का बयान किया था जिनमें उसके लड़के के साथ-साथ उसने भाग लिया था, दुश्मन की चौकियों पर फेंके गये दस्ती बम, बारूद से उड़ा दिये गये पुल, वे जर्मन अफसर जिन्हें उन्होंने खत्म किया था। नहीं, इसने उसके दुःख को कम नहीं किया था। वह उसका एकलौता बेटा था और अब उसके मर जाने पर, दुनिया में कोई चीज उसकी क्षति को पूरा नहीं कर सकती, लेकिन इस खयाल के कारण कि उसका लड़का कामयाब हुआ था, सारी चीजों के बावजूद अपने को खत्म करने में कामयाब हुआ था, उसका दुःख निराशा में न बदला था, लेकिन दुःख वह ज्यों का त्यों बना रहा।

अनायास ही अपनी पिछले कुछ दिनों की जिन्दगी के बारे में

उसने सोचा, भागते हुए सैनिक जिन्हें उसने अपनी फौजी दूरबीन से देखा था, गिरते हुए घोड़े, बारूद से उड़कर आसमान से बात करते हुए कुंदे और उसे उस दम लगा कि उस लड़ाई की भीषणता में, जिसमें उसने इन दिनों भाग लिया था, जैसे उसके लड़के की मौत का पूर्वाभास था, उसके प्रतिशोध, दुःखी पिता के प्रतिशोध का पूर्वाभास।

उसे लगा कि उन पलों में जब वह भारी आवाज में निगरानी की चौकी पर फुर्ती के साथ हुक्म दे रहा था, वह अपने लड़के के बगल में था और साथ-साथ...वे उन आदमियों को मार रहे थे, खत्म कर रहे थे, तहस-नहस कर रहे थे, जिन्हें वह इस बुरी तरह नफरत करता था कि उनका गला घोंटने के लिए बेचैन था।

लेकिन इस सबके बावजूद उसकी तबियत सुधरी नहीं। उसी वक्त उसे लगा कि वह कभी भी हताश न होगा और पहले ही की तरह अब भी बावजूद उस दुःख के जो उसे बर्दाश्त करना पड़ा था, वह उतने ही जोश के साथ जीना और लड़ना चाहता था। हाँ मुख्यतः लड़ना।

लेकिन उसकी बीबी? वह क्या कहेगी......वह अपने हाथों से इन हत्यारों का गला नहीं घोंट सकती, उसकी तरह वह मौत बरसाने-वाली तोपों का मुँह उन हत्यारों की तरफ नहीं मोड़ सकती, उसको यह लिखना, यह बताना कि उसके लड़के ने अपनी आखिरी गोली अपने लिए रख छोड़ी थी......नहीं, यह नामुमकिन था। उसको यह बताना कि उसके लड़के के शरीर को उसके साथी कब्र में नहीं रख सके...यह भी नामुमकिन था। उसको लगा कि उसका दुःख न मिटेगा, न कल न परसों...कभी नहीं और उसे अपनी बीबी को फौरन खत लिखना चाहिए। अभी इसी मेज पर, बगैर कल पर टाले, क्योंकि कल लिखना आज से भी ज्यादा मुश्किल होगा। वह उसको फौरन लिखेगा; मगर जो सत्य वह उससे कह न सकेगा उसके लिए उसकी ओर से क्षमा की प्रार्थना है। क्योंकि सबसे भीषण और महत्वपूर्ण अंश के बारे में सच-सच कहना ही मानों मजबूरन शेष घटनाओं के सत्य को उससे छिपाना था।

उसके खत खत्म करते करते बसन्त की अस्पष्ट धुँधली-सी रात खत्म हो चुकी थी। वह अपने भुइँधरे से निकल आया। बर्फानी तूफानों और पहाड़ी चोटियों के ऊपर सूरज चढ़ आया था। पश्चिम से तोपों की भारी गरज सुनायी पड़ रही थी। उसने अपनी घड़ी देखी। ठीक आठ बजे थे, हाँ ठीक आठ। यह उसी की तोपों की गोलाबारी थी। तोपों का हमला शुरू हो गया था। वही हमला जिसका वक्त कल शाम को उसने आज सवेरे आठ बजे के लिए नियत कर दिया था। जब कि उसे उस वक्त तक यह न मालूम था कि अब उसका संसार में कोई न रहा जिसे वह अपना बेटा कहकर पुकार सके।

पहले ही की तरह तोपों ने ठीक आठ पर गोलाबारी शुरू की—ठीक जैसा कि होना चाहिए था। युद्ध पूर्ववत् चलता रहा।

वेला क्लाज़ू

एक सर्बियन गाथा

गुजलित्सा और तंबूरा† अब काले पहाड़ों में सुन नहीं पड़ते। उनके नौजवान बजाने और गाने वाले या तो धरती के गर्भ में शान्ति के साथ सोये हुए हैं या जंगलों में खामोशी के साथ छिपे हुए हैं। सर्बिया में अब कोई कोलो‡ नहीं नाचता। और जहाँ तक औरतों के करुण गीतों का सम्बन्ध है वे भी गुजलित्सा के साथ नहीं गाये जाते।

सिर्फ बुड्ढा जार्ज कभी कभी अपना पुराना बाजा खूँटी पर से उतार लेता गोकि उसके दो सिरे गायब थे और उसके गहरे पेट में एक छेद था। पुराने गुजलित्सा को ये घाव उस वक्त लगे थे जब इस छोटे से गाँव में लोगों का दिमाग ठीक करने के लिये एक जर्मन दस्ता इसलिये भेजा गया था कि एक स्वस्तिक झंडा उतारकर फाड़ डाला गया था। और फिर मशीनगन की गोलियाँ झोपड़ियों की खिड़कियों को तोड़ती

† बाजों के नाम। ‡ नृत्य-विशेष।

हुई चली थीं। जार्जे के गोली से छिदे बाजे से अब एक भारी-सी आवाज निकलती थी।

सफेद बालों, सफेद दाढ़ी वाला वह बुड्ढा अक्सर कहा करता, 'गुस्से और घृणा से इसकी आवाज भारी हो गयी है। मार्को काल्येविच † के पुराने गानों की तरह यह अब भी प्रतिशोध और हमारे वीरों की जीत का एक गाना गायेगा।'

अब बुड्ढा जार्जे भी धरती के गर्भ में खामोश पड़ा है। लेकिन एक न एक दिन वह गोली से छिदा गुजल्स्सिा उसकी बहादुर मौत का गाना गायेगा।

× × × ×

दादा जार्जे की झोंपड़ी से देखने पर सूरज रुमियानित्सा की नंगी चोटी के ठीक ऊपर दीख पड़ता था जिससे पता चलता था कि सुबह के ग्यारह बजे हैं। सनीचर का दिन था। चौदह साल के मर्को ने नंगी चोटी को निहारा जो कि एक डरावने घूँसे से मिलती जुलती थी, और देखा गिद्धों को पंख फैलाकर हवाई जहाज की तरह हवा में तैरते।

मर्को ने कहा, 'गिद्ध पुकार रहे हैं। दादा, तुमने सुना?'

दादा जार्जे ने झोंपड़ी के सामने वाली छोटी बेंच पर बैठते हुए जवाब दिया, 'काले पहाड़ के गिद्ध अब पुकारते नहीं क्योंकि उनका पेट जरूरत से ज्यादा भरा है और वे फूल गये हैं,' और निहारा रुमियानित्सा को जो अपने चट्टानी घूँसे से डरा रहा था।

'लेकिन दादा, मैं चिड़ियों की पुकार सुन रहा हूँ......।'

बुड्ढे ने कहा, 'तब वह हवा से नहीं आ रही' और अपनी बेंच पर से उठ गया। 'पुकार हमारे लिए है। दादी और भाभी जेर्देका से जल्दी से जल्दी आने को कहो। तुम्हारा भाई मिलोश कब्रगाह पर हमारा इन्तजार कर रहा है।'

मर्को दौड़ता हुआ झोंपड़ी तक गया और फौरन अपनी दादी और

---

† सर्बियन जनता का राष्ट्रीय हीरो।

भाभी को साथ लिये लौटा। जेर्देका अपने दो साल के लड़के का हाथ अपने हाथ में लिये चली आ रही थी।

वे सब झटपट कब्रगाह को चले। वह ज्यादा दूर न थी क्योंकि दादा जार्जे की झोंपड़ी गाँव की आखिरी झोंपड़ी थी। यहाँ से दुब्रित्सा और दूर के अँधेरे जंगलों को सीधे जानेवाली चौड़ी सड़क दीख पड़ती थी जो ठीक रुमियानित्सा के घूँसे के नीचे दाहिने को मुड़ती थी।

कब्रगाह छोटी थी क्योंकि खुद गाँव ही छोटा था लेकिन पिछले महीने बहुतेरे नये सलीबों के लिए जगह निकालने के लिए उसकी एक चहारदीवारी को गिराना पड़ा। दुब्रित्सा की जर्मन कमान ने जब गाँव में लोगों की अक्ल ठीक करने के लिए टुकड़ी उस वक्त भेजी जब कि गाँव में किसी ने स्वस्तिक झंडे को उतारकर फाड़ डाला था, तब कब्रगाह एकाएक पुर उठी थी और नये सलीब तेजी से उगनेवाली एक घास की तरह पुरानी कब्रों के पार खेत में फैल गये थे। और इस तरह गाँव जैसे जैसे छोटा होता गया, कब्रगाह बढ़ती गयी। क्योंकि सिर्फ मर्द और औरतें राइफिल की गोलियों और संगीनों से मारी ही न गयी थीं बहुतेरे मकान जलकर भूमिसात् हो गये थे।

जब दादा जार्जे, दादी, पोता, पतोह, और उसका बच्चा कब्रगाह पहुँचे उस वक्त औरतें हमेशा की तरह, ताजी कब्रों के आसपास पलथी मारकर बैठी हुई थीं और पुराने मर्सिये गा रही थीं। रसोई में व्यस्त होने के बजाय वे कब्रगाह में इसलिए बैठी थीं कि उनके पास पकाने को कुछ न था।

दादा जार्जे आगे आगे कब्रगाह के सबसे पुराने हिस्से की ओर गया जहाँ गहरी कब्रों को एकेशिया की झाड़ियाँ ढके थीं। वहीं से गिद्ध की पुकार आयी थी। एक शाख हटाने पर हरी पत्तियों के बीच से मिलोश का जैतूनी चेहरा और काली आँखें दीख पड़ीं। सबों ने होशियारी से एक बार फिर चारों तरफ निहारा और जल्दी से एकेशिया की झाड़ियों में सरककर छुप गये। वहाँ सब की नजर से बचकर बैठकर बात की जा सकती थी। उनकी क़ज़ा ही है अगर कोई जर्मन

मिलोश को अपने घरवालों से बात करते देख ले !......जो भी हो कब्रों के बीच बैठकर मसिया गाती हुई औरतें उनकी ओर देखती तक न थीं और अगर कुछ देखतीं तो खामोश रहतीं। लोगों के कब्रगाह में आने भर से किसी को शक न हो सकता था क्योंकि गाँव में ऐसा एक भी घराना न था जिसके लोग वहाँ न हों। पर बुड्ढे जार्जे के साथ उसके पोते क्यों थे ? उसका लड़का और पतोहू कहाँ थे ? लड़का क्रागूजेवाट्स में मारा गया था, और उसकी बीवी भी वादी के नजदीक एक गोरिलों की टुकड़ी के साथ लड़ती हुई मारी गयी थी।

अब घर के सभी लोग एकेशिया की झाड़ियों में पलथी मारकर बैठे हुए थे। मर्को पहरा देने के लिए कब्रगाह की चहारदीवारी पर चढ़ गया। औरतें मसिया गाते सुन पड़ती थीं।

'यह लो, मैं तुम्हारे लिए कुछ आटा लाया हूँ,' मिलोश ने कहा और एक छोटा सा बोरा अपनी दादी को दिया। 'रुमियानिस्सा के जंगल में हमारे साथियों ने जर्मनों की एक सामान ले जानेवाली गाड़ी रोक ली थी। वे हमसे छीना हुआ यह आटा स्टेशन ले जा रहे थे। हमने उसमें से थोड़ा सा वापस पा लिया।'

मिलोश चौबीस साल का एक खूबसूरत नौजवान था। वह अब भी एक फटी सर्बियन वर्दी पहने था और उसके सर पर पट्टी बँधी थी क्योंकि उसके माथे पर चोट आ गयी थी। उसने अपने दो साल के बच्चे को घुटनों पर लिया और उन सबका हाल-चाल पूछा, उसने बकरी के बारे में पूछा, जिसे एक गड्ढे में छिपाकर अब तक वे जर्मनों से बचा लाये थे। उसने अपने बारे में उन्हें कुछ भी नहीं बतलाया क्योंकि रिश्तेदारों को भी यह नहीं जानना चाहिए कि सर्बिया के गोरीले कहाँ छिपे और क्या कर रहे हैं।

मिलोश ने अपने बच्चे का सर थपथपाते हुए कहा, 'रुमियानिस्सा के चट्टानों में इतनी ढेर-सी लाल घास उग रही है। मैंने इतनी घास पहले कभी न देखी थी।'

'क्योंकि इतना ज्यादा खून इस साल बहा है' दादी ने कहा और

अपना खूबसूरत सफेद गर्वोन्नत सर हिलाया। उसका चेहरा कठोर था और स्वाभिमान का भाव लिये हुए था। 'हमारे खून ने घास की जड़ों को रँग दिया है।'

दादा जार्ज ने सर हिलाया।

उसने गंभीर चेहरे से कहा, 'लाल घास एक संकेत है। वह उस खून की ओर इशारा करती है जो अभी बहेगा।'

दादी ने कहा, 'सर्बियनों का खून अभी ही इतना बह चुका है कि अब और बाकी नहीं।'

तब मिलोश ने दृढ़ता से कहा, 'तब लाल घास का इशारा सर्बियन खून की तरफ नहीं है, बल्कि जर्मन डाकुओं के खून की तरफ है जो इस साल भी बहेगा।'

उसने मुश्किल से यह कहा ही था कि मर्को चहारदीवारी पर से चिल्लाया :

'देखो! जर्मन मोटरगाड़ियाँ दुबिस्सा से आनेवाली सड़क पर चली जा रही हैं।' मिलोश ने अपने बच्चे को चूमा और उसे अपनी माँ के हाथ में फिर दे दिया। वे सब खड़े हो गये।

उसने कहा, 'गेहूँ को एक सुरक्षित जगह में गाड़ दो। मैं फिर जल्द ही आऊँगा और तुम्हारे लिए और कुछ लाऊँगा।'

जेर्दका ने कहा 'अच्छा हो कि न आओ। बड़ा जोखिम है।'

'अगर मैं तुम्हारे लिए कुछ लाऊँ नहीं तो तुम खाओगी क्या?'

दादा ने कहा, 'हम लोगों के लिए ज्यादा अहमियत यह बात रखती है कि तुम्हारे और तुम्हारे साथियों के लिए जंगल में खाने के लिए काफी हो। जो हो अब हम तो और लड़ नहीं सकते।'

दादी ने गंभीरतापूर्वक कहा, 'हम जानते हैं कि जब प्रतिशोध की घड़ी आयेगी तुम आ जाओगे।

मर्को ने चहारदीवारी पर से आवाज़ दी :

'जल्दी करो मिलोश। जर्मन गाड़ियाँ एकेशिया की झाड़ी तक पहुँच चुकीं। तीन खाली गाड़ियाँ जिनके साथ सिपाही हैं।'

'वे फिर अनाज हथियाने आये हैं', जेदेंका ने आह भरी और अपने बेटे को छाती से चिपका लिया।

मिलोश ने जेदेंका और अपने दादा-दादी को चूमा, चहारदीवारी फाँदा और एक पल में ओझल हो गया।

गाना एकाएक बन्द हो गया। औरतें अपने-अपने घरों की तरफ चलीं क्योंकि वे जर्मन गाड़ियों के आने का मतलब समझती थीं। वे लोगों से उस बचे-खुचे अनाज को लूटने आ रहे थे जो उन्हें एकदम भूखों मरने से बचाये हुए था।

दादा जार्जे भी अपने घराने के साथ घर की ओर धाया। उसके पड़ोसी ने जो कि करीब-करीब उसके इतना ही बुड्ढा था, अभी-अभी अपने बाड़े में एक गड्ढा खना था। उसकी बीबी गाड़ी जानेवाली चीजों को अपने कपड़े में लिये पास खड़ी थी।

उसने पूछा, 'इतना बड़ा गड्ढा क्यों? सिर्फ आधी रोटी और तीन अंडे ही तो हैं?'

पड़ोसी ने वह आधी रोटी और तीन अंडे बिला कुछ कहे लिये और उन्हें गाड़ दिया, फिर उसने उस जगह पर सूखी बालू छितरा दी।

जर्मन फैल गये और एक साथ ही गाँव की तीन कोनों से तलाशी लेना शुरू किया। हर गाड़ी के लिए दो सार्जेण्ट नियुक्त थे। उनकी बड़ी विस्तृत योजना थी। उनकी फेहरिस्तों में था कि कौन से और कितने मकानों की तलाशी लेनी है और उनके मालिकों के नाम—हाँ, तो दुब्रिस्सा का जर्मन जिला कमान गाँव को भली तरह जानता था! तो भी काम धीरे धीरे चल रहा था क्योंकि लूटने के लिए ज्यादा न था। दादा जार्जे के दरवाजे के सामने खड़ी गाड़ी तक एक सिपाही ज्वार के तीन बोरे और चीज का एक टुकड़ा लाया जिसका कुछ हिस्सा खाया हुआ था।

सार्जेण्ट मेजर अपने हाथ की फेहरिस्त को हिलाते हुए चीखा 'बिजली गिरे इस पर! मुझे चालीस मन रसद देनी है!'

उसी वक्त एक दूसरा सिपाही एक चुअने तसले में सात आलू लिये आया।

सार्जेण्ट मेजर गरजा, 'मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहा है, गधा कहीं का! ये सात आलू लेकर मैं क्या करूँगा? ठीक चार बजे जर्मनी के लिए रसद की गाड़ी रवाना हो जायगी।'

एक पिचके गालों वाला सार्जेण्ट बाहर निकला और सार्जेण्ट मेजर से फुसफुसाया, 'जर्मनी में लोगों का भूखों मरना शुरू हो गया है। कल मुझे अपनी बीवी की चिट्ठी मिली।'

'तब इन सर्बियन कुत्तों को पहले मरना होगा।'—सार्जेण्ट मेजर चीखा और उसका फूला हुआ मांसल चेहरा गुस्से से लाल पड़ गया।

सिपाही ने कहा, 'सारे मकान में आलू का और एक छिलका भी नहीं है।'

'लेकिन लोग जी रहे हैं न? वे कुछ खाते तो होंगे ही? बस, उन्होंने जरूर कहीं न कहीं अनाज छिपाया होगा। क्या? वापस जाओ, फिर तलाशी लो।'

पिचके गालों वाले सार्जेण्ट ने सड़क की तरफ देखते हुए कहा, 'यह देखो गाउदी थांक को वे लिये आ रहे हैं। कुछ चीजें ढूँढ़ निकालने में वह हमारी मदद करेगा।'

दो सिपाही एक सर्बियन लड़के को साथ लिये सड़क पर चले आ रहे थे। वह गंदा था और अविश्वसनीय रूप से फटेहाल। वह सर झुकाकर चलता था, उसकी गाउदी निगाहें अस्थिरता के साथ एक ओर से दूसरी ओर दौड़ रही थीं।

इसी बीच बुड्ढे जार्जे की झोंपड़ी में जर्मन सिपाहियों ने सारी चीजें उलट-पुलट कर रख दी थीं। अपनी राइफल के कुन्दों से उन्होंने पुरानी बन्दूक को तोड़ डाला था। दो फूटे घड़ों के पास मेज की दराज फर्श पर पड़ी थी। कपड़े रखने की पुरानी आलमारी तोड़ डाली गयी थी और उसकी निकम्मी चीजें फर्श पर बिखेर दी गयी थीं।

दादा जार्जे और दादी कोने में खड़े थे। गोद में बच्चे को लिये जेर्देका उनके पास थी और चौदह साल का मर्को मेज के पास खड़ा था। इस तरह वे एक कतार में खड़े थे और मलबे को शान्तिपूर्ण निर्निमेष

दृष्टि से देख रहे थे। सिर्फ, उनकी आँखें चमक रही थीं। दादी दादा का हाथ पकड़े थी। बीच-बीच में वह उसे दबाती जिसका मतलब होता: 'शांत रहो और एक लफ्ज भी मत बोलो! अपने को काबू में रखो।'

वह जर्मन सिपाही जो इस सबका कर्त्ता-धर्ता जान पड़ता था दादी तक डग बढ़ाता हुआ गया और चीखा :

'रोटी निकाल लाओ, जो तुमने छिपा रखी है, नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं।'

'हमारे पास अब रोटी नहीं है। हमने सब दे डाला है।'—दादी ने शान्त मर्यादा के साथ सिपाही की आँखों से दृढ़ता के साथ आँखें मिलाते हुए कहा।

'यह झूठ है! तुम लोग रो नहीं रहे हो!'

दादी ने नम्रता से जवाब दिया, 'अब हमारी आँखों में आँसू नहीं है। रोते-रोते हमारी आँखें सूख गयीं।' और गर्व के साथ अपना सिर ऊपर उठाया।

इसी वक्त यांक कमरे में लाया गया। घुसने में वह आगा-पीछा कर रहा था। दरवाजे की ड्योढ़ी से चिपका वह एक जानवर की तरह रिरिया और काँप रहा था। लेकिन उसके पीछे आने वाले सार्जेण्ट ने उसे एक जोर की लात दी और वह भहराता हुआ कमरे में आया और फर्श पर ढेर हो गया।

सार्जेण्ट ने उस गाउदी को हुक्म दिया, 'हमको दिखलाओ, रोटी कहाँ छिपी है? तुम अपनी दादी का मकान अच्छी तरह जानते हो।'

लेकिन यांक रिरियाता हुआ जमीन पर पड़ा था। उसका चेहरा उसके हाथों में धँसा हुआ था, और वह उठता न था। दो सिपाहियों ने जबर्दस्ती उसे पैरों पर खड़ा किया और सार्जेण्ट ने जोर से उसको डाँट बतायी।

'क्या तुमने हमको बाहर नहीं बतलाया था कि इन सबों ने एक बकरी छिपा रखी है?'

सर से पैर तक काँपता हुआ यांक खामोश था। लेकिन वह नौजवान औरत पीली पड़ गयी और मर्को का चेहरा भी जरा काँपा। लेकिन दादी ने गम्भीरता के साथ कहा—'जब सजा देने वाली टुकड़ी ने पिछली बार हमारे खलिहान को आग लगायी थी तभी हमारी बकरी जल गयी थी।'

उसने कसकर दादा का हाथ दबा दिया और वह खामोश रहा लेकिन तरुणी की आँख से एक आँसू गिर पड़ा।

पीला सार्जेण्ट चिल्लाया और उसने दाँत पीसा, 'आहा! मैं देखता हूँ तुम्हारे अब भी कुछ आँसू बाकी हैं। इसका मतलब है तुम्हारे पास बकरी है। अच्छा यांक अब शुरू तो करो पट्ठे। हम तुम्हें सुअर का गोश्त और ब्रांडी देंगे, अगर तुम बकरी पकड़वा दो। सुअर का गोश्त और ब्रांडी, यांक!'

उस गाउदी का कुंद चेहरा एक खीस में फैल गया। फिर वह अपनी गहरी हथेली मुँह तक ले गया और मेमने की तरह मिमियाया।

दादा के हाथ के ऊपर दादी की मुट्ठी और कस गयी। तरुणी ने घबराकर बच्चे को छाती से चिपका लिया। मर्को यकायक चीखने लगा।

'अरे मेरा पैर, मेरा पैर! मेरे पैर में चोट लग गयी।'

सार्जेण्ट उस पर गरजा, 'बन्द करो चीख पुकार।'

एक सिपाही ने कहा, 'उसके पैर को कुछ नहीं हुआ है। वह सिर्फ इसलिए चिल्ला रहा है कि हम बकरी की आवाज न सुन सकें।'

मर्को गला फाड़कर चिल्लाने लगा, 'मेरे पैर में कील भुँक गयी है! ओह, ओह, कितना दर्द कर रहा है!'

उसने अपना दाहिना पैर उठाया जिसमें सचमुच एक लहूलुहान गड्ढा था और मेज की टाँग से निकली हुई कील खून से तर थी।

'उस बदमाश का मुँह बंद करो! और तुम यांक, फिर से माऽऽऽ माऽऽऽ की आवाज दो।' सार्जेण्ट ने हुक्म दिया।

एक सिपाही ने मर्को के मुँह पर अपना हाथ लगा दिया और यांक

को फिर सुअर का मांस और ब्रांडी देने का वादा किया गया। वह गाउदी फिर मेमने की तरह मिमियाया। और अब उस निस्तब्ध वातावरण में इस मिमियाने का जवाब देती हुई बकरी की माँ की आवाज सुन पड़ी। दो सिपाही बाड़े की तरफ दौड़े।

सार्जेण्ट ने कहा—'कम से कम अब हमें बकरी तो मिली। बहुत अच्छा हुआ। अब हमें और कुछ करना चाहिए।' दादी के सामने खड़े होकर उसने पूछा, 'तुम्हारे पास आटा नहीं है तो फिर बच्चे को खिलाती क्या हो?'

दादी ने शान्त मुद्रा से कहा, 'अब तक बच्चे को थोड़ा-सा बकरी का दूध मिल जाता था। अब वह भूखों मरेगा।'

'अच्छा तो फिर हम बच्चे के मुँह की परीक्षा ले सकते हैं कि उसमें खाने के कुछ चिह्न हैं या नहीं? उससे पता चल जायगा कि बच्चा क्या खाता रहा है। इधर लाओ जरा मुझे उसे देखने तो दो!'

एक सिपाही ने माँ के हाथ से बच्चे को छीना और दूसरा माँ को कसकर पकड़े रहा। एक तीसरा सिपाही बुड्ढे, बुढ़िया और मर्को के सामने संगीन लगाकर खड़ा हो गया। दादी जार्जे का हाथ कसकर पकड़े रहीं।

'अपना मुँह खोल।' सार्जेण्ट ने दो साल के बच्चे से कहा। लेकिन बच्चा कसकर अपने ओंठ दबाये रहा। इस पर एक सिपाही ने अपनी चौड़ी हड्डियों वाले हाथ से बच्चे का मुँह जबर्दस्ती खोला और सार्जेंट ने खाने के टुकड़ों की तलाश में उसके मुँह में अपनी तर्जनी घुसेड़ दी। बच्चे ने किचकिचाकर उँगली पर दाँतों को गड़ा दिया।

'उफ' सार्जेण्ट चिल्लाया और जल्दी से अपना हाथ बाहर निकाल लिया। उसकी उँगली खून से तर थी। वह दूसरी उँगली से फिर कोशिश करने जा रहा था, जब कि सड़क पर से अचानक गोलियों की आवाज आयी।

'क्या गड़बड़ है' चिल्लाता हुआ वह घबराया सार्जेण्ट घर से बाहर को दौड़ा और तीनों जर्मन सिपाही भारी कदम रखते हुए उसके

पीछे-पीछे। जब वे गाड़ी के पास पहुँचे तो पता लगा कि जो आवाज उन्होंने सुनी थी वह गोलियों की नहीं मोटर की थी।

'हमें और कुछ नहीं मिला', सार्जेण्ट ने कहा, जो कि यह बतलाने में बड़ी परेशानी महसूस कर रहा था कि क्यों वह और उसके आदमी घर में से इतनी जल्दी-जल्दी दौड़े आये थे।

सार्जेण्ट मेजर ने भला-बुरा कहा। फिर उसने सार्जेण्ट की लहू-लुहान अँगुली देखी।

उसने पूछा 'यह क्या है।'

'दाँत काट लिया।'

'दाँत काट लिया? किसने? कहाँ?'

'यह तो......यह तो......।' सार्जेण्ट ने हकलाते हुए कहा, क्योंकि सच बात मानने में उसे बड़ी शर्म आ रही थी। अन्ततः उसने कहा, 'एक सर्ब था।'

'क्या?' सार्जेण्ट मेजर चिल्लाया और उसका फूला हुआ चेहरा लाल पड़ गया। 'एक जर्मन सार्जेण्ट को एक सर्ब ने घायल कर दिया? फौरन जिला कमान को रिपोर्ट करो।'

इस हुक्म को उधर से गुजरती हुई दो औरतों ने सुन लिया। उन्होंने दूसरों से बतलाया, क्योंकि वे जानती थीं कि इसका मतलब होगा एक दूसरी सजा देनेवाली चढ़ाई।

जर्मन गाड़ी के जाने के साथ झोंपड़ी में अँगीठी के पीछे कोई चीज हिली। और तभी पता चला कि घर के बाहर भागते समय सिपाही यांक को बिल्कुल भूल गये थे, जो गोलियों से भयभीत होकर सरककर अँगीठी के पीछे चला गया था। अब वह भाग जाना चाहता था। लेकिन दादी ने उसका रास्ता रोक लिया।

'ठहरो यांक!' उसने कठोरता से कहा। लेकिन उसकी आवाज में सिर्फ उदासी और रहम था, नफरत नहीं।

यांक एक कोने में काँपता खड़ा था।

दादा जार्ज और मर्को ने अँगीठी की दीवाल में से कुछ ईंटें हटायीं

और सूराख में से एक बन्दूक और चार कारतूस निकाले। यह एक पुराने ढंग की बन्दूक थी।

जेर्देका ने गिड़गिड़ाकर कहा, 'यांक का दोष नहीं है। उसका दिमाग ठीक नहीं है।'

दादी ने जवाब दिया, 'यांक दोषी नहीं है, अभागा है! इसीलिए अजनबी का हाथ उस पर न पड़ना चाहिए। उसके अपने लोगों को यह करना होगा।'

दादा जार्जे ने बन्दूक भरते हुए कहा, 'वह दोषी नहीं है लेकिन अपने लोगों के लिए खतरनाक है। इसीलिए उसे मारना होगा।'

उसका हाथ पकड़कर ले जाते हुए दादी ने कहा, 'यांक, आओ।'

उसने एक बच्चे की तरह अपने को छोड़ दिया और दीवाल से पीठ सटाकर फरमाबदारी के साथ जहाँ दादी ने उसे खड़ा कर दिया वहाँ खड़ा हो गया।

'यांक, झुको। अपनी आँखें बन्दकर लो।' उसने कहा। उसकी आवाज में गहरी उदासी और रहम था।

यांक चेहरे को हाथों में छिपाकर घुटनों के बल बैठ गया।

दादी ने पूछा, 'दादा, तुम्हारे हाथ काँपेंगे तो नहीं?'

'नहीं, वे न काँपेंगे।'

और वे नहीं काँपे।

× × ×

तुबित्सा के फौजी हेडक्वार्टर का टेलीफोन आपरेटर बहुत घबराया हुआ था।

'मैं समझ गया।' वह चीखा, यद्यपि वह साफ सुन नहीं सका था। 'कई जर्मन सिपाहियों पर सर्बों ने हमला किया है और घायल किया है...।'

इसकी रिपोर्ट मिलने पर कप्तान ने तैश में कहा, 'नामुमकिन! अगर हम बेरहमी से पेश नहीं आते तो मुमकिन है हमें बग़ावत का सामना करना पड़े। फौजी गाड़ियाँ बाहर निकाल दो।'

× × ×

इस बीच मिलोश और उसकी गेरीला टुकड़ी उस जगह पर छिपी हुई थी जहाँ रुमियानित्सा के चट्टानी घूँसे के ठीक नीचे सड़क दुबित्सा को मुड़ती है।

'गाँव का चुराया हुआ अनाज ले जानेवाली गाड़ियों को इधर से गुजरना ही होगा। यहीं हम उन पर हमला कर सकते हैं।'

अब सचमुच गाड़ियाँ दीख पड़ रही थीं और करीब आती जा रही थीं। उनमें से एक पर बुड्ढे जार्जे की बकरी बड़े दर्दनाक तरीके से मिमिया रही थी। छापेमार हमले के लिए तैयार हो गये। लेकिन इसी वक्त उनके खबर देनेवाले दौड़ते आये।

'ठहरो! जर्मन फौजी गाड़ियाँ दूसरी तरफ से आ रही हैं!'

मिलोश ने हुक्म दिया, 'मुड़ो! हमें फिर अच्छा मौका मिलेगा।'

छापेमार जंगल में वापस चले गये लेकिन मिलोश सड़क के किनारे झाड़ियों में छिपा ठहरा रहा। और ठीक उसी जगह गाँव से आनेवाली गाड़ियों और दूसरी तरफ से आनेवाली फौजी गाड़ियों का मेल होता था।

पीले सार्जेण्ट ने पहली फौजी गाड़ी के ड्राइवर से पूछा, 'तुम कहाँ जा रहे हो?'

जवाब मिला, 'अगले गाँव को, एक सजा देने की चढ़ाई पर।'

'किस लिए?' सार्जेण्ट ने अचकचाकर पूछा। अपनी उँगली के उस जरा से घाव को वह कब का भूल चुका था।

'जर्मन सिपाहियों की एक टुकड़ी पर हथियारों से लैस सर्बों ने हमला कर दिया है। बहुत से मारे गये हैं।' ड्राइवर ने मुड़कर जवाब दिया और धड़धड़ करता अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया।

लेकिन मिलोश ने सब कुछ सुन लिया था और अपने साथियों को इसकी खबर देने के लिए जल्दी-जल्दी चला।

रुमियानित्सा पहाड़ की तलहटी के उस छोटे से गाँव में एक बार फिर गड़बड़ी फैल गयी। 'जर्मन हथियारबंद गाड़ियाँ आ रही हैं।' और बुड्ढे, औरतें और बच्चे, जो भी भाग सकते थे सब जंगल की ओर भागे।

सिवाय गाँव के किनारेवाली आखिरी झोपड़ी के जहाँ से दुबित्सा जानेवाली सड़क दीखती थी, सब कुछ शान्त था। दादा जार्जे एक साफ कमीज और अपने बेहतरीन कपड़े पहने हुए था। अब वह अपनी पुरानी बन्दूक लिये झोपड़ी से बाहर निकला। वह दुबित्सा सड़क के बीच में अपनी बाकी तीन कारतूसों को अपने बगल में जमीन पर रखकर उकड़ूँ बैठ गया। यह उसने धीरे-धीरे शान्ति के साथ और धीर मन से किया। क्योंकि अब भी उसके पास बहुत वक्त था।

दादी ड्योढ़ी में खड़ी अपनी पतोहू से बिदा ले रही थी।

बच्चे को गोद में लिये जेर्देका ने मिन्नत की, 'आओ हमारे साथ जंगल को भाग चलो।'

'हम बुड्ढों के लिए खाना काफी नहीं है।' दादी ने शान्तिपूर्वक कहा और तरुणी के बालों को हलके हाथों से थपथपाया। 'जो कुछ बाकी है उन लोगों के लिए बचाना चाहिए जो कि अब भी लड़ सकते हैं' और कठोरता के साथ उसने फिर कहा 'जाओ और रोओ मत। भूख की बनिस्बत जर्मन गोलियों से हमारा यहाँ पर मरना ज्यादा शान की बात है।'

जेर्देका रोयी नहीं बल्कि अपने बच्चे को गोद में लिये हुए औरों के पीछे-पीछे जंगल में चली गयी।

मर्को ने प्रार्थना की, 'मुझे दादा के साथ रहने दो।'

दादी ने जवाब दिया, 'नहीं, तुम्हें एक जरूरी काम करना है। भागते हुए अपने भाई के पास जाओ और छापेमारों को बतलाओ कि यहाँ पर क्या हुआ है। वे हमारा बदला लेंगे। जल्दी करो मर्को।' उसने कठोरता के साथ अपनी बात खत्म की।

मर्को अपने भाई मिलोश और दूसरे छापेमारों की खोज में जंगल की ओर भागा।

एकेशिया की झाड़ी के उस पार गर्द का एक बादल उठ रहा था।

'*जर्मन हथियारबन्द गाड़ियाँ आ रही हैं। हम जल्दी ही उन्हें देखेंगे*', बुड्ढे जार्जे ने अपनी बुढ़िया बीबी से कहा जो उसके बगल में दुबित्सा सड़क के बीचो-बीच बैठी हुई थी।

उसकी बीबी ने जवाब दिया, 'जार्जे, हम लोग चालीस बरस साथ रहे हैं।'

जार्जे ने कहा 'वे बहुत भले चालीस साल थे।'

'ये लो, जर्मन हथियारबन्द गाड़ियाँ आ पहुँची।' बुढ़िया ने कहा और जॉर्जे को पहली कारतूस थमायी।

जार्जे ने कारतूस बंदूक के अन्दर डाली और अपनी लंबी सफेद दाढ़ी को हाथ से हटाया जिसमें वह उसका निशाना न खराब कर सके......।

जर्मन हथियारबंद गाड़ियाँ तीर की तरह सीधी सड़क पर तेजी के साथ चली आ रही थीं। वे तीन थीं, तोपों और मशीनगनों से लैस।

उनके सामने सड़क पर शान्ति से बातचीत करते हुए, एक पुरानी बन्दूक और तीन कारतूस लिये हुए दो सफेद बालोंवाले बुड्ढे बैठे हुए थे।

वे हथियारबन्द गाड़ियाँ किलों की तरह उठती थीं। उनके लोहे की आवाज सुन पड़ती थी और आग से उठते धुएँ की तरह धूल उड़ रही थी।

सड़क के बीचो-बीच वह छोटा-सा बूढ़ा घुटनों के बल बैठा हुआ था; उसने बन्दूक कंधे से लगायी और निशाना लिया। बुढ़िया ने मृत लोगों के लिए गाया जाने वाला मर्सिया शुरू कर दिया।

बुड्ढे ने बन्दूक दागी। बुढ़िया ने बिना गाना बन्द किये उसे एक दूसरी कारतूस दी। हथियारबन्द गाड़ियाँ एक लोहे के गरजते हुए पहाड़ की तरह तेज रफ्तार से पास आ रही थीं।

सड़क के बीचोबीच एक पुरानी बन्दूक से गोली चलाता हुआ बूढ़ा घुटनों के बल बैठा था। गाते गाते बुढ़िया ने उसे आखिरी कारतूस थमायी।

हथियारबन्द गाड़ियाँ तेज रफ्तार से पास आती जा रही थीं। पहली का तो खुफिया छेद भी अब दीख पड़ने लगा। ड्राइवर ने सड़क के बीचोबीच घुटनों के बल बैठी हुई इन दो हास्यास्पद आकृतियों को देखा। उसने गैस की कुंजी को पैर से दाबा और हँसा।

उसी पल उसकी आँखों के बीच पुरानी शीशे की गोली लगी और वह बेजान होकर ढेर हो गया। हथियारबन्द गाड़ी घूमकर खाईं में जा गिरी। दूसरी गाड़ी आगे बढ़ती ही गयी। बगैर इस बात को जाने कि उसने दो बूढ़े व्यक्तियों को जो चालीस साल संग संग रहे थे कुचल दिया था।

× × × ×

मर्को अपनी सारी ताकत लगाकर तेजी से रुमियानित्सा की ऊँची चढ़ाई पार कर रहा था। अचानक एक हथियार से लैस छापेमार एक दरख्त की खोखली जड़ में से निकला और उसने पूछा, 'तुम कहाँ जा रहे हो ?'

'मुझे अपने भाई मिलोश को ढूँढ़ना है। एक बहुत जरूरी बात उसे बतलानी है।' मर्को छापेमारों के खेमे में ले जाया गया। वह पहाड़ के चट्टानी घूँसे के नीचे ऊँचाई पर बसा था। छापेमारों ने लड़के को घेर लिया और आतंकित करने वाली शान्ति के साथ उसकी कहानी सुनी।

'प्रतिशोध !' सबने एक साथ लेकिन मुलायमियत से कहा, 'प्रतिशोध।'

मिलोश ने कहा 'दुबित्सा को लौटती हुई हथियारबन्द गाड़ियों को हम नष्ट कर देंगे। हमारी अपनी धरती हमारी साथी होगी; रुमियानित्सा का चट्टानी घूँसा उन्हें चूर-चूर कर देगा !'

रुमियानित्सा की सबसे ऊँची चोटी पर वह बड़ी, सूनी चट्टान जो एक डराते हुए घूँसे की तरह मालूम होती थी उस गहरी खाईं को छाये हुए थी जो सड़क की मोड़ पर खत्म होती थी—चट्टान पर डाइनामाइट की सुरंगें बिछी हुई थीं।

मिलोश ने अपने आदमियों के बड़े हिस्से को पेड़ के तनों से रास्ता रोकने के लिए भेज दिया था। हथियारबन्द गाड़ियों को उस जगह पर कुछ देर के लिए रोकना जरूरी होगा।

उसने पूछा 'पलीते में आग कौन लगायेगा ?' क्योंकि उनके पास

सिर्फ एक छोटा-सा फ्यूज़ था और इससे भी बड़ी बात यह कि चिनगारी को धीरे-धीरे बढ़ने देने के लिए उनके पास वक्त न था। नीचे से इशारा पाने पर एक जलती हुई मशाल सीधे बारूद की ढेर में फेंकनी होगी। जो ऐसा करेगा उसके बच निकलने की कोई आशा नहीं।

फिर भी हर आदमी ने अपनी स्वीकृति दी।

लेकिन इसी वक्त मर्को सामने आया और बोला :

'फासिस्ट डाकुओं के खिलाफ हथियार उठाने के लिए अभी मैं बहुत छोटा हूँ। लेकिन मैं एक सर्ब की तरह मरना जानता हूँ। उस तरह मेरा भी कुछ उपयोग हो सकता है। मुझे मशाल फेंकने दो।'

छापेमारों ने कहा, 'तुम्हारा भाई मिलोश इसे ले करेगा।'

मिलोश ने अपने भाई को चूमा और बिना एक शब्द कहे मशाल उसे थमा दी।

× × × ×

पहाड़ी पर चट्टानी घूँसे के नीचे, जलती मशाल लिये मर्को अकेला खड़ा था। नीचे छापेमार सड़क के किनारे एक गड्ढे में छिपे थे जहाँ टूटकर गिरनेवाली चट्टान उनपर न आ सकती थी।

मर्को ने पास आती हुई हथियारबन्द गाड़ियों को काफी दूर ही से देख लिया। लेकिन उसे अपने अधैर्य पर काबू पाकर इशारे का इन्तजार करना था। अब हथियारबन्द गाड़ियाँ पेड़ों के पीछे आँख से ओझल हो गयी थीं और अभी ही उसे लगने लग गया था कि सारी योजना बेकार गयी। लेकिन अचानक उसने एक के बाद एक जल्दी जल्दी छोड़ी गयी दो गोलियों की आवाज सुनी और मशाल को बारूद की ढेर में फेंक दिया।

एक जबर्दस्त गरज ने हवा को हिला दिया। और जब धुएँ के घने बादलों ने उठकर रुमियानित्सा को छा लिया उस वक्त चट्टानी घूँसा बड़े डरावने ढंग से हिलता दीख पड़ता था। हाँ वह हिलता और डराता रहा और आखिरकार एक भयानक गरज के साथ वह उस गहरी खाई में गिर पड़ा।

मर्को के टुकड़े तक का पता न था। बिला अपना कोई चिह्न छोड़े वह गायब हो गया था। लेकिन जर्मन हथियारबन्द गाड़ियाँ भी चकनाचूर होकर ऐसे छोटे-छोटे अणुओं में बिखर गयीं थीं कि जिले की फौजी कमान ने उनके टुकड़े बीनना फिजूल समझा।

यह सन् '४१ में काले पहाड़ों में हुआ।

गुजलित्सा और तम्बूरा अब उन काले पहाड़ों में सुन नहीं पड़ते। उनके नौजवान बजाने और गानेवाले या तो धरती के गर्भ में शान्ति के साथ सोये हुए हैं या जंगलों में खामोशी के साथ छिपे हुए हैं। सर्बिया में अब कोई कोलो नहीं नाचता। और जहाँ तक औरतों के करुण गीतों का सम्बन्ध है वे भी गुजलित्सा में नहीं गाये जाते।

बूढ़े जार्जे का बूढ़ा बाजा भी गोलियों से छिदा हुआ है। वह अक्सर कहा करता, गुस्से और घृणा से इसकी आवाज भारी हो गयी है। यह गुजलित्सा मार्को क्रालयेविच के पुराने गानों की तरह एक दिन फिर प्रतिशोध और हमारे वीरों की जीत का एक गाना गायेगा।

अब बूढ़ा जार्जे और उसकी बीवी और उसका पोता मर्को खामोश हैं। लेकिन किसी दिन गोलियों से छिदा हुआ वह गुजलित्सा सर्बिया की आजाद जमीन पर उनकी शोहरत का गीत गायेगा।

फ्रीड्रिक वुल्फ़

किकी
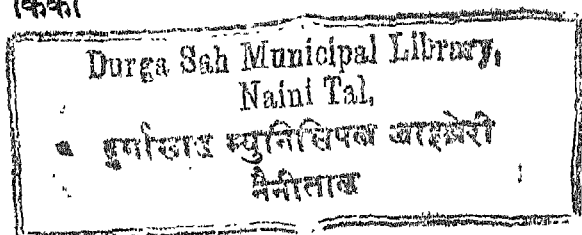
किकी काले बालों का अंग्रेज़ी कुत्ता था। उसकी हल्की भूरी-भूरी आँखें बड़ी खूबसूरत थीं। जरा हरकत होती तो उसके लंबे-लंबे मुलायम कान पत्तों की तरह डोलने लगते। मगर किकी का सबसे बड़ा गुण यह था कि उसे हँसना आता था। जब कोई उसे थपथपाता या पुचकारता तो वह अपने ऊपर के होंठ उठाकर अपने सफेद दांतों की झलक दिखलाते हुए हँसता और उसके थूथन की खाल बड़े दोस्ताना ढंग से सिमट आती। किकी हँसता तो अन्धा भी बता सकता था कि किकी हँस रहा है।

पिरेनीज़ की सरहद पर हमारे उस जहन्नुमी जेलखाने में किकी कैसे आ गया, यह कोई नहीं जानता। एक दिन जब हम लोग अपनी सजा की मशक्कत कर रहे थे, वह अचानक बरामद हो गया और हममें आ मिला। सुबह के वक्त जब हमारी बारक को बाहर मैदान में काम पर ले जाने के लिए गुहार लगायी जा रही थी, किकी भी एक

सेक्शन नायक के पास, जो कि हमारी ही तरह एक कैदी था, खड़ा हुआ था। जब हम तीन-तीन की कतार में मार्च करने लगे तो वह भी खुशी के मारे भूँकता हुआ पहले जत्थे के आगे-आगे दौड़ने लगा। सड़क बनाने के काम पर, खेत के काम पर, कब्रिस्तान बनाने के काम पर, सब जगह वह हमारे साथ जाता और शाम को हमारे साथ वापस आता। हम लोगों ने उसे स्पेन के इण्टरनैशनल ब्रिगेडवालों † की बारक में रख दिया। उन दो सौ तंदुरुस्त लहीम शहीम आदमियों को एक किसी पात्र की जरूरत थी, जिस पर वे अपना प्यार उँड़ेल सकते। औरतें वहाँ थीं नहीं, किकी हमारा लाड़ला था। हमें जो थोड़ा-सा गोश्त मिलता, उसमें हम उसका हिस्सा लगाते और उसके लंबे मुलायम बालों में ब्रुश करते। बारक के हर ग्रूप ने अपने यहाँ किकी की जगह अलग कर दी थी; क्योंकि किकी को एक ही जगह पड़े रहना नागवार था, वह हमेशा अपनी जगह बदलते रहना चाहता। वियना के इक्कीसवर्षीय मजदूर बर्तेल के साथ बैठना उसे सबसे ज्यादा पसंद था। बर्तेल कॉर्डोवा के मोर्चे पर, चपायेफ बटालियन में और मैड्रिड के पास लड़ चुका था। शाम के वक्त बर्तेल उससे घंटों अपनी वियना की बोली में बातें करता रहता; किकी अपनी समझदार आँखों से उसे निहारता रहता और अपने दिल की खुशी प्रकट करने के लिए भूँकता। किकी में यह भी एक खास बात थी कि वह सिवाय हमारे बारक के लोगों के और किसी के हाथ से खाना न लेता। वह बारक के हर आदमी को जानता था। हमारे संतरियों और वार्डरों से वह हर मुमकिन तरीके से बचने की कोशिश करता। किकी में चरित्र की कमी नहीं थी। उसके स्वभाव में दृढ़ता थी।

एक रोज तीसरे पहर जब बर्तेल अपने जत्थे के साथ बारक लौटा

---

† स्पेनी, जर्मन और इतालवी फाशिस्तों से स्पेन प्रजातंत्र की रक्षा के निमित्त लड़ने के लिए विश्व के बड़े-बड़े बुद्धिजीवियों आदि की टुकड़ी बनी थी, जिसका नाम इंटरनैशनल ब्रिगेड था।

तो बड़ा दुखी और परीशान था। बाहर संतरियों ने उसके साथ फुटबाल खेलने की कोशिश की थी; क्योंकि वह सड़क पर पत्थर बिछाते समय, काफी तेजी से काम नहीं कर रहा था। 'फुटबाल खेलने' का मतलब था एक जगह से दूसरी जगह तक तीस-तीस या पचास-पचास मर्तबा एक भारी-सा पत्थर ले जाना और फिर तेज से तेज चाल से भागते हुए आना। एक संतरी के 'गोल' चिल्लाते ही कैदी को पत्थर वहीं रख देना होता और दूसरे के 'गेट' कहते ही उसे पत्थर उठाकर पहले सन्तरी के पास भागते हुए जाना होता। यह खेल तब तक चलता रहता, जब तक कि कैदी थकान से चूर होकर वहीं ढेर न हो जाता। बर्तेल ने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया; क्योंकि उसे यह बर्दाश्त नहीं था कि सब उसे अपने इस गंदे खिलवाड़ की चीज बनावें। एक बदमाश सन्तरी ने अपने रबड़ के मूँठेवाले सोंटे से उसके सिर पर चोट की और वह गिर पड़ा। किकी आवेश में चीखता हुआ आक्रमणकारी पर कूद पड़ा और उसके पतलून का एक टुकड़ा मुँह से नोचकर गायब हो गया।

तभी से किकी संतरियों से नफरत करने लगा। उनसे बचने ही के लिए वह लम्बा चक्कर काटकर जाता। वे उसे पत्थरों से मारते और उसे बारक में न आने देते।

× × ×

गश्ती गारद के, अच्छी तरह से हथियारों से लैस, चार सौ संतरियों के अलावा एक पैदल बटालियन के दो डिवीजन भी बाहर ही बाहर हमारे ऊपर पहरेदारी करते हैं। ये पैदल सिपाही सन्तरियों की तरह उपनिवेशों के नहीं हैं। ये हाल ही के भरती किये हुए, दक्षिणी फ्रांस के किसान और मजदूर हैं—अच्छे, दिल के साफ। उनके पास जाकर किकी ने ठीक ही किया।

एक रोज ६ बजे सुबह हमारी परेड थी। जेल के दरवाजे पर तिरंगा झंडा फहराने के वक्त जो परेड होने वाली थी, उसमें पैदल बटालियन के साथ हमें शामिल होने का हुक्म दिया गया। अपने

सेक्शन के नायक के साथ हम जेल के फाटक तक गये और परेड के लिए कतार बाँध कर खड़े हो गये। थोड़ी ही देर बाद पैदल दस्ता आया, जिसके आगे-आगे कमांडर और बिगुल बजाने वाला चल रहा था। पैदल सिपाहियों की कतारें हमारे ठीक सामने थीं। कॉरपोरल जेल के संतरी के पास गया। संतरी ने झंडे को ऐसा कर दिया कि नीचे से डोरी खींचते ही झंडा खुलकर फहराने लगे। सामने के सिपाहियों ने अपने अफसर के मुड़ते ही हमें आँख मारी; एक तगड़ा, लाल-लाल सिरवाला आदमी अजब-अजब तरह से मुँह बनाता है, दूसरा अपनी टाँगों को जरा फैला देता है, और किकी सिपाही के फैले हुए पैर को डाँक-डाँककर अपनी सुबह की जिमनास्टिक करना शुरू कर देता है। हमसे हँसी रोके नहीं रुकती। उसी वक्त कमांडर हुक्म देता है: अटें—शन! फाम—फो। बिगुल बजने लगता है, पैदल सिपाही अपनी बन्दूकें सँभाल लेते हैं, हमारे सेक्शन के कैदी दाहिनी ओर को गर्दन घुमाते हैं, जहाँ तिरंगा झंडा धीरे धीरे खंभे पर चढ़ रहा है। बिगुल फिर बजने लगता है। और उसी वक्त किकी ने, जो बिगुल बजानेवाले के ठीक पास दाहिनी ओर खड़ा हुआ था, 'गाना' शुरू किया। एक पहुँचे हुए गवैये की तरह वह गला फाड़-फाड़कर पूरी आवाज के साथ गा रहा था। उसकी चीख से सुननेवालों का कलेजा मुँह को आ रहा था। उस अवसर का तमाम गांभीर्य, उसकी तमाम शान-शौकत हवा हो गयी। झगड़ा उठ रहा था। और अफसर अपने हेलमेट पर हाथ रखे खूँखार निगाहों से गाते हुए किकी को एकटक देख रहा था। 'डिस मिस' के बाद उसने हुक्म दिया कि कुत्ता फिर अगर जेल के अन्दर दिखायी पड़े तो उसे फौरन गोली मार दी जाय। संतरियों ने किकी का पीछा किया और उसे जेल से बाहर खदेड़ आये।

मगर दिन और थोड़ा चढ़ने पर किकी फिर कैद के अन्दर आ गया। अपनी ज़ातिगत ज्ञानेन्द्रियों से उसने इस बात को ताड़ लिया कि उसके लिए सबसे बड़ा खतरा फौजी बारक में है, इसी लिए वह कँटीले तारों में से निकल कर हमारी बारक में आ गया। हमने यथोचित

सम्मानपूर्वक उसका स्वागत किया। हर आदमी ने उसे गोश्त के एक-एक टुकड़े और पनीर के साथ रोटी का एक-एक टुकड़ा लाकर दिया।

बर्तेल बहुत सुखी है। वह उसे ऊपर अपने सोने के तख्ते पर ले जाता है और बड़ी देर तक उससे बातें करता है जिसमें किकी की प्रशंसा और प्रताड़ना का अनुपात बिलकुल बराबर है। उसके अलावा एक बूढ़ा नाविक अमेरिकन भी है जो यह डींग मारता है कि उसने लॉस एंजेलेस में एक हफ्ते में एक हजार डालर कमाये। यह अमेरिकन किकी को डाँटता है : 'अरे पागल, तू कँटीले तारों में से निकल जाता है तब भी हम लोगों के साथ पड़ा हुआ है, गधे।' मगर बर्तेल किकी की वकालत करता है : 'यह हमारा है ; यह वालंटियर है, जिस तरह हम लोग स्पेन में थे।' बचाव के खयाल से किकी को ऊपर बर्तेल के पास बाँध दिया जाता है। हर बार संतरी की सीटी या बिगुल बजने पर, हर फौजी हुक्म पर किकी दबी आवाज में भूँकता है। उसे कितनी खुशी होती, अगर वह उस वक्त मौजूद रह सकता जब बारक के साथी सुबह के वक्त पाँत बाँधकर खड़े होते हैं या मार्च करने लगते हैं।

एक रोज तीसरे पहर वह सचमुच आ गया। हमारे सेक्शनों को काम पर जाने के लिए अभी निकाला ही गया था कि—हमें अपनी आँखों पर यकीन नहीं आता—किकी पहले की तरह, सेक्शन के दायें बाजू खड़ा था और रस्सी का टुकड़ा उसके गले में लटक रहा था। हममें से एक ने फौरन उसे गोद में ले लिया और पिछली पाँतों के बीच में हो गया। बदकिस्मती से, वही अफसर जो झण्डा फहराने के वक्त मौजूद था, जब किकी ने गाना गाया था, दरवाजे पर खड़ा था। उसने हुक्म दिया कि किकी को ले जाकर गोली मार दी जाय। पर हमने किकी को इस तरह जमीन पर रखा कि वह भाग निकला। संतरियों ने दिलोजान से, पागलों की तरह, कुत्ते का पीछा किया। कँटीले तारों के आस-पास किकी का पीछा इसी तरह से किया जा रहा था, मानों वह कोई बड़ा राजनैतिक अपराधी हो ; उसे पत्थरों से मारा गया, मगर कैंटीन के पास तारों

के आठ घेरेवाले जाल में आ जाने से उसे रुकने पर मजबूर होना पड़ा। लेकिन तब भी वे उसे पकड़ नहीं पाये। पूरी बारक—लगभग पन्द्रह सौ आदमी—तारों के आसपास खड़े हो गये। संतरियों को गालियाँ दी जाने लगीं। क्योंकि किकी हमीं में से एक है। मुमकिन है एक दिन हम भी अपने को किकी ही की तरह कँटीले तारों के बीच फँसा हुआ पायें।

अब जेलर साहब की सवारी आयी। उन्होंने अपने सिपाहियों को संगीन लगाने के लिए कहा मानो वे दुश्मन की चौकी पर कब्जा करने जा रहे हों। किकी खामोशी के साथ वहीं कँटीले तारों से घिरी जमीन पर बैठ जाता है और अपनी समझदार आँखों से हमें यों ताकने लग जाता है, जैसे कुछ पूछ रहा हो। हम जेलर साहब की ओर मुड़े : जेलर साहब, हमें मौका दीजिए, हम उसे सड़क पर ले आयेंगे! उपनिवेश से आये हुए उस सार्जेण्ट ने हमें गुस्से के साथ आँख तरेरी, मानों कह रहा हो : तुममें और उस कुत्ते में कोई फर्क नहीं है। अपनी संगीन से उसने किको को कोंचना शुरू किया। किकी कूदकर दूसरी ओर चला जाता है। लेकिन वहाँ पर भी संतरी अपनी संगीनों से उस पर हमला करते हैं। किकी चिल्लाता है। हम भी चिल्लाते हैं और चीखों तथा हजारों तरह की डरावनी आवाजों से हू हू हू हू करने लगते हैं। बला का शोर मच जाता है। संतरी अपनी बंदूकों के कुन्दों और संगीनों का रुख हमारी तरफ करते हैं। जेलर साहब खतरे की सूचना देनेवाली सीटी बाहर निकाल लेते हैं। कैंटीन की मालकिन 'सूदखोर चाची' और उनकी दोनों लड़कियाँ, स्वस्थ, रँगीली बीसवर्षीया मिमी और पंद्रहवर्षीया पेपा, कँटीले तार के सामने होनेवाले इस रोमांचकारी तमाशे को देखने निकल आयी थीं। संगीनों का रुख हमारी तरफ देख-कर, 'सूदखोर चाची' वापस कैंटीन की तरफ भागीं, मिमी भी यह सोचकर चीखती हुई भागी कि चलो अन्दर ही से देखेंगे। मगर नादान पेपा ने दौड़कर साहब के मुँह से सीटी छीन ली। यह समूची घटना बिजली की-सी तेजी से हो गयी। संतरी संगीनें लगाये हुए हमको बारक तक खदेड़ लाये।

मगर किकी कहाँ है? इस तमाम गड़बड़ी में वह भाग गया है। गुस्से से पागल जेलर साहब हमारे बारक में आये और उन्होंने हमें बाहर आने का हुक्म दिया। संतरियों ने हमारे दीवार से लगे हुए सोने के तख्तों को अच्छी तरह ढूँढ़ा, मगर किकी का पता न चला।

हमारे बारक में एक खुफिया का आदमी है, 'चूहा मैक्स'—हमने उसकी गंदी हरकतों के 'इनाम' के तौर पर एक मर्तबा उसके कोट की आस्तीन में एक मरा चूहा टाँक दिया था। उसी ने बर्तेल का नाम बता दिया होगा। जेलर साहब ने बर्तेल को गिरफ्तार करने का हुक्म दिया।

आधी रात को हमारा एक रसोइयाँ बर्तेल से मिलने आता है। यह जानकर कि बर्तेल पकड़ गया है, उसने बर्तेल के साथी, डाक्टर से मिलना चाहा। वह मुझे रसोई के पिछवाड़ेवाले सायबान में ले गया। वहाँ कोयले के ढेर के नीचे दो बोरों पर किकी लेटा हुआ था। उसके पीछे के दाहिने पैर और पसलियों पर कई रूमालों को एक साथ जोड़कर तैयार की गयी पट्टी बँधी हुई थी। उसकी साँस मुश्किल से चल रही है। गड़बड़ी के वक्त वह कँटीले तारों में से सरककर निकल गया था। तब कुछ साथियों ने उसे उठा लिया था और रसोई के पिछवाड़े ले गये थे। किकी ने मुझे पहचान कर दुम हिलायी—मैं उसके बारक का आदमी था। उसने अपने होठों को सिकोड़ा और हँसने की कोशिश की। लेकिन हँस न सका। घाव बहुत संगीन है, पिछले पैर वाला नहीं, पसलियों वाला। संगीन उसके फेफड़ों को छेद गयी है। पाँचवीं और छठी पसली के बीच बहुत-सा खून जमा हुआ है। वह धीरे-धीरे साँस लेता है। मैं उसके लिए तीन हिदायतें करता हूँ, आराम, खाने के लिए जमाया हुआ दूध पानी में घोलकर और एकदम खामोशी।

उसी रात और भी कुछ हुआ। 'चूहे मैक्स' का दीवार से लगा हुआ सोने का तख्ता बड़े शोर के साथ अँधेरे में अचानक गिर पड़ा, जिससे कुछ साथियों को चोट लग गयी और वे 'चूहे मैक्स' की मरम्मत करने लगे। मैक्स चीखता है, सब मेरी हत्या करना चाहते हैं। सुबह

वह अपनी टूटी टाँग सहित अस्पताल पहुँचाया गया। उसने कसम खायी कि उसे नंगे पैर नरक का चक्कर काट आना मंजूर मगर फिर हमारी बारक में आना मंजूर नहीं। हमने इस खुफिया के आदमी से नजात पायी मगर किस कीमत पर ?

जैसा स्वाभाविक ही था, दूसरे रोज सबेरे तक हम सब जान गये कि किकी कहाँ पर है। मगर हमारे सिवा और कोई इसकी हवा तक न पा सका। किकी की हालत तेजी से बदलने लग जाती है। वह सिर्फ दूध का शोरबा पीता है। बर्तेल पाँच दिन बाद काल-कोठरी से लौटा। उसके सिर पर पट्टी बँधी थी, उसकी दाईं आँख पर काले-नीले दाग थे, और उसके आगे के दो दाँत गिर गये थे। हमने बहुत शानदार तरीके से उसका स्वागत किया। हमारे रसोइयों ने इस मौके के लिए छुपे-छुपे केक और पुडिङ्ग तैयार किया था।

साँझ गहरी होने पर हमने उसको किकी के रहने की जगह बतलायी।

किकी कूदता है और खुशी के मारे चिल्लाता है। वह बर्तेल का हाथ और मुँह चाटता है और अपने होठों को ऊपर उठाकर और दाँत दिखाकर वही अपनी पुरानी हँसी हँसता है। मगर हमें किकी के इस बार इस खुशी के मारे उछलने की मँहगी कीमत चुकानी पड़ती है। किकी के मुँह से खून आने लगता है।

दूसरे रोज जब बर्तेल जमा हुआ दूध लेने के लिए कैंटीन में गया तो उसने पेपा को अपनी बड़ी बहिन मिमी के पीछे खड़ा हुआ पाया। पेपा गौर से बर्तेल के घायल चेहरे को देखती है ; यह वह जानती है कि बर्तेल क्यों पकड़ा गया था और बर्तेल मन ही मन वह दृश्य दुहरा जाता है, जब पेपा ने जेलर साहब पर झपट्टा मारकर, पागल की तरह स्पेनिश भाषा में सूअर का बच्चा चिल्लाते हुए उसके मुँह से सीटी छीन ली थी। उसे अचरज हुआ था कि वह स्पेनिश कैसे जानती है, क्योंकि वह यह भूल गया था कि पिरेनीज के इस छोर पर स्पेन और केटेलोनिया के लोग भी रहते हैं। वे दोनों एक दूसरे को देखते हैं। यकायक पेपा ने उसे यों आँख मारा, जैसे वह उसका पुराना साथी हो...डब्बे का

दूध लेकर बर्तेल अपने विचारों में मग्न, कैम्प के धूल से भरे हुए हाते में होता हुआ बारक की ओर जाता है। यकायक पेपा ने उसके कन्धे को छुआ। 'तुम अपना दूध भूले जा रहे हो' पेपा ने कहा और जब बर्तेल हिचकिचाया तो उसने धीरे से जोड़ दिया: 'मैं दे रही हूँ, तुमको। नमस्ते।' और वापस रसोई की ओर दौड़ती हुई चली गयी।

बर्तेल के लौट आने पर जब किकी खुशी के मारे पागल होकर उछला-कूदा था, तब से उसकी हालत काफी खराब हो गयी है। वह बिलकुल खाना नहीं खाता। उसे ताजे दूध की जरूरत होती है। जानवरों के डाक्टर की जरूरत है। चोट में से बहुत तेज बदबूदार मवाद आने लगी है। बर्तेल को इस बात की अनुमति मिल जाती है कि वह पेपा को हम लोगों के इस षड्यंत्र में साथी बना ले। चूँकि रसोई को रसद पहुँचाना पेपा का ही काम है, इसलिए वह रोजमर्रा के रसद के भीतर छुपाकर किकी के लिए रोज ताजा दूध ले आने के लिए तैयार हो जाती है। वह किकी के मुँह से प्याला लगाती है और बर्तेल उसका सिर ऊपर को उठाता है। वह दो घूँट पी लेता है। लेकिन जल्दी ही थक जाता है। वह दूध पीने से इन्कार कर देता है। इस तरह पेपा और बर्तेल अक्सर उसके सिरहाने बैठे रहते हैं। पहले वे सिर्फ किकी से बात करते हैं, फिर किकी के बारे में बात करने लग जाते हैं और फिर कैम्प और सार्जेन्टों के बारे में बात करने लगते हैं। पेपा अपनी बड़ी बहन मिमी के बारे में बतलाती है कि उसको हमारी माँ ठेल-ठेलकर अफसरों के पास शाम गुजारने के लिए भेजती है जिसमें वे माँ को कैंटीन चलाने दें। पेपा ने उसको यह भी बतलाया कि कैसे एक बार सार्जेन्टों ने सन्तरी के कमरे में उसे बेआबरू करने की कोशिश की, लेकिन कैसे उसने एक सार्जेन्ट के मुँह पर तमाचा मारा और दूसरे के अँगूठे को इस बुरी तरह काटा कि वह दर्द के मारे हाय-तोबा करने लगा। वह बर्तेल से स्पेन के बारे में जोर देकर पूछती है। पिरेनीज के उस पार अब भी पेपा के कुछ रिश्ते-

दार रहते हैं। नौजवान बर्तेल ने लड़ाई लड़ी है उसके लोगों के लिए, उन लोगों के लिए जिनकी बोली वह बोलती है, जिनकी बोली बर्तेल भी समझता है। वह स्पेन के लिए आखिर क्यों लड़ा? बर्तेल उसको बतलाता है कि कैसे तीन साल पहले उसने चुपके से अपनी माँ के घर से निकल जाने की कोशिश की थी। (पिता प्रथम महायुद्ध में मारा गया था। वह अपने माँ बाप का अकेला लड़का था।) लेकिन जब माँ ने आवाज सुनी तो वह दरवाजे की ओर दौड़ी, उसके सामने अपने घुटनों के बल गिर पड़ी...खींचकर छाती से लगाया और चिरौरी-बिनती की; थप्पड़ भी मारा और चूमा भी, लेकिन तब भी वह पगहा तुड़ाकर भाग ही निकला। बहुत-सी सरहदें पार करनी पड़ीं; लेकिन उसने इस बात का पक्का संकल्प कर लिया था कि स्पेन की जनता के साथ मिलकर उनकी आजादी के लिए लड़ेगा। और फिर पराजय के बाद उसे जनवरी १९३९ में सेंट सिप्रियाँ में कँटीले तारों में बंदी बना दिया गया और फिर दूसरे कैम्प में उसी तरह के कँटीले तारों में; और फिर अन्त में यहाँ—इन कँटीले तारों में।

'और तुम्हारी माँ तुमको क्या लिखती है?'

बर्तेल खामोश रहता है।

'तुमने उसको चिट्ठी नहीं लिखी क्या?'

'क्यों नहीं, जरूर लिखी।'

'क्या उसने जवाब नहीं दिया?'

'हो सकता है, उसे मेरी चिट्ठियाँ मिली ही न हों।'

पेपा उसका हाथ अपने हाथ में ले लेती है। बर्तेल उसकी ओर देखने लगता है। उसकी बड़ी-बड़ी कजरारी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। वह कहती है 'बेचारा बच्चा!' गोकि वह खुद बर्तेल से भी छोटी है। बर्तेल बड़ी उलझन महसूस करता है, अपना रूमाल निकालता है और उसके आँसू पोंछ देता है। किकी बीच में घुस आता है। वह बड़े आहिस्ते से बर्तेल को अपनी थूथन से स्पर्श करता है। मुमकिन है उसे बर्तेल से ईर्ष्या होती हो, मुमकिन है उसे लगता हो

कि बर्तेल अपनी शान जमाने के लिए इस तरह पेपा के आँसू पोंछता है।

× × × ×

इसके बाद से बर्तेल और पेपा नियमपूर्वक किकी के सिरहाने मिलने लगे। जानवरों का कोई डॉक्टर नहीं मिलता ; सब के सब मोर्चे पर चले गये हैं। एक बार पेपा बर्तेल से कहती है : क्या तुम अपने को आजाद देखना न चाहोगे ? मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूँ। मैं एक संतरी को जानती हूँ, अगर मैं उससे प्यार के साथ हँसकर बोलूँ तो वह जरूर तुम्हें रात को छोड़ देगा। बर्तेल उससे कहता है कि वह अकेले नहीं मुक्त होना चाहता, कि मुक्त होने न होने का निश्चय उसके हाथ में नहीं है। पेपा उस संतरी से प्यार के साथ हँसकर बोले यह उससे बर्दाश्त न होगा ; उसके नाक का भुर्ता बना डालना ही उसके लिए आसान होगा।

'दो दिन के तो हैं अभी, उसकी नाक का भुर्ता बनाने का सपना देखते हैं !' पेपा हँसती है और बर्तेल का मुँह चूम लेती है क्योंकि वह उसे अच्छा लगता है और बर्तेल इन्कार नहीं करता। किकी धीरे-धीरे 'गूँ गूँ' करता है। इस बात से वह खुश है, यह साफ है। लेकिन इस धीमी आवाज से भी उसे दर्द होता है। और तब भी उस दिन झण्डा-भिवादन के समय उसने किस जोश के साथ गाया था।

पेपा जिद करती है, 'मेरी समझ में नहीं आता कि अगर तुम्हें भागने का मौका मिलता है तो तुम भाग क्यों नहीं जाते ?'

बर्तेल अपने नन्हें दोस्त को समझाता है कि साथी का क्या धर्म होता है, एकता क्या चीज होती है, स्वेच्छा से स्वीकार किये गये अनुशासन का क्या महत्व होता है।

आइए, अब थोड़ी देर को मान लें कि यह चीज एक कैम्प में नहीं बल्कि अनेक फ्रांसीसी कैम्पों में हुई—मैं स्वयं पाँच कैम्पों में रह चुका हूँ ; आइए यह भी मान लें कि न कहीं पेपा थी और न कहीं बर्तेल ! और बर्तेल और पेपा तो बरसों से फ्रांस से बाहर हैं, और यह सारी

कहानी केवल मनगढ़ंत किस्सा है। लेकिन तब भी यह चीज बीसियों बार हुई है। तुम मेरी बात समझते हो न! अच्छा, अब संक्षेप में किकी की कहानी खत्म कर दूँ।

पेपा को किसी जानवरों के डॉक्टर की तलाश में, जो किकी की छाती के घाव की कुछ दवा दे सके, शहर जाना पड़ता है। हम इस अवसर का लाभ उठाकर उसके हाथ अपने खत भेजते हैं। बर्तेल कहता है कि हमें यह बात साफ तौर पर पेपा को समझा देनी चाहिए कि मार्शल लॉ लगा हुआ है और जो काम वह करने जा रही है, उसमें खतरा है। पेपा कहती है कि अगर जरूरत पड़े तो वह और भी बड़ा खतरा उठाने के लिए तैयार है। दो दिन में हमें पेपा के हाथ अपने खतों के जवाब मिल जाते हैं। पेपा बहुत बहादुर और समझदार लड़की है। उस पर भरोसा किया जा सकता है। वह हमारी दोस्त है। यह दोस्ती तब और भी गहरी हो जाती है जब किकी आखिरी साँस लेता हुआ पड़ा रहता है।

हम आठ आदमी उस लकड़ी के तंग शेड में रात के वक्त खड़े रहते हैं। बर्तेल किकी को गोद में लिये हुए है। वह उसके मुँह से ठंडी चाय लगाता है। किकी उसे जरा-सा चाट लेता है। वह बहुत कमजोर है। वह हम सबको देखता है, लेकिन स्पष्ट है कि वह अप्रसन्न है। उसे किसी की कमी खटक रही है। अलेक बर्तेल की तरफ मुड़कर कहता है: 'इसको मुझे दे दो; वह तुम्हें देखना चाहता है।' बर्तेल बड़ी सावधानी से उस मरते हुए कुत्ते को अलेक को थमा देता है, फिर किकी के सामने खड़े होकर उसकी वियेना की बोली में बोलता है: 'मेरा किकी कहाँ है? हमारा कुत्ता कहाँ है? मेरा सबसे अच्छा दोस्त कहाँ है?' और किकी इस दोस्त को पहचान लेता है; अब वह दुम हिलाने में असमर्थ है; लेकिन वह साफ तौर पर अपने ऊपरी ओठों को सिकोड़ता है और उसके सफेद दाँत चमकते हैं। किकी आखिरी बार हँसता है। फिर वह अपनी समझदार, खूबसूरत, भूरी आँखें बन्द कर लेता है।

अलेक कहता है : 'किकी, मैं तुम्हें इस बात का वचन देता हूँ कि तुम्हारी गिनती भी शहीदों में की जायगी।'

रात भर बारक के सभी लोग किकी से आखिरी बार मिलते हैं। पाँच-दस आदमियों की टोलियाँ रात भर जेल के अँधेरे हाते को पार करती रहती हैं। बहुतों के मन में यही बात उठती है जो अलेक के मन में उठी थी। आधी रात तक सभी लोग जागते रहते हैं और किकी के बारे में, अपने मृत साथी के बारे में बात करते रहते हैं।

पेपा को दूसरे दिन दोपहर को किकी के मरने की खबर मालूम होती है। रात के वक्त वह कँटीले तारों के उस पार आकर खड़ी हो जाती है। हम उसके पास एक छोटी-सी बोरी फेंक देते हैं।

पेपा ने किकी को खुली हुई, आजाद धरती के भीतर दफन कर दिया है। उसने हमें वचन दिया है कि वह एक रोज हमें उसकी कब्र दिखलायेगी।

कहानियाँ पढ़ चुकने पर*—

इस संग्रह की सभी कहानियाँ यों ही फुटकर रूप में '३९ से लेकर '४७ तक समय समय पर अनूदित और प्रकाशित हुई थीं। इसलिए पुस्तक में कहानियों के चयन की कोई योजना ढूँढ़ना व्यर्थ होगा। दृष्टिकोण की एकता किसी हद तक जरूर मिलेगी। मगर ये तमाम बातें बेकार हैं अगर ये कहानियाँ ऊँचे पाये की नहीं हैं, और इस सवाल का जवाब मैंने तो इनका अनुवाद करके ही दे दिया है, अब कहानी पढ़ चुकने के बाद आपकी बारी है।

'दलदल' 'श्वेत मां' और 'खरगोश' इन तीन कहानियों को छोड़कर बाकी सब फासिस्त-विरोधी हैं। 'सड़क की लम्बाई' की कथावस्तु प्रजातांत्रिक स्पेन की फ्रैंको-विरोधी लड़ाई से ली गयी है। 'यन्त्रणागृह' में फासिज्म के गढ़ जर्मनी की एक छोटी सी तसवीर अर्न्स्ट टोलर ने दी है जिसकी किताबों पर हिटलर ने रोक लगा दी थी और जिसे ऐसा साहित्य रचने के 'अपराध' में ही अपने देश से निर्वासित होना पड़ा और बाद में फासिस्त दस्युओं के हाथ प्राण गंवाना पड़ा। 'नूतन आलोक' और 'चचा की गाय' की पृष्ठभूमि जापानी अभियान के प्रतिरोध में रत चीन है। 'अन्तिम घड़ी' अमेरिका के प्रगतिशील, साम्यवादी पत्र 'न्यू मासेज' से ली गयी है। बाकी सब सोवियत कहानियों के कई संग्रहों से ली गयी हैं।

अब एक स्वाभाविक सा प्रश्न यह उठ सकता है कि ये तो युद्ध की कहानियाँ हैं, अब युद्ध समाप्त हो जाने पर इन्हें प्रकाशित करने में अनुवादक का क्या प्रयोजन है? इसी प्रश्न पर मुझे कुछ कहना है।

पहली बात तो यह कि हिटलर का अन्त हो जाने पर भी फासिज्म का अन्त नहीं हुआ है। ऐसी दशा में जनता का फासिस्त-विरोधी संग्राम न रुका है और न रुक सकता ही है। साम्राज्यवादी समाचार पत्रों तक से यह बात साफ है कि जर्मनी में और दूसरी जगहों पर फासिज्म को फिर से जिलाने के लिए ब्रिटिश और अमेरिकन साम्राज्यवाद की ओर से अन्तरराष्ट्रीय षड्यन्त्रों का जाल बिछाया जा रहा है। जिन आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों में फासिज्म का जन्म होता है, वे काफी हद तक अब भी वर्तमान हैं। दूर क्यों जाइए, यहीं अपने देश में जब हम क्रान्तिकारी मजदूरों, किसानों, रियासती प्रजा और विद्यार्थियों पर होनेवाले पाशविक अत्याचारों पर नजर डालते हैं तो हमें उसमें ब्रिटेन की फासिस्त औपनिवेशिक नीति साफ दिखलायी पड़ती है। इसलिए कहा जा सकता है कि इन कहानियों की रचना के मूल में अगर किसी तात्कालिक आवश्यकता की प्रेरणा थी, तो वह तात्कालिक आवश्यकता आज भी है, अन्तर केवल इतना है कि राक्षस का चोला दूसरा है, और वह कुछ भिन्न रूप धरकर आया है! मगर रूप के मोह में पड़ने का अर्थ विनाश होगा।

मगर यह प्रयोजन बड़ा होते हुए भी गौण है। मुख्य प्रयोजन यह है कि इन जबर्दस्त कहानियों को मुझे आपके सामने रखना ही था। कहानियाँ आप पढ़ ही चुके हैं। मुझे यकीन है कि आप मेरी बात की ताईद करेंगे। इन कहानियों को जबर्दस्त कहने से मेरा मतलब यही है कि इनमें वस्तु सत्य और अनुभूति और कला का अपूर्व सामंजस्य है जिसके कारण ही इनमें वह स्थायित्व आ सका है जो इसी प्रकार के अन्य बहुत से साहित्य में नहीं है। एक और चीज जो मेरी समझ में इन्हें स्थायित्व देती है, इनका नया विश्वदर्शन है। 'उसका एकलौता बेटा', 'एक सर्बियन गाथा', 'जिन्दगी' आदि कहानियों का रस अपने अन्दर भिदने दीजिए तो आपको उनमें एक नयी दुनिया दिखायी देगी—स्नेह के कुछ नये मान, भावगांभीर्य की नयी क्रान्तिकारी इकाइयाँ, कर्तव्य और मोह के चिरन्तन द्वंद्व का क्रान्तिकारी समाधान, सामान्य से कुछ

ऊँचे धरातल पर उठे हुए मानव सम्बन्ध। यही मेरी समझ में इन कहानियों का बिलकुल नया, क्रान्तिकारी, स्थायी तत्व है जो कभी किसी काल में बासी न होगा।

'उनका झंडा' कहानी को छोड़कर जो बम्बई से निकलनेवाले कम्युनिस्ट साप्ताहिक 'लोकयुद्ध' में छपी थी, शेष सभी 'हंस' में छपी थीं और उन्हें इस संग्रह में शामिल करने के लिए मैं किसे धन्यवाद दूँ, मेरी समझ में नहीं आता!

मन के अनुकूल, प्रिय रचना का अनुवाद करने में रस बहुत आता है, लगभग मौलिक रचना के बराबर ही, इसमें सन्देह नहीं। मगर इससे काम की कठिनाई में कोई अन्तर नहीं आता। अनुवाद अगर कहीं ऐसा ऊबड़खाबड़ नहीं हो गया है कि उससे आपके रसबोध में बाधा पड़े तो मैं समझूँगा कि अनुवाद सफल रहा। सभी अनुवाद अंग्रेजी से किये गये हैं।

हमें इस बात का दुःख है कि हम 'अन्तिम घड़ी' 'किकी' और 'एक सर्बियन गाथा' के लेखकों का परिचय नहीं दे पाये। बहुत खोजने पर भी इनके जीवन और साहित्य संबंधी बातें नहीं मिलीं। 'अन्तिम घड़ी' अमरीका के साम्यवादी साप्ताहिक पत्र 'न्यू मासेज़' — से लिया गया; 'एक सर्बियन गाथा' मास्को से प्रकाशित होनेवाले मासिक पत्र 'इंटरनैशनल लिटरेचर' से और 'किकी' फ्रीड्रिक वुल्फ के संग्रह 'कान्सेंट्रेशन कैंप' से जो मास्को से प्रकाशित हुआ है। पढ़ने पर रचनाएँ अनुवाद के योग्य लगीं और उनका अनुवाद कर लिया गया, मगर जब परिचय की आवश्यकता पड़ने पर परिचय की खोज-ढूँढ़ की गयी तो वह कहीं उपलब्ध न हुआ। बेला बलाज़ की रचनाएँ कभी कभी 'इंटरनैशनल लिटरेचर' में दिखायी दे जाती हैं, मगर उसका परिचय कभी संग में नहीं रहता। फ्रीड्रिक वुल्फ जर्मन क्रान्तिकारी लेखक है जो अपने देश से निर्वासित होकर मास्को में रहने लगा। पुस्तक के अगले संस्करण में (अगर उसकी आवश्यकता पड़ी!) हम इन लेखकों का और पूर्ण परिचय दे सकने की आशा रखते हैं।